(५) गढ़वाली भाषा के 'पखाणा' (कहावतें)

[लेखक—श्री शालिग्राम वैष्णव, कर्णप्रयाग, गढ़वाल]

प्रस्तावना

किसी भी भाषा की कहावतें उस भाषा तथा उसके भाषियों की अमूल्य निधि हैं। क्योंकि समस्त जाति के व्यावहारिक अनुभवों का सार खिंचकर कहावतों में आ जाता है। जीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं जो भाषा के मंदिर में लोकोक्तियों की भेंट न चढ़ा जाता हो। जीवन-व्यापार से संबंध रखनेवाले विशेष कौशलों से सबकी जानकारी नहीं हो सकती। परंतु जीवन-व्यापार के प्रत्येक विभाग में विशेष कौशलों से भिन्न बहुत से ऐसे अनुभव भी प्राप्त होते रहते हैं जो सर्वसाधारण की मानसिक सत्ता के अंग होकर उसकी संपन्नता को बढ़ा सकते हैं। ये ही अनुभव कहावतों का रूप धारण करते हैं।

लोकानुभव प्रायः घटना-मूलक होता है। कोई घटना घटित होती है और हमें अनुभव दे जाती है। हम देख पाएँ, चाहे न देख पाएँ, मानव जाति के प्रत्येक अनुभव के पीछे कोई घटना अवश्य छिपी होती है। इसलिये प्रत्येक कहावत के पीछे भी एक छोटी-मोटी कहानी छिपी रहती है, जिसका वह संकेत देती है। यही कारण है कि कहावत को गढ़वाली भाषा में 'अखाणो*' या 'पखाणो*' (—एकवचन; ब० व०—'अखाणा',

* गढ़वाली भाषा अधिकतर 'ओ-कार'-बहुला है। इस संबंध में ब्रज-भाषा से उसका मेल है। यह ओ-कार-बहुलता उसे राजस्थानी से दान में मिली है।

'पखाणा') कहते हैं। अखाणो आख्यान से बना है और पखाणो उपाख्यान से।

परंतु घटना-मूलक होने पर भी कहावत 'कहावत' है। हर घड़ी की बातचीत में अथवा साहित्यिक रचनाओं में पद पद पर सारी कहानी बार बार नहीं दुहराई जा सकती। हाँ कहावत के द्वारा उसका संकेत दे दिया जा सकता है। इसी से गढ़वाली भाषा में कहावत को 'आणो*' (एकवचन; ब० व०—'आणा') तथा संस्कृत में आभाणक कहते हैं। आणो और आभाणक एक ही हैं। आभाणक ही आणो हो गया है। (आभाणक, आहाणअ, आआणअ, आणा+ओ, आणो।) इसमें मूल धातु भण् है जिसका अर्थ होता है 'कहना'।

परंतु यह कहना होना चाहिए चतुराई भरा हुआ। अनुभव तो बहुत आदमियों को हो सकता है परंतु उसे कहावत बनाता है किसी एक वाक्यपटु का चतुराई भरा कहना (उक्ति-चातुर्य) ही। लार्ड रसेल ने इसी अर्थ में कहावत को 'बहुतों की बुद्धिमानी और एक की चतुराई' ('दि विज़्डम ऑव मैनी एंड दि विट् ऑव् वन्') कहा था। सब की संपत्ति बनने योग्य कोई लोकानुभव अथवा लौकिक सत्य जब किसी एक व्यक्ति की चतुरता से सबको आकर्षित कर सकनेवाला रूप प्राप्त कर लेता है, तब कहावत का जन्म होता है। बिना चटपटेपन के कहावत कहावत नहीं। उक्ति की चतुराई ही कहावत को चटपटी बनाती है। कहावत का एक बार जन्म हो जाने पर चटपटापन ही उसे चलता बनाए रखता है। सुननेवाले उचित अवसर आने पर उसे फिर फिर व्यवहार करने की इच्छा करते हैं और कहावत चल पड़ती है। नई नई कहावतें बराबर पैदा होती रहती हैं।

जन्म हो जाने पर भी कहावत का नामकरण तब तक नहीं हो सकता जब तक वह चल नहीं पड़ती। किसी उक्ति में अनुभव भरा है, वह चटपटी भी है, परंतु हो सकता है कि वह लोगों की आँखों में न आई, अथवा कानों में न पड़ी हो, और इस कारण उसका प्रचार न हुआ हो। ऐसी दशा में वह कहावत न कहायगी क्योंकि कहावत उक्ति मात्र नहीं है, लोक की उक्ति है, इसी से उसे 'लोकोक्ति' कहते हैं। कहावत एक आदमी के कहने से नहीं होती, लोक के स्वीकार करने से, लोक में प्रचार पाने से होती है। जब तक लोग उसे **प्रायः बोलने नहीं लगते** तब तक वह कहावत लोकोक्ति अथवा प्रायोवाद नहीं कही जा सकती। संस्कृत के 'प्रायोवाद'[१] का जो अभिप्राय है, वही अँगरेजी के 'प्रौ-वर्ब'[२] का।

इसके अतिरिक्त कहावत स्वभावतया छोटी होती है। इससे उसको लोगों की जबान पर चढ़ने में आसानी होती है। भारी भरकम वाक्यों को याद रखना कठिन होता है। इसीसे छोटी छोटी उक्तियाँ ही कहावतों का स्थान प्राप्त कर सकती हैं। चटपटेपन के योग में कहावत का छोटापन (लाघव) उसके सारे प्रभाव को एकमुख कर उसे नुकीला बना देता है, वह चुभनेवाली हो जाती है। समझाने के जिस ढङ्ग में बातों का विस्तार होता है, उसमें प्रभाव भी फैलकर निर्बल पड़ जाता है। इसलिए उसमें की बातें बहुधा चिकने घड़े पर पड़ती हैं। बड़ी बड़ी बातों को सुनने-पढ़ने के लिये आदमी सचेत होकर जाता है। यह सचेतनता भी उनके प्रभाव में बाधक होती है। परंतु कहावत अचानक

(१) संस्कृत में प्रवाद भी इस अर्थ में प्रयुक्त होता है, किंतु हिंदी में वह दूसरे अर्थ में रूढ़ हो गया है।

(२) Pro-verb.

अप्रत्याशित रूप से आती है और अपना काम कर जाती है। व्याख्यान और उपदेशों की रमणीयता तथा उनके प्रभाव को कहावत बढ़ा देती है।

उक्ति का एक रमणीय स्वरूप दूसरा भी है जिसे सूक्ति अथवा सुभाषित कहते हैं। लोकोक्ति को समझने के लिये सूक्ति और उसका भेद समझना आवश्यक है। सूक्ति चमत्कार-भरी उक्ति को कहते हैं। सूक्तियाँ अधिकतर पद्य में ढूँढ़ी जाती हैं। इसका कारण यही है कि हमारा प्राचीन साहित्य प्राय: पद्य में ही है परंतु पद्यमय होना सूक्ति का आवश्यक गुण नहीं है। गद्य में भी सूक्तियाँ हो सकती हैं और होती हैं। सूक्ति में गद्य और पद्य का भेद नहीं मानना चाहिए। सूक्ति का चमत्कार-भरा होना ही काफी है। इससे आगे बढ़कर उसमें लोकानुभव भी हो सकता है, परंतु उसका होना आवश्यक नहीं। जिन सूक्तियों में चमत्कार के साथ साथ लोकानुभव भी रहता है, वे कहावत बन सकती हैं। कवियों तथा लेखकों की कई लोकानुभवमयी सूक्तियाँ कहावत हो जाती हैं। मेघदूत के कई श्लोकों के अंतिम चरण कहावतों की भाँति काम आते हैं। किंतु प्रत्येक सूक्ति कहावत नहीं कही जा सकती।

संक्षेप में, कहावत छोटी, अर्थभरी, चटपटी और सर्वप्रिय होती है। इसी बात को अँगरेजी में अपने चुटीले ढंग से कहते हुए हावेल ने कहा है कि, कहावत की विशेषताएँ हैं 'छोटापन, अर्थ और नमक' ('लाघव, सार्थकता और लावण्य'—'शार्ट्नेस, सेंस्, ऐंड् साल्ट्')*। इन्हीं गुणों के कारण वह सर्वप्रिय भी होती है।

---

* 'Shortness, sense and salt.'

सालनों में जो काम मसाले का होता है, साहित्य में वही काम कहावत का है। गढ़वाली मुहावरे का प्रयोग करें तो कह सकते हैं कि कहावत बातचीत तथा साहित्य का 'तुड़का' (तड़का) है जो बहुत थोड़े परिमाण में प्रयुक्त होने पर भी व्यंजनों को विशेष रुचिकर बना देता है।

साहित्य के उत्कर्ष के लिये उसके चटपटेपन को बढ़ानेवाली इस सामग्री के संग्रह का महत्त्व स्पष्ट है। सुभाषित और कहावत में कुछ अंतर होने पर भी सुभाषित के संबंध में निम्नलिखित श्लोक में जो कुछ कहा गया है, वह कहावत के संबंध में भी बहुत कुछ सत्य है—

खिन्नं चापि सुभाषितेन रमते स्वीयं मनः सर्वदा
श्रुत्वान्यस्य सुभाषितं खलु मनः श्रोतुं पुनर्वांछति ॥
अज्ञाञ्ज्ञानवतोऽप्यनेन हि वशीकर्तुं समर्थो भवेत्
कर्तव्यो हि सुभाषितस्य मनुजैरावश्यकः संग्रहः ॥

गढ़वाली भाषा की कहावतों के संबंध में यह महत्त्वपूर्ण कार्य विद्वद्वर श्रीयुक्त पंडित शालग्रामजी वैष्णव ने किया है। सरकारी नौकरी के सिलसिले में वैष्णवजी को गढ़वाल के कोने कोने में जाने का अवसर मिला है जिसका उन्होंने नाना प्रकार से सदुपयोग किया है। अपनी धार्मिक प्रवृत्तियों के बीच साहित्यिक कृतियों के लिये भी वे समय निकालते रहे हैं, यह सौभाग्य की बात है।

गढ़वाली भाषा की कहावतों का संग्रह एक दूसरी दृष्टि से भी आवश्यक है। गढ़वाली अबाध गति से बदल रही है। यदि परिवर्तन की यही द्रुत गति रही तो एक दिन ऐसा आवेगा जब केवल ढाँचा भर गढ़वाली रह जायगा और रूप सब तत्सम (संस्कृत) के आजायेंगे। अतएव गढ़वाली की ही रक्षा की दृष्टि से नहीं, बल्कि भाषा-विज्ञान की दृष्टि से भी यह आवश्यक

से वह काम बिगड़ता चला जाय, अथवा कोई विद्यार्थी पीछे का पढ़ा हुआ भूल जाय और आगे पढ़ता जाय।

अगनैं[1] की सुछयाली[2] लूगीक[3] पिछनैं[4] ही औंदी[5] [१ आगे, २ जलती हुई लकड़ी, ३ जलकर, ४ पीछे ही, ५ आती है] प्र०—जहाँ कहीं कोई किसी के साथ बुरा व्यवहार करनेवाले पर दूसरा आकर वैसा ही व्यवहार करे।

अगाणा[1] निछोड़नो सामल[2], वीदा[3] नी छोड़णो कामल[4]। [१ भरे हुए पेट, २ भोजन-सामग्री, सम्बल, ३ बिना वर्षा के दिन, ४ कंबल] प्र०—आनेवाली कठिनाई को रोकने के लिये पहले से यत्न करनेवाले पर।

अजाण की पूजा सजाण मानी। प्र०—ग्राम-देवताओं को पूजने का मंत्र, अथवा किसी शिष्ट पुरुष के आतिथ्य के बाद क्षमा-प्रार्थना पर।

अठारा माथ[1] दौ नी[2], माणा[3] माथ गौंनी। [१ ऊपर, २ दाव नहीं, ३ बदरीनाथ से आगे गढ़वाल की अंतिम सीमा पर बसे हुए एक गाँव का नाम] प्र०—जब किसी काम का प्रयत्न चरम सीमा को पहुँच जाय।

अडसारा[1] तिकड़ो[2] टूटद। [१ सहारा, २ कमर] प्र०—अपने करने का काम किसी और के सुपुर्द करने पर जब वह काम बिगड़ने लगता है।

अड़ै[1] अड़ै फुंडो[2] प.ल्यै[3] प.ल्यै खुंडो[4]। [१ शिक्षा देते देते, २ उधर, ३ धार को तेज करने के लिये घिसना, ४ कुंठित] प्र०—जहाँ कहीं सुधार का प्रयत्न व्यर्थ जाने लगता है।

---

* समानार्थी श्लोक—अतिदानाद्बलिर्बद्धो अतिगर्वाच्च रावणः। अतिरूपवती सीता अति सर्वत्र वर्जयेत्॥ भावार्थ—अति दान देनेवाला राजा बलि

अणी मणी तीन झणी[1]। [१ जन, मनुष्य-स्त्री-वाचक] प्र०—जहाँ कहीं काम करनेवालों की संख्या दो-तीन या ऐसी ही कुछ हो अर्थात् अधिक न हो।

अती लाड़[1], **बड़ी खाड़**[2]। [१ प्यार, २ खड्ड] प्र०—मामूल से अधिक प्यार या प्रयत्न के निष्फल होने पर।

* **अत्ती**[1] **जौ**[2] **खत्ती**[3]। [बहुत ज्यादे, २ जाता है, ३ बिखरना] प्र०—जहाँ कहीं मामूली से ज्यादा कोई काम करने पर हानि होती है।

अदोखा[1] **दोख**[2], **गती न**[3] **मोख**[4]। [१ निर्दोष, २ दोष, कसूर, ३ सुगति नहीं मिलती, ४ मोक्ष नहीं होता] प्र०—निर्दोष पर झूठा कलंक या कसूर लगानेवाले की निंदा करते हुए।

* **अन्न नमान्**[1] **खाणो वस्तर नमान् लाणो**। [१ मात्र] प्र०—सादा जीवन व्यतीत करने के लिये।

अपणा खैड़ा[1] **को साँस**[2]। [१ खाल, २ श्वास, वायु] प्र०—अपनी सम्मति देते हुए जब दूसरा उसे मानने को तैयार नहीं होता है।

अपणा गिच्चै की[1] **बौराण**[2]। [१ मुँह की, २ बड़ी रानी] प्र०—जहाँ कोई अपने मुँह अपनी प्रशंसा करे।

बाँधा गया, अति गर्व करनेवाला रावण मारा गया, अति रूपवती सीताजी हरी गई, इस कारण अति को सर्वदा त्यागना चाहिए।

सम-वाक्य—अति का भला न बरसना अति की भली न धुप्प। अति का भला न बोलना अति की भली न चुप्प ॥—कबीर।

* समानार्थी पद—गर उसने उढ़ाया तो लिया ओढ़ दुशाला, कंबल जो दिया तो वही कंधे पै है डाला। चादर जो उढ़ाई तो वही हो गई बाला, बँधवाई लँगोटी तो वही हँस के सँभाला। पोशाक में, दस्तार में, रूमाल में, खुश हैं, पूरे हैं वही मर्द, जो हर हाल में ख़ुश हैं ॥—नजीर।

अपणा गोरू[1] **को सी मर्यूं**[2] **।** [१ गाय, २ मारा हुआ, जख्म किया हुआ] प्र०—जो अपनी भूल से होती हुई हानि को सह लेता है।

अपणा पल्ला अफू आफत बाँधणी । प्र०—जो आप ही अपने को फँसानेवाला काम करे उस पर।

* **अपणा खुट्टा**[1] **अफुई**[2] **कुल्हाड़ी ।** [१ पैर, २ आप ही] प्र०—ऊपर के समान।

अपणा बल्दौ,[1] **घैनो सिंग ।** [१ बैल का] प्र०—अपनी ओर के किसी भी व्यक्ति की सफलता पर प्रसन्नता प्रकट करते हुए।

अपणा का मन्न[1] **ते मीत कोही मन्नो भलो ।** [१ मरना] प्र०—ऐसे संकीर्ण विचारवाले लोगों की निंदा पर जो अपने स्वार्थ के लिये मित्रों के स्वार्थ को लात मार देते हैं।

अपणी अक्कल और विराणो[1] **धन क्वै**[2] **कम नी समझद ।** [१ दूसरे का, २ कोई भी] प्र०—जब कोई अपनी अक्ल को और पराए धन को अधिक ही समझे।

अपणी इज्जत अपणा हाथ । प्र०—किसी ओछे मनुष्य से तकरार न करने के लिये।

† **अपणी करणी पार उतरणी ।** प्र०—भले-बुरे किए हुए का फल भोगना पड़ता है इस पर।

अपणी कौण्यू[1]**, पिठलो**[2] **।** [१ कगुनी का, २ पिसान, आटा] प्र०—अपने परिश्रम से थोड़ा बहुत जो कुछ मिल जाय उस पर संतोष करने के लिये।

---

* आप अकारज आपनो करत कुसंगति साथ, पाँव कुल्हाड़ी देत है मूरख अपने हाथ ॥—वृंद।

† समानार्थी पद्य—जो पार उतारे औरों को उसकी भी नाव उतरती है। जो गर्क करे फिर उसकी भी यों डुबकों डुबकों करती है। शमशेर बबर बंदूक सना और नश्तर तीर नहरनी है, जो जैसी-तैसी करनी है फिर वैसी पार उतरनी है॥—नजीर।

अपणी गंगा, क्वै उँदो[1] न्हौ[2] उबो[3] न्हौ। [१ नीचे, २ नहावे, ३ ऊपर] प्र०—जहाँ किसी दूसरे को कोई ऐसा काम करते हुए देखे जो अपनी पसंद का न हो पर उसे उस काम से रोकने का स्वयं कुछ प्रयत्न न करे।

* **अपणी खाट देखीक खुट्टा[1] पसारना।** [१ पैर] प्र०—अपने सामर्थ्यानुसार काम करने की शिक्षा देते हुए।

अपणी खै[1] विराणी[2] अखै[3]। [१ खाना अर्थात् सुख भोगना, २ पराई, ३ अखै अर्थात् दुख भोगना] प्र०—जहाँ कोई पराया नुकसान करके लाभ उठावे।

अपणी चाडी[1] को गधाकू जुहार[2]। [१ गरज, २ प्रणाम] प्र०—जहाँ कोई गरज पड़ने पर नीच की प्रशंसा वा खुशामद करे।

† **अपणी चीज पराया की भैंदी[1]।** [१ अधिकार में] प्र०—जहाँ अपनी वस्तु दूसरे के अधिकार में होने के कारण समय पर अपने काम न आवे।

अपणी जाँघ कन्यैक[1] फूरी[2]। [१ खुजलाकर, २ सफेद] प्र०—जहाँ कोई अपनी उस गुप्त बात को, जिसके प्रकट होने पर लज्जित होना पड़े, प्रकट कर देता है।

अपणी डफड़ी अपणो राग। प्र०—जहाँ लोगों में ऐकमत्य न हो सके।

‡ **अपणी डेली[1] कुकूर[2] सैंक[3]।** [१ दर्वाजे, २ कुत्ता, ३ सामर्थ्यवान्] प्र०—जहाँ कोई अपने घर पर दूसरे का निरादर करे।

---

* अपनी पहुँच बिचार के करतब करिए दौर।
तेतो पाँव पसारिए जेती लाँबी सौर ॥—वृंद।

† स०—सोई अपनो आपनो रहे निरंतर साथ।
होत परायो आपनो शस्त्र पराए हाथ ॥—वृंद।

‡ एक बार महादेवजी विष्णु भगवान् के समीप बैठे हुए थे। वहाँ पर विष्णु भगवान् के वाहन गरुड़ को देखकर महादेवजी के कंठ में लिपटा हुआ

अपणी त लगौणी बात भी उधारी[१], **बिराणी खोजणी साई**[२] **सुधारीं**[३]। [१ अधूरी, २ सीधी, ३ सुधारी हुई] प्र०—जहाँ कोई अपनी वस्तु देने की बात भी न करने दे और दूसरे की बनी-बनाई वस्तु को चाहे।

अपणी दवाई अपणा काम। प्र०—जहाँ कोई दूसरे को फँसाने का प्रयत्न करते हुए स्वयं फँस जाय।

अपणी पाथीं[१] **पकोड़ी**[२]। [१ पोई हुई, २ बड़े] प्र०—जहाँ किसी को अपनी की हुई बुराइयों का कुफल आप ही भुगतना पड़े।

अपणी पीड़ौ[१], **किरमुलो**[२] **भी चड़ाक**[३] **देंद।** [१ दर्द से, २ चिउँटी, ३ डंक मारना] प्र०—जहाँ बलवान् से सताया हुआ निर्बल अपना बदला ले वहाँ।

अपणी बारी खरी प्यारी। प्र०—अपने भरसक कोई बुरा काम न होने देना और अयश की चिंता न करना, इस नीति पर।

अपणो घर दिल्ली से सूझ[१]। [१ दिखाई देता है] प्र०—कितना ही दूर रहने पर भी अपने घर की सुध नहीं भूलती, इस पर।

अपणो डुंडो[१] **खुट्टो अलसा सूड़े**[२]। [१ लँगड़ा पैर, २ घास के नीचे] प्र०—जहाँ अपनी कमजोरी देखकर तटस्थ ही रहना पड़े।

अपणो दीक[१] **वैर।** [१ देकर] प्र०—जहाँ अपनी उधार दी हुई वस्तु माँगने पर अनरस हो जाय।

सर्प फुफकारे छोड़कर उसे डराने लगा। इस पर गरुड़ कहने लगा—"स्थानं प्रधानं न बलः प्रधानं स्थानबला कापुरुषा वदन्ति। जानामि नागेन्द्र तव प्रभावं कंठच्युता गर्जंति शंकरस्य॥" अर्थात् स्थान की ही प्रधानता होती है न कि बल की। कायर लोग स्थान ही के बल से बकते रहते हैं। हे सर्पराज! तेरे प्रभाव को मैं तब जानूँ जब तू महादेवजी के कंठ से छूटकर भी ऐसी ही गर्जना करे।

अपणो दँदारो[1], कोणो[2] अंध्यारो[3]। [१ देनेवाला, २ कोठरी का कोना, ३ अँधियारा] स०—निशि अँधियारी परसैया अपनो। प्र०—जहाँ कोई सार्वजनिक लाभ पहुँचाने का कार्य ऐसे बेईमान लोगों के अधिकार में हो जो उसकी समुचित व्यवस्था न करके केवल अपने ही लोगों को लाभ पहुँचावें।

अपणो नाक काटिक बिराणो असगुन। प्र०—जहाँ कोई दुश्मन को नुकसान पहुँचाने के लिये अपने नुकसान की कुछ पर्वाह न करे।

*** अपणो पेट कुत्ता भी पाल्द[1]।** [१ पालता है] प्र०—कुछ पुरुषार्थ न कर केवल अपना पेट पालनेवाले पर।

अपणो भलो त बोलनी, बुरो त तको नी[1]। [१ चाहै नहीं] प्र०—अपने हितैषी की कड़वी जबान भी लाभदायक होती है इस पर।

अपणो मारिक[1] भितनै[2], बिराणो[3] मारिक भैनँ[4]। [१ ताड़ना करके, २ भीतर की ओर, ३ पराया, ४ बाहर की ओर] प्र०—बच्चों की ताड़ना पर। स०—माँ मारे माँ ही पुकारे।

अपणो मुंड अफुही नि मुँडेंद। प्र०—जब कभी अपने काम बनाने में अपनी बुद्धि काम न दे।

अपणो सी मुख लीक रैगे[1]। [१ रह गया] प्र०—अपनी गलती पर पछतानेवाले पर।

अपणो हाथ अपणो जगन्नाथ। प्र०—जिसके काम की जाँच करनेवाला कोई न हो उस पर।

अपौंदान[1] पायो, गोजा घालीक[2] खायो। [१ जिसको कोई वस्तु अप्राप्य हो, २ पल्ले के नीचे छिपाकर]

* काकोऽपि जीवति चिरायु बलिं च भुंक्ते। अर्थ—काकबलि से पेट पालता हुआ कौआ भी बहुत दिनों तक जीवित रहता है।

प्र०—खाने की वस्तु पाकर साथियों को न बाँटकर आप ही आप खानेवाले पर।

अपौंदा कू भंगतेज मिट्ठो। प्र०—जिसे अच्छी वस्तु अप्राप्य है वह निकम्मी वस्तु को ही पाकर प्रसन्न हो जाता है इस पर।

* **अफुइ[1] आग लगौ अफुइ पाणिकु दौड़।** [१ आप ही] प्र०—ऐसी कुटिल नीतिवाले पुरुष पर जो आप ही दूसरों में झगड़ा कराकर आप ही मेल कराने का प्रयत्न करे।

अफुइ औतारो[1] अफुइ पुजारो। [१ देवता औतरनेवाला अर्थात् नाचनेवाला] प्र०—जिसके काम की कोई जाँच करनेवाला न हो, आप ही सर्वेसर्वा हो और जो अपने अधिकार का दुरुपयोग करे उस पर।

अफू कोढ़ी गिंजगिंज[1] पाको[2], औरुकु[3] दवै बतौ[4]। [१ गलते हुए कोढ़ से, २ पकता रहे, ३ औरों को, ४ बतावे] प्र०—जो स्वयं बुरा काम करे पर औरों को न करने की शिक्षा दे उस पर। स०—और को नसीहत आप फजीहत।

अफ चौड़ा बाजार सांगुड़ा[1]। [१ संकीर्ण, तंग] प्र०—झूठी शेखी दिखलानेवाले घमंडी पर अथवा किसी से बातचीत करने में अपनी ही तक समझनेवाले अकड़बाज पर।

अफू छारा[1] मां, शेखी घोड़ा मां। [१ राख में] प्र०—किसी दुर्दशा प्राप्त घमंडी पर जिसकी ऐंठ न छूटी हो।

† **अफू भला त जग भलो।** प्र०—भलेमानस की प्रशंसा पर।

---

* बातन सों मोहि रिस उपजाई। पिय सों कहे जु लेउ मनाई॥
ए जाने सो गाथा गावे। आग लगाय के जल को धावे॥

† स०—पिय बोले कैसे नहिं जाउँ। हौं काहू को धरौं न नाउँ॥
मो लखि निधरक करु कोउ छल्ला। आप भले तब सब जग भल्ला॥

अफू मरयां बिना स्वर्ग नि देखेंद। प्र०—जहाँ कोई काम अपने किए बिना न हो सके।

अभागी का पड़्या[1] पाल़ा, काटयाँ[2] माछा लग्या डाल़ा। [१ पल्ले पड़ने से, २ कटी हुई मच्छियाँ, ३ पेड़ में चढ़ गईं] प्र०—जहाँ दुर्भाग्य से सब प्रयत्न विपरीत फल दें।

अभागी कमौलो भागी खालो। प्र०—जहाँ कहीं कंजूस की कमाई को कोई और भोगे।

अल़्सी[1] को कुत्ता मोटो, किसाण[2] को ब.ल्द[3] मोटो। [१ आलसी, २ आलस्य-रहित, खेत में काम करनेवाला, ३ बैल] भावार्थ यह है कि बचा हुआ भोजन आलस्यवाला दरवाजे के सामने आए हुए कुत्ते को दे देता है और आलस्य-रहित मनुष्य गोशाला में ले जाकर बैल को देता है। प्र०—आलसी मनुष्य की निंदा के लिये।

अ.लसी ग्वीर[1] का जरजरा[2] भैं, नेड़ु नेड़ूनि जौं दुरु दुरु जौं। [१ ग्वाला, २ मोटे खरखरे] प्र०—जो मूर्ख काम को बिगड़ता देख शुरू में उसे सुधारने का कुछ उपाय नहीं करता, जब सुधारना कठिन हो जाता है तब उपाय करने लगता है उसकी मूर्खता पर।

अल़्सी रड़्या[1], डेरा पड़्या। [१ फिसल पड़ा, २ डेरा पड़ गया] प्र०—आलसी की निंदा करते हुए।

असमान थेगली[1] लगौंद[2]। [१ पैबंद, २ लगाता है] प्र०—जो झूठ-मूठ बातें बनाकर अपना काम बनाना चाहता है उस पर।

असमान्यू[1] लोटि पड़[2], बड़गान्यूँ भूख मर। [१ जिसकी नजर आस्मान ही पर रहे, रास्ते पर न रहे, २ गिर पड़े, ३ जो भोजन करने में शरमावे, भूख रहते हुए भी न माँगे] प्र०—जहाँ कोई अपनी गलती या लापरवाही से नुकसान उठावे।

असल ते खता नी, कमसल से बंफा नी। प्र०—असल कमअस्ल के गुण दोषों पर।

अस्सी आमद, चौरासी ख़र्च। प्र०—आमदनी से अधिक ख़र्च करनेवाले पर।

अस्वाण्या[1] बुवारी[2] की कुराण्या[3] बाच। [१ ना पसंदीदा, २ बहू, ३ कर्कश, किरकिरी, बे रसीली बोली] प्र०—जहाँ डाह से किसी के सद्गुणों को भी बुरा बताया जाय वहाँ।

आई गई पार उतरी। प्र०—जहाँ कोई काम आरंभ होते पूरा हो जाय और उसमें कुछ करने की गुंजायश शेष न रहे वहाँ पछतावा न करने के लिये।

आई दाढ़ी, बात बिगाड़ी, आई सोच, पडी सोच। प्र०—चिंतारहित बाल्यावस्था के गुजरने और चिंतायुक्त युवावस्था में प्रवेश होने पर।

आऊ को नाऊ, चोर को साहू। प्र०—जहाँ कोई गुण वान् की कदर न करके दुर्गुणी का आदर-सत्कार करे।

आखिर बड़ान बड़ो पछाणे[1]। [१ पहचाना] इसकी मूल कहानी इस प्रकार है कि एक दिन बड़ी सुबह एक धुनवा (रुई धुननेवाला) अपना धनुष कंधे पर डाले एक जंगली रास्ते से जा रहा था। उधर से उसी रास्ते पर एक स्यार आ पहुँचा। उसने धुनवा को शिकारी समझा और डर के मारे काँपता हुआ कहने लगा "काँधे धनुष हाथ में बाना, कहाँ चले दिल्ली सुल्ताना" इसका जवाब धुनवा ने इस प्रकार दिया "बन के राव विकट के राना, आखिर बड़े ने बड़े को पहिचाना"। प्र०—जहाँ कहीं कोई निम्न श्रेणीवाला अपने ही समान किसी दूसरे नीच की बड़ाई और आदर-सत्कार करता दिखाई दे।

***आँख्यू देखी सच्ची, कनड़ू की सूणी झुट्टी।** प्र०—जहाँ सुनी हुई बात पर विश्वास न हो।

ओगड़ा की अडेसी[1] कखळई[2]। [१ ओढ़ना और बिछौना दोनों, २ कहाँ हो सकती है, अर्थात् नहीं हो सकती]। प्र०—जहाँ थोड़ी पूँजी या छोटी वस्तु से बड़ा काम लेने का प्रयत्न किया जाय।

आगाध निजौ वास[1], कौआ नि पै गास[2], तैंगोंकी नि करनी आस। [१ सुगंधि अर्थात् यहाँ यज्ञ की सुगंधि आकाश को न पहुँचे, २ ग्रास अर्थात् वहाँ पित्रों के निमित्त काकबलि न दी जाय। प्र०—जिस घर से कोई कुछ न पावे।

† आँगुली[1] पकड़िक पौंठ[2] पकड़द। [१ अँगुली, २ पहुँचा] जहाँ कोई थोड़ा थोड़ा करके अधिक ले लेता है।

आग फूकीक फिलंगारो[1] पायूँछ। [१ जलता अंगारा] प्र०—जहाँ कोई वस्तु बड़े परिश्रम से हाथ लगे और बड़ी हिफाजत से रखी जाय।

आग्यू, डाढ्यू[1] दौड़्यो पाणी, तख पाई आग दूणी। [आग का जला हुआ] प्र०—जहाँ उपाय करने पर विपरीत फल हो अथवा रिशवतखोर हाकिम के फैसले पर।

आज गीज्यो काखड़ी, भोल गीज्यो बाखरी। प्र०—चोरी की आदत पहले छोटी-छोटी चीजों पर पड़ती है।

---

* अंतर अँगुरी चार को साँच झूठ में होय।
सब माने देखी कही, सुनी न माने कोय॥—वृंद।

† छवै छिगुनी पहुँची गिनत, अति दीनता दिखाय।
बलि वामन की ब्यौंत लौं को बलि तुम्हें पत्याय॥—बिहारी।

आज केतू भोल्रौ[1], जो भोल[2] श्रौण सो आवै श्रौ। [१ राहु ग्रह, २ दूसरे रोज] प्र०—विपत्ति पर विपत्ति आने पर तंग होकर कहा जाता है।

आज बिटी जैा नी कि दांदरो[1] नी। [१ चक्की] प्र०—जहाँ कोई जान-पहिचानवाला धोखा देकर चला जाय या कोई छोटा बच्चा कहना न माने।

आजका[1] पिंडालू[2] तैड़ू खाडै[3] भोल का पिंडालू तैड़ू खाडै। [१ आज के, २ मुइयाँ, ३ खड्ड ही में] प्र०—जहाँ खर्च पर खर्च आ पड़ते हों, बचत न रहे अथवा जहाँ बच्चे होकर मर जाते हों।

आजैा[1] मन्नो भोल[2]। [१ आज का मरना, २ दूसरा दिन] प्र०—जहाँ विपत्ति थोड़े समय के लिये टल जाय पर फिर आने की आशंका हो।

*** आत्मा को बैरी जिभ्या[1]।** [१ जीभ] प्र०—जहाँ कहीं अपनी कही हुई बातों के कारण कष्ट उठाना पड़े।

आदि रोग खट्टा सर्वरोग भट्टा। प्र०—भट्टा और खटाई को कुपथ्य बतलाते हुए।

आधा गैां संगराद[1] आध गैां संदरांद[2]। [१ संक्रांति, २ संक्रांति का दूसरा दिन] प्र०—जहाँ कोई कुछ वस्तु कुछ साथियों को बाँटे कुछ को न बाँटे वहाँ।

आधा[1] मैा कामली क्या चैा। [१ माघ का आधा महीना गुजर जाने पर] प्र०—जहाँ समय निकल-जाने पर किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं रहे।

---

* स०—कभी कभी गुन दोष में उपजत दुक्ख शरीर।
मधुरी बानी बोलिके परत पींजरा कीर॥—वृंद।

आधा को असवाल आधा को गढ़वाल। प्र०—असवाल कौम की बड़ाई में कहा जाता है क्योंकि एक समय असवाल लोगों का इतना प्रभाव था कि आधा गढ़वाल उनके अधिकार में था। उन दिनों गढ़वाल के राजा का अधिकार केवल आधे ही गढ़वाल पर था।

आप घोड़ान बाप घोड़ा, लत्ती[1] लत्थू[2] न थोंथरू[3] फोड़ा। [१ लात ही लातों से, २ सिर फूट गए] प्र०—जहाँ कोई अपनी पहुँच से बाहर का काम करके नुकसान उठावे।

आप घातिक, महापातिक। प्र०—आत्महत्या की निंदा पर।

आबत[1] ठडथावो[2] सोरो[3] खडयावो[4]। [१ मित्र, २ सहायता करके खड़ा करे, ३ सगोत्री भाई-बंधु नुकसान पहुँचाता है।] प्र०—मित्र और सगोत्री के कार्यों पर।

आम का आम गुंठली का दाम। प्र०—जहाँ कहीं किसी काम से दुहरा लाभ हो वहाँ।

आम खाणा कि पेड़ गणना। प्र०—जहाँ कोई मतलब की बात न करके फिजूल बातें करे वहाँ।

आयो मनखी आई धाण[1], गई मनखी गई धाण। [१ काम काज] जहाँ कुटुंब के बढ़ने-घटने पर काम-काज का बढ़ना-घटना नजर आवे वहाँ।

आरूवेडू अफू खैा, बैदू मगार[1] लगौ। [१ दोष, कसूर] प्र०—जहाँ कोई कुपथ्य कर बीमारी को बढ़ावे अथवा किसी से छेड़छाड़ करके झगड़े में पड़े।

आलकसी का जोंगा[1] बांगा[2] [१ मूँछ, २ टेढ़े] प्र०—सुस्त आदमी के लिये।

आँसू आँख्यूँ ही औंदा घुँडू[1] थोड़ा ही औंदा। [१ घुटनों पर] प्र०—भला काम भले ही से होता है बुरे से थोड़े ही होता है—ऐसे मौके पर।

* **अहारे ब्योहारे, लज्जा न कारे।** प्र०—आहार-व्यवहार इत्यादि में लज्जा न करने के लिये।

† **इना[1] वचण[2] चुलो मन्नोही[3] भलो।** [१ इस प्रकार, २ बचने से, ३ मरना ही] प्र०—जो बड़े संताप में दिन काट रहा है उस पर।

उकटदी[1] किरसुल्यूँ पंख लगदा। [१ नष्ट होनेवाली चींटियों को] प्र०—जहाँ कोई नीच संपत्ति पाकर इतराने लगे।

उकाल[1] काटिक[2] सरवट[3]। [१ चढ़ाई, २ तै करके, ३ बेतहाशा दौड़ना] प्र०—जो कोई अपना मतलब साधने को खुशामद करता रहता है और मतलब निकल जाने पर बात नहीं करता उस पर।

उघाड़ी[1] आँख्यू छार डालद। [१ खुली हुई] प्र०—खुले आम धोखा देनेवाले पर।

‡ **उच्ची डांडी[1] गैण्यू तला[2]।** [१ ऊँचे पहाड़, २ तारों के नीचे] प्र०—ओछे के इतराने पर।

उज्याड़का[1] साऽस ढांगो[2] भूख मरो। [१ खेत में फसल चरने के भरोसे, २ बूढ़ा बैल] प्र०—जो अनुचित लाभ की आशा

---

* आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्। अर्थात् आहार-व्यवहार में लज्जा छोड़नेवाला पुरुष ही सुखी होता है।—चाणक्य।

† गुजर की जब न हो सूरत गुजर जाना ही बेहतर है।
हुई जब जिंदगी दुशवार मर जाना ही बेहतर है॥ —अकबर।

‡ ओछे बड़े न ह्वै सकैं करि सतरौहैं बैन।
दीरघ होय न नेकहू फारि निहारे नैन॥—वृंद।

किए हुए कुछ काम नहीं करता और अंत में कुछ नहीं पाता, उस पर।

उड्याँ चून[1] पितरू[2] का नौं। [१ उड़ा हुआ पिसान, २ पितरों के अर्पण] प्र०—इच्छा न होने पर भी यदि कोई अच्छा काम अपने आप ही बन जाय तो उस काम को अपना किया हुआ बतलानेवाले पर।

उंडु-पुंडका[1] चुल-पुंड[2] चुला-पुंडुका उंड पुंड। [१ इधर-उधर से आए हुए, २ रसोई चौके में] प्र०—जहाँ पुरानों की बेकदरी और नयों की प्रतिष्ठा हो, वहाँ।

उत्तम खेती मध्यम बणज, कठिन चाकरी विकट जोग। प्र०—खेती की श्रेष्ठता और नौकरी की निकृष्टता पर।

उदय माँ, न अस्त माँ। प्र०—जो भले-बुरे किसी गिनती में न हो उस पर।

उपरामा[1] चापरो[2]। [१ ऊपर से लगी हुई लकड़ी के, २ ऊपर चप्पर डालना] प्र०—जहाँ पैवंद के ऊपर पैवंद लगे अथवा जहाँ कोई बिना बुलाए आकर राय देने लगे वहाँ।

***उफली[1] उफली मारूफाली[2] करम की छीना ली[3]।** [१ उछल उछलकर, २ छलाँग मारूँ, ३ दो सेर अनाज] स०—धाम्रो धाम्रो कर्म लिखा सो पाम्रो। प्र०—जहाँ बड़े प्रयत्न करने पर भी थोड़ा ही प्राप्त हो वहाँ।

उलटो चोर कोतवाल डांडो[1]। [१ डंड लेवे] प्र०—जो मनुष्य दूसरे का नुकसान करे और उलटा उसी को धमकावे उस पर।

---

* करम कमंडल कर गहे तुलसी जहँ लग जाय।
सागर सरिता कूप जल बूँद न अधिक समाय॥

एक अनार सौ सौ बीमार। प्र०—जहाँ एक ही वस्तु के कई गाहक हों वहाँ।

एक आसान अर एक नुकसान। प्र०—जहाँ कोई हानि भी पहुँचावे और एहसान भी रखे वह।

एक कव्वा सकद न द्वी लिजाँदा। प्र०—बहुत दुबले पतले के लिये।

एक की एक्कीस, पाँच की पच्चीस। प्र०—उपकार करनेवाले को आशिष देते हुए।

एक की सैर, द्वी को मेलो, तीन को घपला, चार को झमेलो। प्र०—एक दो इत्यादि साथियों के लिये।

* **एक कोढ़ी हैंका[1] कोढ़ी तरकौ[2]।** [१ दूसरों, २ हँसी उड़ावे] प्र०—जो अपने अवगुणों को तो देखे नहीं पर दूसरों के उन्हीं अवगुणों को जाहिर करे उस पर।

एक गुनाः एकी शूल सौ गुनाः एकी शूल। प्र०—एक कसूर करने पर और कसूरों को करने के लिये ढीठ हो जाता उस पर।

एक घेत्या मरजौ द्वी घेत्या बचजौ। प्र०—सारे बोझ को एक ही घेत अर्थात् एक ही बार ले जाने की बुराई और बाँटकर दो बार ले जाने की अच्छाई के लिये।

एक गोरू एक्कू सेटगो[1] सौ गोरू एक्कू सेटगो। [१ गाय हाँकने की छड़ी] प्र०—जहाँ एक काम और अधिक कार्य के करने में एक ही परिश्रम करना पड़ता हो वहाँ।

एक ढेबरी लत्ता लगबो, एक गोरूछाँ ठेकौ[1]। [१ रोके] प्र०—एक भेड़ और एक गाय पर।

---

* पर को औगुन देखिहै अपनो दृष्ट न होय।

एक दाढ़ खाँदी एक चमलाँदी[1]। [१ खुजलाती] प्र०—जहाँ दो बराबर हक पानेवालों में से एक को दिया जाय और दूसरे को न दिया जाय वहाँ।

एक देवी सौ काणा, कै कै द्यौ[1] **आँखा साणा**[2]। [१ देवे, २ सुंदर आँखें] प्र०—जहाँ दाता में माँगनेवालों की आवश्यकता पूरी करने की सामर्थ्य न हो वहाँ।

एक परकंड्याल क्या त करो। इसकी मूल कहानी इस प्रकार है कि परकंडी गाँव का रहनेवाला एक कुली ऊखीमठ-मंदिर के भंडार में काम करता था। परकंडी गाँव का रहनेवाला होने से लोग उसे परकंड्याल नाम से पुकारते थे। एक दिन उसने भंडार में जमे हुए घी का एक डला चुराकर अपने शिर में टोपी के नीचे छिपा दिया। भंडार के दरवाजे पर पिंजरे में बैठी हुई मैना ने उसकी यह चोरी देख ली। वह कहने लगी 'तै परकंड्याल घाम पर धरा' अर्थात् उस परकंड्याल को धूप में रखो। मैना के कहने के मुताबिक परकंड्याल धूप में रखा गया तो उसकी चोरी का घी गल-कर उसके बदन पर चूने लगा। उसकी चोरी पकड़ ली गई और उसे उचित दंड मिला। पीछे एक रोज भंडार में आग लगी। परकंड्याल चीज-वस्तुओं को बचाने लगा पर उसने मैना की ओर देखा भी नहीं। तब मैना खुशामद से कहने लगी 'एक परकंड्याल क्या त करो' अर्थात् एकही परकंड्याल है जिसे सारा काम करना पड़ रहा है। वह कहाँ तक करे। तब से यह कहावत उस प्रांत में ऐसे मौके पर कही जाती है जब कोई किसी की अपने मतलब से झूठी खुशामद करता है।

एक पंथ द्वी काज। प्र०—जहाँ एक प्रयत्न से दो कार्य सिद्ध होते हों वहाँ।

एक माछो सारो ताल गंदा करदेंद। प्र०—जहाँ एक व्यक्ति के ऐब से सारा स्थान बदनाम हो वहाँ।

एक म्यान माँ द्वी तलवार नि रै सकदी। जहाँ एक ही स्थान के दो मालिक होना चाहें अथवा एक स्त्री के दो चाहने-वाले हों वहाँ।

एक मोचू[1], सबू का आँखा घोचू[2]। [१ ऐबी, २ दुखावें] प्र०—जहाँ एक के कसूर से सबको शर्मिंदा होना पड़े वहाँ।

एक भैांसी भैांसी अर एक अली अली। प्र०—जहाँ कोई किसी को एक ओर तो आदर-सूचक वाक्य कहे दूसरी ओर से तिरस्कार करे वहाँ।

एक ल्याया पोर[1], स्या[2] होई चोर, एक ल्याया परार[3], स्या कदी करार। [१ पारसाल, २ वह (स्त्रीलिंग), ३ दो साल पहले] प्र०—जहाँ सुधार के सब उपाय व्यर्थ जायँ वहाँ।

एक सिंह रण को, एक सिंह वण को, एक सिंह माधो-सिंह और सिंह कैका। यह कहावत उस वीर योधा माधोसिंह के पराक्रम से उत्पन्न हुई है जिसने तिब्बती लोगों को, जो निलंग की घाटी पर कब्जा कर चुके थे, हटाकर गढ़वाल-राज्य को बचाया था और जिसने पहाड़ पर सुरंग खोदकर मलेथा गाँव (श्रीनगर के पार की तरफ) में गूल पहुँचाई थी। प्र०—जहाँ कोई बड़ा नाम कमाने की झूठी चेष्टा करे वहाँ।

एक हत्या[1] घरबार सै हत्या[2] खेती ह्वै[3] जैा, सै हत्या घरबार एक हत्या खेती चल जैा। [१ एक ही हाथ से चलनेवाला, २ सौ हाथ जिसमें चलें, ३ हो जावे] प्र०—घरबार (भंडार के लिये) केवल एक आदमी और खेती के लिये बहुत आदमियों की आवश्यकता पर।

एक हाथन ताली नि बजदी। प्र०—बिना दो के झगड़ा एक ही आदमी नहीं कर सकता इस पर।

एक हंसणो अर एक निकसणो[1]। [१ बनावटी हँसी] प्र०—बनावटी हँसी पर।

ए जुग न वै जुग कखीका नि रया। प्र०—जहाँ कोई दोनों तरफ से मारा जाय अथवा हानि उठावे वहाँ।

ऐंच का किटक्यो, न तला का भिटक्यो। प्र०—जहाँ अचानक कोई आफत आ जाय वहाँ।

ऐ पड़ी सिद्धू का सिर। प्र०—किसी काम के करने को किसी को उत्साह देने के लिये।

ओखल्यूँ[1] **सिरदेणो चोट्टू**[2] **क्या डरणो।** [१ ऊखल में, २ चोटों से] प्र०—जब कोई काम करने को तैयार हो ही गए तो हानि की क्या परवाह इस पर।

ओट्यां कात्यां की कपास। प्र०—जहाँ बना-बनाया काम बिगड़ जाय वहाँ।

ओट्यो कात्यो चार हाथ, घाघरो फूक्यो बत्तीस हाथ। प्र०—जहाँ काम कम और नुकसान अधिक हो वहाँ।

ओंठ्सां बंवा.ली[1] **बिलाणी**[2] **छन।** [१ चर्बी, २ गल रही है] प्र०—जिस पर चारों ओर से गरदिश आ पड़ी हो उस पर।

ओडा[1] **तैं लौणो**[2]**, बाँटा तैं खाणो।** [१ खेत के बँटवारे का निशान, २ बाल काटना] प्र०—अपने हक से ज्यादे न चाहने की शिक्षा पर अथवा कम उम्र में मरनेवाले के लिये भी।

ओडु[1]**घर ओड्डा**[2] **वैदू घर रांड्डा।** [१ मिस्त्रियों के घर, २ छप्पर] प्र०—जहाँ किसी काम के जाननेवाले के घर उस काम की कमी देखने में आवे वहाँ।

ओवरा का अड़ाया[1] **बौंड का सट्ट**[2]। [१ शिक्षा देना, २ शिक्षित होना] प्र०—जहाँ शिक्षा किसी को दी जाय और उस शिक्षा से लाभ उठावे कोई और।

ओवरा[1] गयो, मंजु.ला[2] गयो, बठु.लो[3] धोयो, तथी[4] होयो। [१ निचली मंजिल गया, २ ऊपर की मंजिल गया, ३ कटोरा माँजा, ४ इतना ही काम हो सका] प्र०—जहाँ छोटे छोटे गिनती में न आनेवाले कामों के ही करने में समय व्यतीत हो जाय और अधिक काम करने को समय न मिले वहाँ।

ओ.ली न वे.ली। प्र०—ऐसी कम प्राप्ति पर जिससे कुछ भी काम न सरे।

ओ.ली[1] वटिदेंद त खांदुछौं, घूघू[2]घाली ल्यांद[3] त औंदु छौं। [१ रोटी बना के दे, २ पीठ में चढ़ाकर, ३ ले जावे] जहाँ कोई गरजमंद से ज्यादा खुशामद चाहे वहाँ।

ओस का बुंदून तीस[1] थोड़ी ही जांदी। [१ प्यास] प्र०—ऐसी कम प्राप्ति जिससे आवश्यकता पूरी न हो उस पर।

औता[1] चुली[2] सौती[3] भलो। [१ अपुत्रा, २ से, ३ सौत का] प्र०—अपुत्रा रहने से सौतेला पुत्र का होना अच्छा इस पर।

औता तेवरा तिरुवार वांडा वग्वा.ल। प्र०—उत्सव त्योहार सब अमीर-गरीब यहाँ तक कि पशु तक भी मनाते हैं इस पर।

औता धन प्यारो, कोढ़ी ज्यू प्यारो। प्र०—जहाँ ऐसा ही देखने में आवे।

औंदी दैं बामण, जाँदी दै भाट। प्र०—जहाँ कोई मतलब रहने तक खुशामद करता रहता है, मतलब निकल जाने पर निरादर करता है वहाँ।

औंदी लछमी लात नि मारनी। प्र०—जहाँ कोई सामने आए हुए रुपए को लेने से किसी कारण-वश इनकार कर रहा हो वहाँ।

औंदो को आदर, जांदा को सत्कार। प्र०—आतिथ्य की उपयोगिता पर।

औंरी अगनैं बाछरा पिछनैं। जहाँ पीछे होनेवाली बात पहले हो जाय। औरु कि नजर अथरु बथरु, च्वर कि नजर म्वट वखरु। प्र०—अपने ही मतलब का खयाल रखने पर।

औरे खुंड मेरा मुंड। प्र०—जहाँ कोई अपने किए हुए काम से अपने ऊपर आफत लावे, वहाँ।

औलु[1] का भागन पाक्या भ्योलू। [१ उल्लू पत्ती] प्र०—जहाँ किसी आलसी को बिना परिश्रम ही कुछ मिल जाय।

अँगरेजौ राज गत्यू कपड़ा न पेटा नाज। प्र०—जिन्हें ऐसा विश्वास है कि अँगरेजी अमल्दारी से पहले लोगों के पास खाने-पीने की वस्तुएँ की इफरात रहती थी वे अँगरेजी राज्य की निंदा करते हुए ऐसा प्रयोग करते हैं।

अंग उपज्यो स्वभाव। प्र०—स्वभाव की अटलता अर्थात् न बदलने पर।

अंध्यारी अर ब्यंदारी[1]। [१ बच्चा देनेवाली] प्र०—जिसका भविष्य मालूम न हो, उस पर।

अंधा का हाथ बुटेर। प्र०—जहाँ किसी को बिना परिश्रम किए कुछ मिल जाय, वहाँ।

अंधो अलोणो पळाणो। प्र०—जो बात साधारणबुद्धि मूर्ख भी समझ सके, उस पर।

अंधैं मां काणो राजा। प्र०—जहाँ मूर्खों के बीच कोई साधारण बुद्धिवाला डींग मारे, वहाँ।

कख गिड़के[1], कख बरखे[2]। [१ बादल गरजा, २ वर्षा हुई] प्र०—जहाँ उद्योग किया जाय किसी के लिये और फल मिले किसी दूसरे को, वहाँ।

कख नारो[1] कख पाणी को धारो। [१ नगर, गाँव] प्र०—जहाँ निकट रहने योग्य वस्तु अति दूर हो वहाँ।

कख[1] राजा भोज, कख बन्दर चोर ? [१ कहाँ] प्र०—बहुत बड़े और बहुत छोटे की तुलना करने में।

कखच कुचलो, कख च कुचलो। प्र०—किसी के अपने आभूषण आदि की ओर हठात् ध्यान आकर्षित करने पर कहा जाता है।

कच्ची की हांडी गै, बिराली को इमान गयो। प्र०—छोटी सी बात पर बेईमानी करनेवाले पर।

कटौ[1] काल्वै हम्याँ ही सुख। [१ कटाई करनेवाला खून।] प्र०—दुःखदायी वस्तु को, जो अच्छी भी हो, छोड़ देने में ही लाभ है, इस पर।

कणोंडी बिराली सूसू सूँ कान कतरौ। प्र०—जब कोई सामर्थ्यवान् किसी कसूर में पकड़ा जाकर दब जाता है अथवा रिश्वतखोर या काम न करनेवाला अफसर अपने मातहतों से दबता है, तब।

कतनी कुखड़ी, कतनो फपटाट। प्र०—जहाँ किसी छोटी बात का बड़ा हल्ला हो, वहाँ।

कथाकाणी, रातव्याणी। प्र०—किसी काम की या किसी बात की समाप्ति पर।

कपटी को कुल नाश, निरकपटी को ज्यू नाश। प्र०—कपटी और निष्कपट काम करनेवाले पर।

कपूत कू क्या पांजणो[1], सपूत कू क्या सांजणो[2]। [१, २ जमा करना] प्र०—कुपुत्र और सुपुत्र पर।

कब थोरी[1] ब्याली, कब खोरी[2] खाला। [१ भैंस की छोटी बछड़ी, २ भाग्य] प्र०—जहाँ इच्छित वस्तु प्राप्त होने के दिन बहुत दूर हों, वहाँ।

कब मरी बूड, कब आया आंसू। प्र०—'अकाल मरी सासू ...' के समान।

कभी बूड गड़गड़ी[1], कभी बुड्या गड़गड़ो[2]। [१, २ नाराज, क्रोधित] प्र०—जहाँ कार्य-सिद्धि में कभी एक बाधक हो और कभी दूसरा।

कभी तैला[1] घाम, कभी सीला[2] घाम। [१ जहाँ धूप बहुत देर तक रहे, २ जहाँ धूप कम देर रहे] प्र०—भाग्य का पल्टा सभी का होता है क्या भला और क्या बुरा। इस पर हार-जीत तथा सुख-दुःख के लिये भी।

करथ्यूँ कसायूँ भांग का बाड़ा। प्र०—जहाँ बना-बनाया काम बिगड़ जाय, वहाँ।

कल्दा सरीक कौणि बूतणी। प्र०—ऐसे दीर्घसूत्री मनुष्य पर जो विघ्नों के भय से कार्य को आरंभ करने में देर करता रहता है।

कलू पर काल गेटणो[1]। [१ रोकना] प्र०—जहाँ छोटी बात पर झगड़ा बढ़े, वहाँ।

कव्वा ककडांदीरौ[1], पीना[2] पाकदीरौ[3]। [१ काँव काँव करता ही रहे, २ तिलहन का हलुवा, ३ पकता ही रहे] प्र०—दुर्जनों के बकवाद पर सज्जन ध्यान नहीं देते, इस पर।

कका बडूं का दाई, मामा-फूफू का भाई।

वाख.डी को चोर, मुठक्यो[1] धो। [१ मुट्ठी की मार] जहाँ छोटे कसूर की छोटी और जल्दी सजा मिले वहाँ।

कागा घाँडीदेश फिरो, सूसा घाँडी दुल्ना[1] बैठो। [१ छेद] प्र०—मंगते लोग दाताओं को दान देने को उभाड़ने के लिये कहते हैं।

काचा-पाका डाम सब मन मैछन। प्र०—जहाँ कोई निर्बल बलवान् के किए हुए अत्याचारों को सहता चला जाता है और उनका बदला नहीं ले सकता, वहाँ।

काचा मासूकी सी रग डग लगीं छ । प्र०—अति उतावली करनेवाले पर ।

काज कौणी अकाज भात । प्र०—विपरीत समय पर काम करनेवाले पर ।

काजी की दौड़ मसजिद तक । प्र०—जहाँ कोई किसी काम को अपनी पूरी शक्ति लगाकर भी पूरा न कर सके, वहाँ ।

काटकूट[1] बाखरीमां[2] थ्यांगथुंग[3] अछाणी मां[4] । [१ हथियार की चोटें, २ बकरी पर, ३ चोटों का शब्द, ४ जिस लकड़ी में काटा जावे] प्र०—जहाँ बाहरी काम करनेवालों के कारण मालिक को हानि उठानी पड़ती हो, वहाँ ।

कटाण द्यूं[1] न अणकटो सैं[2] । [१ काटने दूँ, २ न बिना काटे सहूँ] प्र०—जहाँ कोई न तो काम करने दे और न काम करने पर संतुष्ट रहे ।

काट्यां नाक को सिंघाणो । [१ नाक की मैल] प्र०—जहाँ किसी बदनामी के कारण संबंध टूट जाय और फिर उसकी बढ़ती देखकर संबंध जुड़ाया जाय, वहाँ ।

काट्यां मां लोण-मर्च । प्र०—जहाँ किसी दुःख-पीड़ित को कोई लगती हुई बात कहकर अधिक दुःख दिया जाय, वहाँ ।

काणसा[1] बिटी[2] खओणो[3] जेटा बिटी बेओणो[4] । [१ कनिष्ठ, छोटा, २ से, ३ खिलाना, ४ ब्याह करना] प्र०—कुटुंबियों का भोजन तथा विवाह करने के लिये अवस्था-क्रम पर ।

काणा त्वे[1] क्वा चैंद[2] ? द्वी आँखा साणा[3] । [१ तुझे, २ चाहिए, ३ सुंदर] प्र०—जिस वस्तु को हम चाहें यदि कोई उसी को पूछ कर हमें देना चाहे ।

काणा बिराला[1] मांड पत्यूण[2] । [१ बिल्ली, २ संतोष कराना] प्र०—जहाँ किसी को थोड़ा सा देकर संतोष कराया जाय ।

"काणा पांडे घैलागू", ये आया भगड़ा का लच्छन[1]। [१ लक्षण] जहाँ किसी की व्याजस्तुति (प्रशंसा की आड़ में निंदा) की जाय।

कातिगी ढाट सी रहंद फिरनू। प्र०—निष्प्रयोजन मस्त फिरनेवाले पर।

काँधी मां जुश्रो गैं मां खोज। प्र०—जो पास की वस्तु को न देख बाहर खोज करे, उस पर।

काम श्रो गैरू, खाणौ' हैरू। प्र०—जहाँ काम करने-वाले को कुछ भी न मिले, औरों को बिना काम किए दिया जाय।

काम न काजौ[1], ढाइ सेर नाजौ[2]। [१ काज का, २ अनाज-का खानेवाला] प्र०—जो काम-काज कुछ न करे केवल खाने का वीर हो उस पर।

काम प्यारो होंद, चाम प्यारो नीहोंद। प्र०—मनुष्य की योग्यता की कसौटी उसका काम होता है न कि खूबसूरती, इस पर।

कमाली ज्यूं ज्यूं भीजो त्यूं त्यूं गरीं[1] होंद। [१ भारी] प्र०—जहाँ देर करने से काम बिगड़ने का डर हो।

कामसणी काम सिखौंद[1]। [१ सिखलाता है] प्र०—कोई भी काम बिना किए नहीं सीखा जाता, इस पर।

काया रखीक[1] करम, पैसा रखीक धरम। [१ बचा-कर] प्र०—काम में उतनी ही शक्ति व्यय करनी चाहिए जिससे शरीर दुर्बल न हो, दान इतना ही तक करना चाहिए जिससे दरिद्रता न आ जाय, इसकी पुष्टि में।

कारा[1] कट्यां छन, भारा बंध्यां छन। [१ कर में दिया जानेवाला अन्न] प्र०—जो रिवाज बहुत पुराने जमाने से बरता जाता हो उसकी अटलता पर।

काल को[1] जोगी घुंडू घुंडू[2] जटा। [१ कल का, २ घुटनों तक] प्र०—नौसिखुए के अत्यधिक दिखलावे पर।

काल को जोगी आजौ' सिद्ध। प्र०—ऊपर के समान।

* **काली भली न गोरी भली।** प्र०—जहाँ दोनों में से एक से भी कुछ लाभ की आशा न हो वहाँ।

काली आखर भैंस बराबर। प्र०—अपढ़ मूर्ख के लिये।

क्या माखो खो क्या जुगारो[1]। [१ जुगाली करना] प्र०—निर्बल और कृश शरीरवाले के लिये।

क्या सौण सपूत, क्या भादो कपूत। प्र०—जहाँ दोनों की आपस में तुलना करने पर कोई बड़ा फर्क न हो।

कि खाव बप-घर, कि खाव अप-घर। या तो पिता ही के घर अच्छी-अच्छी चीजें खाने को मिलती हैं, या जब स्वयं गृहस्वामिनी होती है, तभी, सास आदि के आधिपत्य में नहीं।

कित[1] तोती ही होली कित मैणा ही होली। [१ या तो] प्र०—जो बिना समझे-बूझे ऐसी बात कह बैठे जो प्रसंग के बिलकुल विपरीत हो। इसकी मूल कहानी इस प्रकार है कि कोई राठ के मुल्क का रहनेवाला एक बार भावर गया। वहाँ उसने हाथी देखा। जब वह घर आया तो उसने गाँव के बूढ़े प्रधान के पास उस जानवर का सारा हुलिया कहा और पूछा कि "ऐसा चड़ा (जीव) मैंने देखा है वह क्या होगा ?" प्रधान ने कहा या तो तोता होगा या मैना होगी।

कितलू[1] का नाग, बिराला[2] का बाघ। [१ केंचुवा, २ बिल्ली] प्र०—जहाँ कोई बात बहुत तूल देकर कही जाय।

* द्यौ में घटा सुहावनी को विरहिन के हेत।
कह्यौ कहावत ना सुनी कालो भलो न सेत ॥

कित त्यूँ दूणा, कित रैं कूणा। प्र०—ऐसे अनुभव-रहित व्यापारी पर जो समय का भाव न देखकर अधिक मुनाफा के लिये अड़ा रहकर नुकसान उठावे।

कित न्हैक[1] जाड़ो, कित खैक जाड़ो। [१ नहाकर] प्र०—जाड़ा लगने पर।

कितलो[1] करो, सर्प की स-र[2], चिचो[3] कितलो ताणीताणी[4] मर। [१ केंचुवा, २ बराबरी, ३ बेचारा, ४ खिँच खिँच के] प्र०—जहाँ कोई छोटा बड़े की बराबरी करना चाहे और न कर सके।

किलमोड़ा[1] की तलवार। [१ एक कँटीली झाड़ी (रसौंत) जिसकी लकड़ी बिलकुल कच्ची होती है] प्र०—जो केवल डींग मारा करे, उस पर।

किलै पोणयालो[1] ह्वैछौ, किलै द्वार नी खोलदो। [१ पाहुने को बुलानेवाला] प्र०—जो पहिले भरोसा दे और ऐन मौके पर छिप जाय उस पर।

किसाण ह्वैक[1] कमौणो, राणी ह्वैक खाणो। [१ होकर] प्र०—करना मेहनत से, खाना ऐश से।

कीचमां हाणे[1], मुख ऐ लगे। [१ चोट मारी] प्र०—जहाँ कमीनों से छेड़छाड़ करने पर इज्जत में बट्टा आवे।

कीली का छोर बाछी बुरकदी[1]। [१ छलाँग मारती, कूदती] प्र०—जहाँ कोई निर्बल किसी दूसरे के सहारे बड़े काम में हाथ डाले अथवा किसी बलवान् से लड़े।

क्वी (ग्वी) राल खैक खिंकराल। इसकी मूल कथा इस प्रकार है कि गाँवों में गरीब लोग फागुन-चैत के महीने में, जब अन्न की कमी हो जाती है, प्राय: क्वीराल (कचनार) के फूलों पर गुजर करते हैं। ऐसे किसी गाँव के गरीब घर की लड़की, जो किसी

मातबर घर में ब्याही गई थी, एक मर्तबा डांडी में चढ़ी हुई यात्रा कर रही थी। जंगल में क्वीराल के फूलों को देखकर पूछने लगी कि "ये पेड़ काहे के हैं जिनमें ये सुफ़ेद फूल लगे हैं?" किसी ने उत्तर दिया बेटी ये वही क्वीराल के फूल हैं जिन्हें तू बचपन में अपने मायके में खाया करती थी। वह बोली "खिंकराल् खिंकराल्" इस पर वह आदमी बोला "कुइराल् खाके खिंकराल्।" तब से कहावत चल पड़ी जो कोई अपने उपकार करनेवाले को भूल जाता है उस पर इसका प्रयोग होता है।

क्वीलू मां छाप, अशर्फ्यूँ की लूट। प्र०—जो अय्याशी में हजारों लुटा दे और सत्कार्य में कंजूसी करे, उस पर।

कुकरु का गौं अग्यौं। प्र०—किसी के असंभव बात कहने पर [कुत्तों के गाँव में आग लगना।]

कुक्कर ताणो[1] भैर[2], बिरालो ताणो भितर। [१ खींचे, २ बाहर] प्र०—जहाँ सब कोई अपने ही स्वार्थ की ओर लक्ष्य कर बातें करें, वहाँ।

कुकुरू का मुंड बिराला, अर बिरालू का मुंड कुक्कर। प्र०—जो इधर की शिकायत उधर और उधर की शिकायत इधर करके लोगों को लड़वावे, उस पर।

कुकुरू की मौत मरनू। प्र०—जो अपने बुरे कामों के कारण बड़ा दुःख पा रहा हो, उस पर।

कुकुरू सूँ कपास, बाँदरू सूँ नर्यूल[1]। [१ नारियल] प्र०—जहाँ कोई उपयोगी वस्तु किसी ऐसे मनुष्य के हाथ पड़ जाय जो उसकी कदर या उपयोगिता को न जाने।

कुछ खायो गाँव का चोरुन कुछ बण का मोरुन। प्र०—जहाँ कई तरफ से हानि होती हो।

* कुकुर को पुछड़ो[1] थोला[2] उँदो[3] डालीक[4] भी बांग्वै[5] बांगो। [१ पूछ, २ नली, ३ भीतर, ४ डालकर, ५ टेढ़ा ही] प्र०—जहाँ कोई रोकने पर भी अपनी बुरी आदत को न छोड़े वहाँ।

कुखड़ो च·रो[1] घुड़चो[2] भ·रो[3]। [१ चरे, २ पेट, ३ भरे] प्र०—जहाँ कोई दुर्बल बड़ी कठिनता से अपनी गुजर कर रहा हो उसमें बाधा न डालने के लिये।

कुजगा[1] दुखणो[2] जेठाणो[3] बैद। [१ बुरा (गुप्त) अंग, २ फोड़ा, ३ जेठ] प्र०—जहाँ सहायक से सच्ची स्थिति कहने में संकोच हो वहाँ।

कुँडली[1] क्या देखणी, मुँडली[2] देखणी। [१ जन्म-पत्र, २ सिर (शकल-सूरत)] प्र०—जहाँ शकल सूरत ही देखकर सारा हाल मालूम हो जाय और अधिक जाँच-पूछ करने की आवश्यकता न पड़े। अथवा—रूपासक्ति के सामने कुंडली कोई चीज़ नहीं।

कुमनखी[1] बोल्यूँ मार,[2] कुब.ल्द[3] सिगू मार[4]। [१ बुरा मनुष्य, २ बोली से मारनेवाला, ३ बुरा बैल, ४ सींग से मारनेवाला] प्र०—कटुवादी पर।

कूटी[1]नि मारे थेगी[2] मारे। [१ कूटकर, २ छोटी छोटी चोट मारकर कूटना] प्र०—जहाँ कोई नुकसान पहुँचानेवाला अपरोक्ष रीति अथवा द्वारांतर से नुकसान पहुँचावे।

कूड़ा[1] को सूत[2] अर ब्यौ[3] को ठ्यौ[4] बदलेंद नी[5]। [१ मकान, २ लंबाई-चौड़ाई की नींव, ३ विवाह, ४ ठहराव, रुपये-पैसे की बात, ५ बदलता नहीं] प्र०—न बदली जानेवाली बात पर।

---

* जातिस्वभावो दोषोयं कटुकं त्वं न मुञ्चति।

कुत्ता क्या देखण कुत्ता को ठाकुर देखण। प्र०—जहाँ मालिक की मुरौवत से उसके नौकर की उद्दंडता क्षमा कर दी जाय वहाँ।

कुत्ता खौ न बासी रौं। प्र०—जहाँ कोई बात उचित परिमाण से की जाय।

कूट्यां पीस्यां कि नी चुमकी[1] पौणो आइ पौंछो रुमकी[2]। [१ फाँक, चुटकी, २ शाम को अँधेरा होने पर] प्र०—जहाँ तंगी के समय खर्चीला काम आ पड़े वहाँ।

केतूकी[1] कांडी अर मुसेली[2] की माटी। [१ अपामार्ग का काँटा, २ चूहे के बिल की मिट्टी] प्र०—जिस पर सारे झगड़े का दार-मदार और मूल हो।

केदार[1] न कमायो, मद्यू न समायो। [१ केदारनाथ, २ मध्यमेश्वर] प्र०—जहाँ किसी की कमाई और कोई खावे।

कैको डालो[1] सुप्पो, कैको सोनो[2] रूपो। [१ अनाज भरने के बर्त्तन, २ सोना-चाँदी] प्र०—किसान और महाजनों की तुलना पर।

कै घट्ट फूले। प्र०—जहाँ कोई बूढ़ा नादानों की-सी बातें करे।

कैं चुच्ची[1] रांड द्यूरैं भौजैं[2] नि स्वाव[3]। [१ बेचारी, २ देवर भाभी का सा व्यवहार, मसखरी मजाक, ३ अच्छी न लगे] प्र०—जहाँ कोई मनोवांछित वस्तु बिना प्रयत्न मिल जाय।

क्वै जौ घ‍ड़ा का मोल, क्वै जौ घोड़ा का मोल। प्र०—जहाँ किसी गरीब को छोटा सा भी नुकसान असह्य हो जाय।

कै दिनू नौ नौ साड़ा[1] कै दिनू निनंग नागा[2]। [१ साड़ी, २ बिलकुल नंगा] प्र०—जहाँ किसी की हालत पहिले अमीरी की और पीछे गरीबी की हो जाय।

कै दी[1] धित्यैं[2], कै बोलि[3] पत्यैं[4]। [१ देकर, २ संतोष कराना, ३ बातों से, ४ मना लेना] प्र०—जहाँ भिन्न भिन्न उपायों द्वारा किसी न किसी प्रकार सबको प्रसन्न कर दिया जाय।

कै न खाये खासू मासू[1], कै आया पितलाण्या[2] आँसू। [१ हिलवान का मांस, २ पीले, पीतल के रंग के] प्र०—जहाँ मौज कोई और उड़ावे और मुसीबत किसी और पर आवे।

कै न खाये ध्यूकसार[1], को होये लंपसार[2]। [१ घी और कच्चा हलुवा, २ टाँगें लंबी करके लेट जाना] प्र०—ऊपर के मुवाफिक।

कैं बुधि[1] मेरा लाटा[2] बाच[3] आव। [१ बुद्धि, उपाय से, २ गूँगा, ३ बोलना] प्र०—जहाँ किसी को मनाने में अनेक उपाय किए जायँ।

क्वै बोद[1] क्या खैं, क्वै बोद कीमां[2] खैं। [१ बोलता है, २ काहे में अर्थात् किस साग के साथ] प्र०—अमीर और गरीबों की तुलना पर।

क्वै भैरों कि केरी[1] का, क्वै नरसिंह कि केरी का। [१ उपासक, पूजनेवाले] प्र०—जहाँ सबका एक मत न मिले, सबकी राय भिन्न भिन्न हो।

कोली[1] कोलिणी बिना नाटो। [१ कोरी] प्र०—मूल कारण के न होने से परिणाम के अभाव पर।

कौड़ी पर काल गाटेणो[1] ठीक नी। [१ रोकना] प्र०—छोटी सी बात पर काम को रोकने पर।

कंडाली[1] लगैक[2] गौदान करवौ। [१ बिच्छूझाड़, २ लगाकर] प्र०—जहाँ किसी से कोई काम उसकी इच्छा के विरुद्ध करवाया जाय।

कँदुड़ू[1] तेल डाली कि प.ड्यूँछ[2]। [१ कान में तेल डालकर, २ पड़ा हुआ है] प्र०—जब कोई जरूरी काम को करने की चिंता न करे बेफिक्र पड़ा रहे।

खणीक[1] खाड अर गणीक[2] दोष[3]। [१ खनकर, खोदकर, २ किसी ज्योतिष से प्रश्न पूछकर, ३ ग्रह इत्यादि की क्रूर दृष्टि।] प्र०—फलित ज्योतिष की असारता पर।

खड़[1] खैक[2] भड़[3]। [१ सागपात, २ खाकर, ३ भट, वीर] प्र०—जहाँ सागपात खानेवाले गरीब बलवान् दिखाई दें।

ख·ती ना,[1] बल उकन्नू[2] छौं। [१ बखेरना मत, २ बटोर रहा हूँ] प्र०—जहाँ मनादी करने से पहले ही मनादीवाला काम कर दिया जाय।

ख·ल़ाका[1] गोस्यूं[2] डडवार[3] की स्याणी[4]। [१ खलियान के, २ मालिक, ३ अनाज जो किसी को खिदमत के बदले खलिहान ही से दिया जाता है, ४ प्रबल इच्छा, अभिलाषा] प्र०—जहाँ मालिक को अपनी चीज के लिये दूसरे की मिन्नत करनी पड़े।

ख·ल़ा साट्टी,[1] भोल़[2] ब्यौ[3]। [१ धान, २ कल, ३ विवाह] प्र०—जहाँ किसी काम को करने के लिये उपयुक्त समय न रह गया हो।

खस्या[1] का खस्या भी होया, खपकै[2] खपक[2] भी खाई। [१ निम्न श्रेणी के क्षत्रिय, २ मार] प्र०—जहाँ सब प्रकार नुकसान ही नुकसान उठाया जाय अर्थात् तिरस्कार भी हो और लाभ कुछ न हो।

खाज[1] खाणो, पीज[2] पांजणो[3]। [१ अनाज जो केवल खाने के लिये रखा गया हो, २ बीज का अनाज, ३ हिफाजत से रखना] प्र०—वस्तुओं का समुचित प्रयोग करने की उपयोगिता पर।

खाजा[1] खाया, कंडा[2] लमडाया[3]। [१ कलेवा, २ टोकरा, ३ गिरा दिया] प्र०—उपयोगी तथा अनुपयोगी वस्तुओं के यथोचित प्रयोग के लिये।

खाण[1] बांट होंदी पर सेण[2] बांट नीहोंदी। [१ खाने की वस्तु, २ सोने की शय्या] प्र०—सोना एक साथ न हो सकने पर।

खाणी न पेणी घुंडु[1] घुंडु टेणी[2]। [१ घुटनों तक, २ दर्द होना] प्र०—जहाँ परिश्रम अधिक और लाभ कुछ न हो वहाँ।

खाणो पेणो गढ़[1] रौतेलो[2] कुमैं[3]। [१ गढ़वाल, २ रमणीय, ३ कुमाऊँ] प्र०—गढ़वाल और कुमायूँ की तुलना पर।

खांदी[1] नजीक[2] न जुबान तराश[3]। [१ इकरार, २ नजदीक, ३ काटनेवाली] प्र०—जहाँ कोई दबा हुआ होने पर भी शेखी बघारे वहाँ।

खायो न पायो मर्नकु आयो। प्र०—जहाँ कोई दुःख ही दुःख उठावे लाभ कुछ भी न हो।

खार[1] दैण[2] भूख, सौ कठालू[3] नाँग[4]। [१ सोलह मन, २ लाई, सरसों, ३ बकरी, ४ कपड़ों की तंगी] प्र०—जहाँ अनुपयोगी वस्तु प्रचुरता से होने पर तंगी रहे वहाँ।

खाला पेला गौरू का, डाँड दैला औरू का। प्र०—जहाँ मौज कोई और उड़ावे और सजा किसी और को मिले।

खालो पेलो मेरो भुज्जा[1], छौं[2] ढालन[3] कु तु जा। [१ नाम-विशेष, २ मैला, ३ फेंकने को] प्र०—जहाँ लाभ किसी और को हो और मेहनत करनेवाले को कुछ न मिले।

खिमसिंह खायो, विरसिंह उस्यायो[1]। [१ सूजन आई] प्र०—जहाँ बेकसूर को दंड मिले और कसूर करनेवाला पूछा भी न जाय।

खुट्ट[1] खोसड़ा[2] चुफला[3] नाँगा[4]। [१ पैरों में, २ जूते, ३ चुटिया, ४ नंगी] प्र०—जो तंगदस्त होने पर भी अमीरों की नकल करना चाहे उस पर।

खेती खसम सेती। प्र०—खेती अपनी ही देख-रेख पर चल सकती है इस पर।

खैजाणो[1] केळी को पात, निखैजाणो कपाळी हाथ। [१ खाने का सलीका हो] प्र०—किसी लाभदायक पर नाजुक काम में हाथ डालनेवाले को कहा जाता है।

खै नि जाण्यो खसम कांगो[1], नाच नि जाण्यो आँगण बांगो। [१ गरीब, २ टेढ़ा] प्र०—जो अपनी बेवकूफी को दूसरों के सिर मढ़े उस पर।

खोज कर्न ते पहरो करनो भलो। प्र०—किसी काम के बिगड़ने से पहिले ही सुधारने की चेष्टा करते रहने के लिये।

खो कोळी[1] डड्यौ[2] लुहार। [१ कोरी, २ जले] प्र०—जहाँ कोई तो कष्ट उठाय और कोई दूसरा मौज करे।

खो बाघ लाल खाब[1], नि खो बाघ लाली खाब। [१ खुला हुआ मुँह] प्र०—लाभ के स्थान में हानि होने पर भी कोई विश्वास न करे तब।

गढ़ै[1] ते मढ़ै खै जांदी। [१ गढ़ाई, २ मढ़ाई] प्र०—जहाँ मरम्मत का खर्च मूल्य से बढ़ जाय।

गणन पर हाय का.लो, हरचण पर[1] मुख काळो। [१ खो चाने पर] प्र०—रुपए के अवगुण पर।

गथू का वीज लेण गैळ्यो सेंटू का फला खांदी आयो। प्र०—जहाँ कोई किसी काम को इतना विलंब से करे कि उसका आवश्यकता ही न रह जाय।

गरीब गत्ता[1], फटीं लत्ता। [१ गात्र, देह] प्र०—तंग-दस्ती की हालत पर कहा जाता है।

गरुड़ू का थेंदुड़ा। प्र०—कुसंतानों पर।

गलका[1] खाणा, हुलका[2] तापणा। [१ मँगनी के कौर, २ फूस की आग] प्र०—निठल्ले, काम न करनेवाले, निरुद्यमी पर।

गला जाँद गास, अर नाक जाँद सीत[1]। [१ भात का कण] प्र०—जहाँ कोई अन्याय की बात छोटी ही क्यों न हो पर असह्य हो।

गाड जैल्यो गाडी अड़ाली, भेल जैल्यो भेली अड़ालो। नासमझ सर्वत्र ठोकर खाता है।

गड़लो[1] उकलिक[2] फलो[3]। [१ चढ़ाई, सीढ़ी, २ चढ़कर, ३ कूदना] प्र०—"उकाल् काटीक सर्वंट" के मुवाफिक।

* **गाजी[1] गँवाइक बणिया स्याणो[2]।** [१ कपड़ों की गठरी, २ सावधान] प्र०—जहाँ काम बिगड़ जाने पर उपाय सूझे।

गाडपार सौलाका[1] बाबू को क्या लगद। [१ साही के] प्र०—जहाँ कोई काम किसी की पहुँच के अथवा अधिकार के बाहर हो।

गाडवार[1] लगलो गाडपार[3] तुमड़ो[4]। [१ नदी के इस पार, २ बेल, ३ नदी के उस पार, ४ तूंबी] प्र०—जहाँ कोई संबंध न घटित होता हो।

गाड क दिन राँड दिखदी नी च, बोद[1] लौ[2] माछा[3]। [१ कहती है, २ लाओ, ३ मछली] प्र०—जहाँ कोई स्वभावतया न पूरी की जा सकनेवली माँग पेश करे।

गाडा' डूमको[1] गायूँ न बजायूँ[2]। [डोम का, २ गाया हुआ न बजाया हुआ] प्र०—जहाँ गरीब के किए हुए अच्छे काम की भी कोई कदर न की जाय।

---

* चौरे गते का किमु सावधानम्।

गाण पूरी[1] थैला रीता[2]। [१ गिनती पूरी, २ थैले खाली] प्र०—जहाँ कहीं हिसाब ही से लेन-देन पूरा हो जाय। किसी को कुछ न मिले।

गांदारा[1] की गली[2] अर नाचदारा[3] को घेर। [१ गानेवाले की, २ कंठ का मीठा स्वर, ३ नाचनेवाले] प्र०—उक्त दोनों बातों पर।

गाल्यूंन मनखी नि मरदा, ताता पाणीन कूड़ा नि फुकेंदा। प्र०—गालियों की निष्फलता पर।

ग्वालो गणो न गोस्यूँ पूछो। प्र०—जो बिना किसी के माने आप ही मुखिया बनना चाहे उस पर।

गास देणो पर बास निदेणो। प्र०—अपरिचित अथवा संदेहजनक को वास देने पर।

गिच्चा[1] का बाबू को क्या जाँद। [१ मुँह] जो करे कुछ नहीं और हाँके बड़ी बड़ी उस पर।

गिच्चा सुवाक[1] न कपाली भाग। [१ मधुर भाषण] प्र०—अभागों के लिये।

गिच्ची बोलदी, कपाली हँसदी[1]। [१ हँसती है] प्र०—जिसके मनसूबे निष्फल जायँ।

गुजर गई गुजरान क्या झोपड़ी क्या मैदान। प्र०—जहाँ छोटी जगह पर गुजर हो जाय।

गुण को माख्यूँ हेरो[1] उंदो, थप्पड़ को माख्यूँ हेरो उब्बो। [१ देखे] प्र०—कृतज्ञ व्यक्ति की प्रशंसा में।

गुरू गुड़ ही रैग्या चेला शक्कर ह्वै ग्या। प्र०—जहाँ गुरु से चेला बड़प्पन पावे।

गुस्सा मां क्या नि बोलेंद अर अकाल मां क्या नि खायेंद। प्र०—गुस्से में कही कई गई बातों की क्षमा माँगते हुए।

ग्यूं खैक जौ मिट्ठा कख छया। प्र०—जो पहिले आरामतलब हो जाता है उससे मिहनत कैसे हो सकती है? ऐसे प्रसंग पर।

ग्यूँ ग्यूँ राखी, जौ जौ राखी। प्र०—जहाँ स्वाभाविक ही मेल हो।

ग्यूँ दगड़ी घूण पिसाई। प्र०—जहाँ कसूरवाले के साथ बेकसूर मारा जाय।

ग्यूं खोली जौ खोल्। प्र०—जहाँ खोटे-खरे भले-बुरे में कुछ फर्क न हो।

गेड़ी न पल्ला, द्वी ब्यो कल्ला। प्र०—जो अपनी सामर्थ्य से बाहर के मनसूबे बाँधे उस पर।

गैरी[१] छल् बकलो[२] मोल्[३]। [१ गहरी, २ घना, ३ खाद] प्र०—खेती के परिश्रम पर।

ग्वैर गणो न गुसैं पूछो। प्र०—जिसकी कहीं गिनती न हो।

गोठ नि धरी एक रात, खंतड़ी[१] फूकी पाँच हात। [१ रजाई] प्र०—जो काम थोड़ा और नुकसान अधिक करे उस पर।

*** गोणी अपणो पूछ छोटो ही देखद।** प्र०—जो अपने अवगुणों को न देखे और दूसरों के वैसे ही अवगुणों पर नाम धरे उस पर।

गोणी मारिक न र[१] न चाम। [१ मांस] प्र०—जहाँ दूसरे को कष्ट दे के कुछ भी लाभ न हो।

---

* पर को अवगुण देखिहै अपनो दृष्टि न होय।
दीप उजेरो करत है तले अँधेरो होय॥—वृंद

गोरू का किन्ना फिट[1] जौन, सँटुला को ज्यूपलजौ[2]। [१ निबट जाय, २ जीव पल जाय] प्र०—जहाँ बड़े के आसरे छोटे की गुजर हो जाय।

गोरु भैंसा एक्कु सेटुगो[1]। [१ छड़ी] प्र०—जहाँ भले-बुरे छोटे-बड़े सबके साथ एक ही बर्ताव किया जाय।

गौं को सयाणो कख छ? बल चोरी। प्र०—जहाँ बुराइयों को रोकनेवाला स्वयं बुरे काम करता हो।

गौं छोड़नो पर मौ[1] नि छोड़नी। [१ मवासा] प्र०—पंक्ति भेद न करने के लिये।

गौं जैक बात, बण जैक पात। प्र०—जहाँ कोई ऐसा न करे।

गौं जौ पर नौं नि जौ। प्र०—बदनामी से बचने के लिये।

गौं माथे[1] डुमाणो[2], दिन रात को ढुँग्यो। [१ ऊपर, २ पत्थर पड़ना] प्र०—बुरी संगत के कुफल की निंदा पर।

गंगा गयो गंगादास, जमुना गयो जमुनादास। प्र०—मुँहसुहाती कहनेवाले पर।

गंगा बगौ[1] उँदो[2], पर्वाण[3] बगौ उब्बो[4]। [१ बहावे, २ नीचे, ३ चतुर मनुष्य, ४ ऊपर को] प्र०—चतुर पुरुष की चतुराई की प्रशंसा पर।

गँवार को मन थँवार[1]। [१ थामना, प्रतीति दिलाना] प्र०—जहाँ किसी बेवकूफ को समझाने में झूठ सच कहना पड़े।

घट्ट फूटो घट्ट की रांड[1], पनालो टूटो घट्ट की रांड। [१ दुर्वचन, गाली] प्र०—जहाँ छोटों के किए हुए कामों के दोष बड़े के मत्थे मढ़े जायँ।

घड़ा को मुख बुजेंद[1] परघड़्यांसा[2] को मुख नि बुजेंद। [१ बंद करना, २ काल, दुनिया] प्र०—जहाँ कोई बदनामी की बात यत्न करने पर भी फैल जाय।

घर का जोगी जोगणा बण का जोगी सिद्ध। प्र०—जहाँ परिचित व्यक्ति के गुणों की कदर न हो और अवगुणवाले अपरिचित की प्रधानता हो।

घर का न घाट का कखी का निरया।
घर खोई घर कूड़ी बण खोई पित्र कूड़ी। प्र०—जिसको सभी ओर से नुकसान ही नुकसान उठाना पड़े उस पर।

घर घर मट्टी का चुल्ला। प्र०—जहाँ सब ही तंगदस्ती की हाल पर हों।

घर न बार, मुहल्लादार। प्र०—जो घर का नंगा होने पर भी बड़ी बड़ी डींग मारे उस पर।

* **घर निछंदी[1] आटो गीलो।** [१ अभाव] प्र०—जहाँ मन तो हो पर घर में तंगी हो।

घर भेदू लंका बिणाश। प्र०—घर भेदू की बुराइयों पर।

† **घरमां पड़ी फूट, भैर पड़ी लूट।** प्र०—फूट की बुराई पर।

घर रया न तीरथ गया। प्र०—अधूरा काम छोड़नेवाले पर।

घर की आधी भली। प्र०—घर पर रह कर छोटी भी नौकरी पर संतोष करने के लिये।

घर की दारू[1] बुथली[2]। [१ बारूद, २ गोली] प्र०—जहाँ घर ही में रहनेवाला भीतर के भेद को बाहर बतावे।

घर को बैद अर कोरणा[1] की दवाई। [१ मकान के पीछे की गली] प्र०—जहाँ नजदीक बसनेवाले गुणवान् की कदर न हो।

---

* शौक पैदा कर दिया बँगले का और पतलून का।
यह मसल है मुफलिसी में आटा गीला कर दिया ॥—अकबर।

† स०—फूटे ते नरद उठ जात बाजी चौसर की, आपस के फूटे कहो कौन को भलो भयो।

घस्यू[1] घाट तरयू[2] जंगार[3]। [१ घिसा हुआ, २ तैरा, ३ नदी में पैदल तैरना] प्र०—जहाँ पुरानी मित्रता में नई मित्रता करने का मौका पड़े।

***घास्थी[1] घोड़ा कापल्या[2] पैक[3]।** [१ केवल घास पर गुजर करनेवाला, २ केवल हरे शाक पर गुज़र करनेवाला, ३ सिपाही] प्र०—जहाँ टुकड़खोर नौकरों से काम बिगड़े।

घुगती मारी मैं जुगती[1], तितरी मारी मैं भितरी[2]। [१ योग्य, २ भीतर] प्र०—जो सभी जगह अपना ही स्वार्थ साधे उस पर।

घुसघुसी क सोरा[1] धोइधोई क गोरा, कखल्या! [१ सगोत्री] प्र०—जन्मसिद्ध स्वभाव तथा अधिकार की अटलता पर।

घुस्या[1] हाकम रुस्या[2] चाकर। [१ घूस खानेवाला, २ रोष करनेवाला] प्र०—जहाँ ऐसे हाकिम व चाकर हों वहाँ के अनर्थ पर।

घ्यूका घड़ा उंदो भी डाला पर रूखो ही रूखो। प्र०—उपकार को न माननेवाले पर।

घ्यूको कबाड़[1] यरा[2] मै, शहद को कबाड़ ऐंच[3]। [१ कपट, २ नीचे, ३ ऊपर] प्र०—जहाँ बातों से किसी का अंदरूनी भाव प्रकट हो जाय वहाँ।

घ्यू खतेयो[1] दालीमां[2]। [१ गिरा, २ दाल ही में] प्र०—जहाँ हानि होने पर भी लाभ हो।

घ्यू घड़ी फूटी कवों को राज। प्र०—जहाँ किसी उद्यमी पुरुष की जोड़ी हुई संपत्ति निरुद्यमियों के अधिकार में पड़े।

घोखंत विद्या सोधंत वाणी। प्र०—इन्हीं दोनों बातों की उपयोगिता पर।

---

* रोटिया चाकर घसिया घोड़, खावे बहुत चले थोड़।

घोड़ा का दगड़ा काठी भी। प्र०—जहाँ एक हानि के साथ दूसरी भी आवश्यक रूप से हो जाय।

घोड़ा से लपोड़ा[1] बड़ो। [१ झंझट] प्र०—घोड़े के लिये घास-दाना न मिलने पर अथवा जहाँ कहीं किसी काम के करने में कई झंझट आ पड़ें, वहाँ।

चटुवा चाटिगे बिटवा बीटिगे, भलभला मणसू[1] कोटिगे[2]। [१ मनुष्यों को, २ नीचा दिखा गया] प्र०—जहाँ नुकसान करनेवाले भाग जायँ और संगत के कारण भलेमानसों को झंझट में फँसना पड़े।

चतुर[1] का चार जगा। (१ चालाक) प्र०—जहाँ चालाक अपने बुरे काम से फँस जाय।

चमासीजी चलिग्या, पर गँठली छोड़िग्या। प्र०—जहाँ कोई जाड़े से ठिठुरकर गँठड़ी के मुवाफिक बन जाय।

चमड़ी जौ पर दमड़ी नि जौ। प्र०—बड़े कंजूस के लिये।

चलतीका यार सबी होंदा। प्र०—जहाँ किसी अधिकारी धनवान् को प्रथम केवल लालच से खुशामदी लोग घेरे रहें पीछे उसे पूछें तक नहीं वहाँ।

चलबे थैला, जखी जौला तखी खैला। प्र०—जिसकी गुजर केवल भीख पर हो।

चलबे रांगड़ा[1], तला पोंगड़ा[2]। (१ बूढ़ा बैल, २ खेत) प्र०—बुढ़ापे में बेकदरी होने पर।

चलो रांड को चर्खा या सूंजी को पेट। प्र०—मनचले दोस्तों के बीच 'चल' कहने पर मजाक के लिये।

चाकरीमां नाकरि कख छै। प्र०—नौकरी में किसी काम को करने के लिये इनकार नहीं किया जा सकता।

चाड[1] बड़ी कि चतुर बड़ी। (१ जरूरत, गरजवंदी) प्र०— जहाँ गरज पड़ने पर चतुर मनुष्य को किसी अनाड़ी की खुशामद करनी पड़े।

चाड़ी कू बाड़ी[1] खाण पड़द। (१ मंडुवा का बिना घी-गुड़ का हलुवा) प्र०—जहाँ गरजवंद को असुविधाओं का सामना करना पड़े।

चाँदी की जुत्तो पर्वत कू उजाड़दी। प्र०—धन की प्रधानता पर।

चार दिन की चाँदणा फेर अँध्यरी रात। प्र०—थोड़े दिनों के अधिकार की अनित्यता पर अथवा जवानी पर।

चार बुलाया चौदह आया। प्र०—बे बुलाए आनेवालों पर।

चार गौं का सयाणो अठार गौं का रौ, मेरा काम नि आयेत ऐसी तैसी मां जौ। प्र०—जिस धनवान् या अधिकारी से किसी को सहायता न मिले उस पर।

चिड़ी चारा आं पाप खोरा मां। प्र०—जो बिना प्रयोजन किसी की बुराई करे उस पर।

चिण्यां कूड़ा[1] अर जण्यां नौना[2]। (१ चुने हुए मकान, २ पैदा किये हुए लड़के) प्र०—जहाँ किसी को बिना परिश्रम किए पराई संपत्ति मिल जाय।

चुल्ला आग न घड़ा पाणी। प्र०—जिस घर में बड़ी देर तक रसोई न चढ़े।

चुल्लो बोलद मैन बावन व्यंजन पकायां, औंधो[1] बोल्द मैं दगडै त छौं। [१ चूल्हे का ऊपरी भाग] प्र०— जहाँ किसी की झूँठी डींग मारने पर कोई दूसरा खंडन करे।

चुल्ला को भेल[1]। [१ चट्टान] प्र०—जहाँ बेखतरेवाली जगह में भी खतरा हो।

चूतिया मरिग्या औलाद छोड़िग्या। प्र०—जो मूर्ख समझाने पर भी न समझे उस पर।

चोर की दाढ़ी मां तिनका। इसकी कहानी इस तरह कही जाती है कि एक चोरी के मामले में बहुत से दाढ़ीवाले शुबहा पर पकड़े गए थे पर उनमें से असली चोर का पहचानना कठिन हो रहा था। तहकीकात करनेवाले अफसर ने सबको सामने खड़ा करके कहा कि "चोर की दाढ़ी में तिनका" लगा हुआ है। इस पर जो असली चोर था उसने अपनी दाढ़ी को हाथ से पोंछा, बस क्या था। अफसर ने उसे पकड़कर सारा चोरी का माल बरामद कर दिया। तब से यह कहावत चल पड़ी। जब कहीं कोई अपराधी किसी बात पर झेंप जाता है अथवा चौंक पड़ता है तब इस कहावत का प्रयोग करते हैं।

चोर गीज्यो[1] काखड़ी, बाघ गीज्यो बाखरी। [१ आदी हुआ] प्र०—बुरे काम पहले छोटे छोटे किए जाते हैं पीछे बड़े बड़े करने का साहस हो जाता है इस पर।

चोर चरचरो, जार जरजरो। प्र०—जहाँ अपराधी अपने को निरपराध होने के लिये रोब दिखलावे।

चोर चै कोथलो[1] उताणो[2]। [१ थैला, २ चित्त पड़ना) प्र०—जहाँ कोई मार पड़ने से पहिले ही लंबा पड़ जाय अथवा कोई किसी बात का उचित उत्तर देने से पहिले ही रोने लगे या हल्ला मचावे।

चोर भला बेकूफ बुरा। प्र०—बेवकूफ की बेवकूफी पर।

चोर का सौ दिन, साहू को एक दिन। प्र०—चोरी की आदतवाला एक न एक दिन पकड़ा ही जाता है इस पर।

चोर सूं चोरी करौ, साहू सूं जाग[1] दिलौ। (१ चोर का पता बतावे) प्र०—जो दो को लड़ाने के लिये प्रयत्न करे उस पर।

चोरी निकरे सेणकी[1] डोबे[2]। (१ सींक, २ डुबोई)
प्र०—जो अपने कसूर को घटाकर कबूल करे उस पर।

चोर को माल चंडाल खो। इसकी मूल कहानी यह है कि दो चोर कुछ माल चुराकर एक जंगल में गए। वहाँ उन्हें भूख लगी तो एक चोर मिठाई लेने बाजार चला गया। जब वह मिठाई लेकर जंगल में पहुँचा तो उसके दिल में लालच आ गया। उसने सोचा कि मैं मिठाई में विष मिलाकर दूसरे को मार दूँ तो कुल माल मैं ही ले जाऊँ। इसी तरह जो जंगल में माल के पास बैठा था उसने भी सोचा कि यदि मैं दूसरे को मार सकूँ तो कुल माल मुझे मिल जाय। ज्योंही दूसरा चोर मिठाई लेकर उसके पास पहुँचा तो उसने तलवार से उसे काट गिराया और आप बैठकर मिठाई खाने लगा। मिठाई में विष था उसको खाकर माल के पास-वाला चोर भी मर गया। जब उन दोनों की लाश सड़कर बू फैली तो लोगों ने उस बू को दफनाने के लिये एक भंगी को वहाँ भेजा। भंगी ने उन दोनों की लाश दफनाते हुए पास में उस माल को भी पाया जो वे दोनों चोरी कर ले गए थे। तब से यह कहावत चल पड़ी। जहाँ कहीं किसी का अनीति से जोड़ा हुआ माल किसी दूसरे के हाथ मुफ्त लग जाता है वहाँ इसका प्रयोग करते हैं।

चोर को साखी बटमार। प्र०—जहाँ कोई बुरा किसी बुरे की तरफदारी करे वहाँ।

चंडाल चौकड़ी। प्र०—बदमाशों की पंचायत।

छ बोलिक[1] छै नाली[2] लेबोलिक बार नाली[3]। (१ है, २ छपा था, ३ बारह पाया) प्र०—बेचनेवाले और खरीदने-वाले की गरजबंदी की निर्ख की चढ़ा-उतरी पर।

छांछ मांगण जाणो अर टिटरो[1] लुकोणो[2]। (१ छाछ का बर्तन, २ छिपाना) प्र०—जहाँ कोई किसी काम को करते हुए शरमावे।

छुईं[1] अर छांच जतनै बढ़ावा। (१ बात) प्र०—बातों का विस्तार बढ़ानेवाले पर।

छुँयाल् आदिम अर लब्बो धागो अल्जी जाँद। प्र०—इन दोनों पर।

छुँयाल्[1] रती[2] छुयूँ[3] भूली, पुंगड़ी पाटली[4] मल्छा[5] फूली। (१ बातूनी, २ कुटनी, ३ बातों में, ४ खेती-बारी, ५ खड़ फूल गए) प्र०—जो गप-शप में रहकर काम बिगाड़ दे।

छैसेर पिस्यूँ नौसेर भगोल्[1]। (१ पिसाई) प्र०—जहाँ लागत का खर्च कीमत से बढ़ जाय।

छोट्टा की बाण[1] ठुला की धाण[2]। (१ आदत, २ काम) प्र०—छोटे लड़कों को काम करने की शिक्षा देते हुए कहा जाता है।

छोट्टा कू बड़ो बड़ा कू बाघ, बाघ कू जिबालों[1] जिवाला कू आग। (१ बाघ को मारने की कल) प्र०—जहाँ एक से एक बढ़कर बलवान् हों।

छोट्टा गिच्चा[1] बुबाजी की दूवाई[2]। (१ मुख, २ कसम) प्र०—ताक़त के बाहर झूठी डींग मारनेवाले पर।

छोट्टा मुख बड़ी बात। प्र०—ऊपर के मुवाफिक।

छोट्टो पुजै पाँची भांडा, ठुलो पुजै पांची भांडा। (१ बर्तन) प्र०—जहाँ काम के छोटे या बड़े होने पर भी खर्च एकसा हो।

छोट्टी पूँजी खसम खाँदा। प्र०—छोटी पूँजी से तिजारत करने में जहाँ टोटा पड़े वहाँ।

छोड्यां[1] नौना अर बग्यां पुंगड़ा[2] कखछ्या भला? (१ छोड़े हुए लड़के, २ बहे हुए खेत) प्र०—इन्हीं दोनों पर।

छाड्यां गैां का क्या नौ। प्र०—जो संबंध त्यागे हुए लोगों का नाम लेकर अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाना चाहे उस पर।

छोरा न पैन्या जोड़ा मानै देखी थोड़ा। (१ दुनिया) प्र०—जहाँ कोई कमीना कुछ पद पाकर सबको तुच्छ समझने लगे।

छोरा को मुंडेणो अर ढांडा[1] को पड़नो। (१ ओला) प्र०—जहाँ किसी पर एक विपत्ति के साथ ही कई विपत्तियाँ पड़ जायँ।

छँदा[1] पालो[2] हाथ डाढिणो[3]। (१ मौजूद होने पर, २ करछी, ३ जलाना) प्र०—जहाँ कोई सुविधा का सामान होने पर भी असुविधा से काम करे।

छंदी की बलिहारी। प्र०—संपत्तिवान् के ऐश्वर्य पर।

छंदी को छबलाट, निछंदी की रोई। प्र०—संपत्तिवान और दरिद्रों की तुलना पर।

जख कुखड़ो नि होंद[1] तख रात सी क्या नि ब्याँदी। (१ खुलती) प्र०—जहाँ कोई किसी के बुलावे पर न आवे, अकड़ा रहे, खुशामद चाहे वहाँ।

जख घड़ो तख हीलो[1]। (१ गीला) प्र०—जहाँ साथ रहनेवालों में कुछ अनबन हो जाय।

जख जोशी चार, तख दिन न बार। प्र०—जहाँ जाननेवालों के होते हुए अजानों के से काम हों।

जख जौ नन्या गल[1] तख अनमन[2] भाँति कल[3]। (१ बछड़ा, साँड़, २ तरह तरह की, ३ झगड़ा) प्र०—झगड़ालू आदमी पर।

जख जौ भग्गू नयाल[1] तख नौ हाथ खयाल[2]। (१ एक आदमी का नाम, २ खाई) प्र०—अभागे मनुष्य पर।

जख देखी तवा परात, तख बिताई सारी रात। प्र०—ऐसे पेटू मनुष्य पर जो बिना बुलाए जीमने चला जाय।

जख नाक तख सोनो नी, जख सोनो तख नाक नी। प्र०—जहाँ धन हो पर संतान न हो अथवा संतान हो पर धन न हो।

जख पंच तख परमेश्वर। प्र०—पंचों की सुबुद्धि अथवा न्याय पर।

जख बसणो तख घसणो[1]। (१ लीपना-पोतना) प्र०—वासस्थान को साफ रखने के लिये। कभी कभी उस मनुष्य पर भी कहा जाता है जो अपने आश्रयदाता की तरफदारी करे।

जख यत्ती[1] तख तत्ती[2]। (१ इतना, २ उतना) प्र०—जहाँ कहीं खर्च करने में कुछ कमी पड़ जाय वहाँ उस कमी को पूरा करने के लिये।

जख रात तख थात[1]। (१ बड़ी बस्ती) प्र०—जिसका कहीं घर नहीं उसके लिये कहा जाता है तथा बटोही लोग शाम हो जाने से टिक जाने के लिये भी कहते हैं।

जख स्यूणो[1] नि छोरी[2] तख साबलो[3] कोचा[4]। (१ सूई, २ न समाय, ३ सबल, ४ जोर से डालना) प्र०—जहाँ से कुछ मिलने की आस न हो वहाँ से जो बहुत हासिल करे उस पर।

जड़ा तेल डालणो। प्र०—चुपके से सर्वनाश के उपाय करनेवाले पर।

जड़्या[1] निखाये कड़्या[2] खाये। (१ लाई का साक, २ कडुवे घास का साक) प्र०—जहाँ बिना विचारे कोई ऐसा काम शुरू किया जाय जिससे बड़ा कष्ट हो।

जतना छोटो ततना खोटो। प्र०—छोटे के खोटेपन पर।

जन राजा तन परजा। प्र०—जहाँ कोई राजा या राजा की जाति के लोगों का ऐसा अनुकरण करे जो अपनी परंपरा के विरुद्ध हो।

जदकद गंगा सैरीं पार। प्र०—अवश्य होनेवाली बात के न टलने के लिये।

जनकना कापला[1] ते आगतापला। (१ हरा साक) प्र०—अनुपयोगी या अवांछित लाभ पर।

जन्मपत्री सभी देखदा कर्मपत्री कोई निदेखद। प्र०—जहाँ जन्मपत्र में लिखी हुई या ज्योतिषी की बताई हुई बात न हो।

जनानो[1] बुझौणो[2] अर कणको[3] रुजौणो[4]। (१ स्त्री, २ संतोष कराना, ३ आटा ४ भिगोना) प्र०—जहाँ स्त्रियों को सहज में प्रसन्न किया जाय।

जना मैड़ा[1] तना जैड़ा[2]। (१ माँ, २ संतान, लड़का-लड़की) प्र०—जहाँ संतान पर माँ के गुण अधिक हों अथवा जहाँ संतान बाप के प्रतिकूल और माँ के अनुकूल रहे।

जना होया तना नि होया। प्र०—कुसंतान पर।

जनि[1] गोस्यं की[2] निर्दंदी बाण[3], तनि ल्वार की[4] लचलची[5] पाण[6] (१ जैसी, २ मालिक की, ३ आदत, ४ वैसीही, ५ कच्ची, मुड़नेवाली, ६ हथियार की धार) प्र०—जहाँ काम करानेवाला और करनेवाला दोनों कपटी हों।

जनि दुद्ध तनि बुद्ध। प्र०—जहाँ संतान पर माँ के गुण पाए जायँ।

जनि नेथ[1] तनि बरकत। [१ नीयत] प्र०—कम नीयत अथवा अनुदार व्यक्ति पर।

जनि रसाल[1] छै पूंडी,[2], तनि दुधाल[3] दिक[4] हूंदी। (१ राँभनेवाली, २ गाय का नाम, ३ दूध अधिक देनेवाली, ४ भी) प्र०—जो सिर्फ मीठी बातें कहे, देवे कुछ नहीं, उस पर।

जनि वली मांडा[1] तनि पली मांडा। (१ धर्मशाला) प्र०—जहाँ दोनों में एक भी काम का न हो।

जनू का तना। प्र०—जहाँ संतान में माँ-बाप के गुण हों।

जनो करो धामी[1] तनो करो कामी[2]। (१ मालिक, २ नौकर) प्र०—जहाँ नौकर अपना दोष या जिम्मगी मालिक पर डाले।

जनो करलो तनो भरलो। प्र०—बुरे काम करनेवाले पर।

जनो गुड़ तनो मिट्ठो। प्र०—थोड़े दाम में अधिक अच्छी चीज नहीं मिल सकती या थोड़े खर्च पर अच्छा काम नहीं हो सकता इस पर।

जनो देलो तनो पौलो। प्र०—न देनेवाले या कपट दान देनेवाले पर।

जनो देश, तनो भेष। प्र०—पहनावा इत्यादि देशानुकूल होने पर।

जनो बाजो तनो नाच। प्र०—समयानुकूल बर्ताव पर।

जनो बूतणो तनो लौणो। प्र०—भले या बुरे काम के अच्छे या बुरे फल पर।

जनो राखो राम, तनो करनो काम। प्र०—सारे काम ईश्वराधीन होते हैं, ऐसा मानकर हर हालत में संतोष से रहने की शिक्षा पर।

* **जनों रिजक[1], तनि बुध।** (१ अन्न) प्र०—सात्त्विक, राजस, तामस जैसा भोजन किया जाता है उसी के अनुसार बुद्धि होती है, इस सिद्धांत पर।

---

* यादृशं भक्षयेदन्नं बुद्धिर्भवति तादृशी।
दीपो भक्षयेद्ध्वान्तं कज्जलं च प्रसूयते ॥—नीतिकार।

जब कमर कस, तब जिवड़ी[1] रस। (१ जिह्वा में) प्र०—मिहनत से काम करनेवाला ही अच्छी संपत्ति पा सकता है इस नीति पर।

जब तैं दम, तब तैं गम। प्र०—दुख जिंदगी के साथ ही रहता है इस पर।

जब तैं ल्वै[1] तब तैं सब कोई। (१ खून) प्र०—वृद्धावस्था की बुराई पर। अपने पराए सब तब तक ही साथ देते हैं जब तक शरीर में शक्ति है इस पर।

जब तैं सास, तब तैं आस। प्र०—आशा की ऐसी प्रबलता पर कि वह दम रहते तक रहती है।

जब तोसो, तब भरोसो। प्र०—जब तक पास में कुछ हो तब ही तक भरोसा है इस पर।

जब बाड़, तब राड़। प्र०—झगड़े का कुछ न कुछ कारण होता है, इस पर।

जब बिराणा जड़ा माटो, तब अपणा जड़ा माटो। प्र०—दूसरे के साथ भलाई करने अथवा बुराई न करने के लिये।

जब बिगड़िगे काम तब आयो बैसाखू बाबा को नाम। इसकी मूल कथा इस प्रकार है कि एक साधू वैशाखू नाम के किसी गृहस्थ के घर शाम को गया। वैशाखू ने उसे रात को खिला-पिलाकर एक कमरे में सुला दिया। कमरे के दरवाजे पर भीतर से साँकल नहीं थी। साधूजी ने, वैशाखू से, जब वह सोने को जाने लगा कहा कि दरवाजा बंद करके बाहर से ही साँकल लगा देना। वैशाखू ने वैसा ही किया। साधू को रात में पेशाब लगी। वैशाखू का नाम वह भूल गया। पुकारने लगा हे मकानवाले बाबा। पर कोई न आया। इस बीच साधूजी को पेशाब उतर गई। फिर वैशाखू नाम भी याद आ गया तब उसने यह बात कही। तब से

यह कहावत हो गई। जब कभी कहीं कोई काम बिगड़ जाने के बाद उपाय सूझे तब इस कहावत का प्रयोग करते हैं।

जसि देखदु ठाकुर की खोली ज्यूं बोल्द घघरि द्यूं फोलि।

जसि देखद ठकुर कि बाड़ि कि गोली तसि ज्यू बोद कपालि द्यूँ फोड़ि। प्र०—आशा से बहुत कम मिलने पर।

जाणो न ताणों बल भैंस को सिंग। अज्ञ और ऊट-पटांग बात कहनेवाले पर ?

जब बाड़ ही बैठिगे उजाड़ खाण, तब फेराद[1] कर्न कै मू जाण। (१ फरियाद) प्र०—जहाँ रखवाला स्वयं नुकसान करने लगे वहाँ।

जब मारूँ तब डंक बजाऊँ। प्र०—पहिले काम कर लेना तब पुरस्कार के लिये कहना इस पर।

जबर्दस्त को लट्ठ सिर पर वाण। प्र०—जहाँ बड़े की अनुचित आज्ञा भी माननी पड़े।

जाणो अपणा थया[1], औणो बिरणा थया। (१ अधीन, निर्भर) प्र०—जहाँ कार्य्य की सफलता पराए ऊपर निर्भर हो वहाँ।

जात की औकात अर दुद्ध की बुद्ध। प्र०—जहाँ किसी मनुष्य में बाप और माँ के दुर्गुण देखे जायँ।

जात को बैरी जात, काठ को बैरी काठ। प्र०—जहाँ अपनी जातिवाले से नुकसान पहुँचे।

जात को मनखी अर खाणि को ढुंगो। प्र०—जहाँ किसी अच्छे खांदानवाला ठीक न्याय करे।

जा त्योहार अपड़ा घर। प्र०—बराय नाम काम करना।

ज्ञान जौ पर ईमान रौ। प्र०—ईमान निभाने के लिये।

जान जौ पर पैसा निजौ। प्र०—बड़े कंजूस पर।

जान हाथ मां धरीं छ। प्र०—जहाँ कोई किसी काम को करने में जान की परवाह न करे।

जामदै घूण लैग्या। प्र०—जिस काम के आरंभ ही में असफलता के चिह्न दिखाई दें।

जारको अगिगे, भतार को पदीगे। जहाँ कोई हकदार को छोड़कर बिना हकवाले को मिले वहाँ।

जिमदार[1] चौड़की[2] दूब छ। (१ किसान, २ मैदान) प्र०—जहाँ कोई किसानों को तंग करता रहता है अथवा किसानों की सहनशीलता पर भी।

जीभ डँडौ अर पौ रड़ौ[1]। [१ फिसलावे] प्र०—जहाँ दुर्वचन कहने के कारण कुछ हानि उठानी पड़े या पैर फिसलने से चोट लगे।

जुट्ठो खायेंद मिट्ठा का लोभ। प्र०—जहाँ किसी अनुचित काम के करने में कुछ लाभ की आशा हो अथवा न हो।

जुऊँ का भैंसा अर कितलू[1] का नाग, स्यूणू का साबला, बिरालू का बाग। [१ केंचुवा] प्र०—जहाँ कोई बात को बहुत बढ़ाकर कहे।

जुऊँ की डर घागरो सी क्या छोड़ेंद। प्र०—तकलीफ के डर से करने लायक काम थोड़े ही छोड़ा जाता है, इस पर।

जुत्ता की गार अर स्वेणी[1] को जार। [१ जोरू] प्र०—ये दोनों हर समय खटकते रहते हैं, इसपर।

जूड़ो फुकिगे पर बट निफुकेणे। प्र०—जो बर्बाद होने पर भी घमंड न छोड़े उस पर।

ज्यू को लेंदारो पाणी को देंदारो। प्र०—बादल के लिये।

जूंदा मा निपाये माँड, मरयां मां सुध्यारो[1] खांड। [१ देवे] प्र०—जो जीते-जी अपने किसी बूढ़े के कष्ट की कोई परवाह न करे लेकिन मरने पर धूमधाम से श्राद्ध इत्यादि करे उस पर।

जूनि सुखद सूत बगद[1]। [१ ज्योत्स्ना में सूखता है, मूत्र में बहता है।] प्र०—नीरस अस्थिर भूभाग के लिये। बहुत सुकुमार व्यक्ति के लिये भी।

*** ज्यूँ डाली फलो त्यूँ न्यूँ[1]।** [१ झुके] प्र०—जो सम्पत्ति पाकर नम्र हो या न हो उस पर।

जेठाज्यू मरिग्या कुकर्म करिग्या। प्र०—जहाँ कोई बुरा काम करे और इच्छा पूर्ण होने से पहिले ही मर जाय या चला जाय।

जेठाणा को नौं[1] गिच्चान नि बोलेंद पर पेट मां सी क्या निलियेंद। [१ जेठ का नाम] प्र०—जहाँ कोई गुप्त बात जान जाय पर प्रकट न करे।

जेठा बिटी बेओणो, अरकाणसा[1] बिटी खवोणे। [१ कनिष्ठ] दे० काणसा बिटी खवोणो।

जैका आँखा सौण का मैन। फूटीन तैं हरी ही हरी सूझो। प्र०—जो कोई काम अनुचित उपाय से साध ले और औरों के लिये भी वैसा करने को कहे।

जैका नी नल[1], तैका को क्या फल[2]। [१ डंठल, २ फल] प्र०—अपूर्व और अप्राप्त वस्तु की माँग पर।

जैका लगो पेट आग तैं क्या चयो साग। प्र०—भूख में साग की क्या जरूरत इस पर।

---

* समानार्थी पद—'भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमे'—फल लगने पर पेड़ झुक जाते हैं।—चाणक्य।

* **जैकी गली[1] बाजो, तैकी नली[2] गाजो।** [१ खूब खावे, २ मोटा होवे] प्र०—शरीर की पुष्टता भोजन पर निर्भर होती है इस पर।

जैकी छै डर, सो नी घर। प्र०—जहाँ कोई मालिक की गैरहाजिरी में मनमानी करे।

† **जैकी छै राणी सो लीगे ताणी[1], खंकल[2] रैगे[3] आँखा ताणी[4]।** [१ खींचकर, २ शोहदा, ३ रह गया, ४ आँखें ताके] प्र०—जो पराई वस्तु को पाकर चार दिन इतरावे और उस वस्तु के चले जाने पर खिसिया जाय उस पर।

जैकी नि छै खबर न सार, सो ऐगे डेली द्वार। प्र०—जहाँ कहीं कोई ऐसा जिसकी आवश्यकता हो अचानक आ जाय।

जैकी लाठी तैकी भैंस। प्र०—बलवान् या जबरदस्त की विजय पर।

जैकू हो ब्यौ[1] की रड़[2], सो बचों रोंचाबड़[3]। [१ ब्याह, २ गरज, ३ अच्छे छटे हुए साँड़] प्र०—गरजमंद को खर्च के लिये नहीं झींकना चाहिए इस पर।

जैको चुन्न तैको पुन्न। प्र०—पराए धन के दान करनेवाले पर।

जैको जांठो[1] तैको बांटो। [१ लट्ठ, डंडा] प्र०—बलवान् की सफलता पर।

जैको ठाकुर खड़ाखड़ो सूतो, तैको चाकर भौंरा[1] दीक सूतो। [१ चारों ओर घूमकर] प्र०—जहाँ मालिक से नौकर अधिक ज्यादती करे।

---

* समानार्थी पद–'वपुराख्याति भोजनम्'—शरीर से भोजन का अनुमान होता है।

† जेकरी जाय तेकरे पास, देखनहारा ताके आस।

जैको तालो[1] सो खालो। [१ भाग्य] प्र०—जहाँ एक की कमाई कोई और खावे।

जैको नल[1] प्यारो, तैको फल प्यारो। [१ डंठल] प्र०—जहाँ कोई माँ-बाप के साथ का प्रेम या बैर बच्चों के साथ भी दिखावे।

जैको नी पत[1], तैको क्या कर्न खत[2]। [१ विश्वास, २ लेखा] प्र०—बदनीयत वाले के इकरारनामा पर भी क्या विश्वास ? इस पर।

जैको पाप तैको बाप। प्र०—अपने किए का फल पापी को ही मिलेगा दूसरे को नहीं, इस पर।

जैको बाबू रिखन[1] खायो सो काला मुंडा[2] देखी डरो। [१ भालू ने, २ काली लकड़ी का खूँटा] प्र०—जहाँ बुरों का ठगा हुआ भलों से भी डरता हो।

जैको ब्यौ तैं धोराहीं ना ल्यो। प्र०—जहाँ प्रमुख वस्तु या व्यक्ति की कुछ कदर न हो और ही और मुखिया हों वहाँ।

जैको बूढ़ो तैको ऊड़ो। प्र०—घर में वृद्ध पुरुष की उपयोगिता पर।

जैको भत्ता खाणो, तैका गित्ता गाणो। प्र०—जहाँ कोई अनुचित होने पर भी अपने आश्रयदाता का पक्ष ले उस पर।

***जैको साही शंकर, तैको क्या करो भयंकर।** प्र०—जहाँ किसी निर्बल पर बलवान् की सहायता हो अथवा ईश्वर की देन पर।

† जैं गौं निजाणो तैकी बाट क्या पूछणी। प्र०—निष्प्रयोजन बात न करने के लिये।

---

* जाको राखे साइयाँ मारि न सकिहै कोय।
बाल न बाँका करि सके जो जग बैरी होय॥

† बिना प्रयोजन भूलिही ठढिये नाहीं बाट।
जानो ना जा नगर को ताकी पूछन बाट॥—वृंद॥

जौं चुली हैं को मनौणो तौं चुली गर गरजोड़ी[1] कन्यौणो[2]। [१ जोर से, २ खुलजाना] प्र०—खुशामद करने से मिहनत करना अच्छा इस पर।

जौं दरा[1] माछा निक.ल्दा तौंदरा औंर घोचदा। [१ छेद] प्र०—जिससे एक बार मिलता है उसको बार बार दिक करते हैं इस पर।

जौं द्यौ जगदीस, तौंकी क्या रीस। प्र०—दूसरे की संपत्ति पर डाह न करने के लिये।

*** जैन करे नेक्या चार, वेकू धक्काचार; जैन करे वार पार, तौंकू पथाचार। जैन गाये भाग्यानौलो, तौंनपाये साट्यू को थैलो, जैन गाये विस्नुपदी तौंकू कुछ न कती।** प्र०—जहाँ भलों का अपमान और बुरों का सन्मान हो।

† जैन सारे[1] सो कखी नि हारे। [१ सहा] प्र०—सहनशीलता की उपयोगिता पर।

जौ बासा, तेरी आसा। प्र०—उपकार करनेवाले की कृतज्ञता पर।

जौं बौको[1] बड़ो भरोसो स्या दिदा[2] दिदा बोल्द। [१ भाभी का, २ भाई] प्र०—जहाँ बड़े भरोसेवाला निरासा बतावे।

‡ जो करलो सो भरलो। प्र०—दंड दोषी को ही मिलेगा और को नहीं, इस पर।

---

* तुलसी या संसार में पाखंडी को मान।
सीधों को सीधा नहीं झूठों को पकवान ॥—तुलसी।

† सुर्ख होते हैं इन्साँ ठोकरें खाने के बाद।
रंग लाती है हिना पत्थर पै घिस जाने के बाद ॥—अकबर।
हजारों टाँकी खाकर महादेव होते हैं।

‡ कर्म प्रधान विश्व करि राखा। जो जस करिय सो तस फल चाखा ॥—[illegible]

जो करौ औरू कू टोणी,[1] तैंकू हो रोणी। [१ टोना] प्र०—दूसरे की बुराई करनेवाला जब स्वयं आफत में फँसे तब।

जो कंज्या[1] खाव वै कि गलि डाढ। व छाँछ को खार। प्र०—जहाँ बुरा काम करनेवाला डरता रहता हो।

जो खौ पनै की कुडली, सो द्यौ लोभागढ़ मुंडली। पुराने जमाने में जब गढ़वाल और कुमाऊँ के राजाओं के बीच सरहदी तकरार रहती थी तब लोभागढ़ में जो इन दोनों प्रांतों का सरहद्दी किला था, कुछ सिपाहियों का एक दस्ता गढ़वाल के राजा की तरफ से सीमा की रक्षा के लिये रखा जाता था। इन सिपाहियों को पनै की कुंडली, अर्थात् पनाई का सिरा जो गढ़वाल में सबसे बड़ा मैदान सेरा [नदी के किनारे की सींची जानेवाली जमीन] है, कमा खाने को दी जाती थी तब से यह कहावत गढ़वाल में प्रचलित है। अब तक भी पनाई में उन्हीं लोगों की औलाद कनुणी, मुसनी, भनोटी इत्यादि जाति के क्षत्रिय और ब्राह्मण बसते हैं जो उन दिनों लोभागढ़ में रहते थे। उनमें से कुछ लोग अब तक लोभागढ़ के आसपास के गाँवों में भी बसते हैं। प्र०—जहाँ कहीं किसी को कठिन काम के साथ ही अच्छे इनाम का लालच दिया जाता है।

जो खौ भैंसा को दूध तै अकल न बूध। प्र०—भैंस के दूध की निंदा पर।

*** जोगमां भोग कख छयो।** प्र०—बेजोड़ काम या जोग में भोग चाहनेवाले पर।

जो गीजो[1] पड़ी पादण, सोकिलै[2] जौ उठी हगण[3]। [१ आदी हो जावे, २ क्यों, ३ पाखाना करने] प्र०—आलसी के लिये।

---

* अनमिलती जो करत हो, ताही को उपहास।
जैसे जोगी जोग में करत भोग की आस॥ —वृंद।

जोगी जोगी लड़या, तुमड़ै तुमड़ा फूट्या। प्र०—नंगों की लड़ाई होने पर विशेष हानि नहीं होती, इस पर।

जोगी झटाक,[1] खन्ना[2] पटाक[3]। [१ लड़ना, २ राख में, ३ चोट मारना] प्र०—भयदायक को न छेड़ने के लिये।

जोगी भाग्यो हगणौ[1] बिटी। [१ टट्टी करते ही से] प्र०—जिसके पास कुछ नहीं उसके भागने में उलझन ही क्या? इस पर।

जोग्यूं का अर गुरौ[1] का घर कखछ्या। [१ साँप] प्र०—जोगियों का और साँप का घर कहाँ होता है? कहीं नहीं।

जो गौं करो सो गंवार करो। प्र०—साथियों का साथ देना ही पड़ता है चाहे वह काम निकम्मा ही क्यों न हो इस पर।

जो घड़ी बचो सो घड़थांसू[1] बचो। [१ बहुत समय तक] प्र०—सामने आई हुई विपत्ति के टल जाने पर कहा जाता है।

जो चढ्यो सो पड्यो। प्र०—किसी का ऐश्वर्य हमेशा नहीं रहता यह प्रकृति का अटल नियम है, इस पर।

जो डाढ्यो[1] डाढ्यो, बाकी यथ[2] गाड्यो[3]। [१ जल गया, २ इधर, ३ निकाल दिया], प्र०—बीती हुई बिगड़ी बात का पछतावा न कर आगे के लिये सावधान हो जाने के लिये।

जो दाँतू ते छूटिग्यो सो ओंठू से नि पकड़ेंद। प्र०—मौके पर चूकी हुई बात बिगड़ जाने पर नहीं सुधर सकती, इस पर।

जो नि औ गढ़द[1] सो क्या औ मढ़द[2]। [१ गढ़ते हुए, २ मढ़ते हुए] प्र०—बचपन की पड़ी हुई बुरी आदत जवानी और बुढ़ापे में नहीं छूट सकती इस पर।

जो निध्वौ अपड़ो मुखु, हैका क्या द्यौ सुख। प्र०—निठल्ले अर्थात् कुछ भी काम न करनेवाले पर।

जो नेड़[1]**, सो पेड़**[2]**।** [१ नजदीक, २ कुटुंब] प्र०—पड़ोसी की उपयोगिता पर।

जो पलड़ा भारी होंद सो झुकद। प्र०—संपत्ति पाकर नम्र होना अथवा इज्जतदार को झुकना पड़ता है इस पर।

जो बणियाँ से स्याणो सो बावलो। प्र०—बनिया किसी से भुलाया नहीं जा सकता इस पर।

जो बसिग्या खैर चौमासू[1] **स्यो बसिग्या।** [१ नदी किनारे के दो गाँवों के नाम] प्र०—अच्छा पद जिन्हें मिल गया, मिल गया आगे वालों को मिलना कठिन है।

जो बाली[1] **नि बुरक**[2] **स्या ठंडी**[3] **क्या बुरकली।** [१ बचपन, २ उछल-कूद करना, ३ उम्र ढलने पर] प्र०—"जो निश्रौ गढ़द" की तरह।

जो बिंदिग्या से मोती, जो रैग्या से काँच। प्र०—जो काम समय पर पूरा हो गया वही ठीक है, अधूरा काम कुछ नहीं के बराबर होता है, इस पर।

जो माई आई स्या माई खाई। प्र०—जो कमाई हो वह सबकी सब खर्च हो जाय, बचत कुछ भी न रहे, इस पर।

जो मैं द्यौ सो मेरो ठाकुर, जो मैं नि द्यौ सो कुत्ता को ठाकुर। प्र०—अपने ही मतलब से बात करनेवाले पर।

जोर थोड़ा गुस्सा भौत, आया मार खाण का लच्छण। प्र०—जहाँ कोई कमजोर गुस्से में आकर बलवान् से लड़े।

जौ नैपाल, साथ जौ कपाल[1]**।** [१ भाग्य] प्र०—भाग्यहीनता पर।

जंगल मां मंगल बस्ती मां कड़ाका। धनवान् को सभी जगह सुख होता है, धनहीन को कहीं भी सुख नहीं मिलता इस पर।

झख मारे झंगोरो[1] खाये। [१ एक प्रकार का गोल महीन चावल] प्र०—जो किसी काम को पहले आग्रह करने पर न करे, पीछे बिना किसी के कहे करे, उस पर।

झगड़ा झुट्टा कब्जा सच्चो। प्र०—कब्जे की उपयोगिता पर।

झगड़ा की तीन जड़, जमीन जोरू जर। प्र०—झगड़े की बुनियाद प्रायः इन तीनों (जमीन, स्त्री और धन) पर खड़ी होती है।

झगड़ा की जड़ हाँसी[1], रोग की जड़ खाँसी। [१ तिरस्कार की हँसी] प्र०—तिरस्कार की हँसी से प्रायः झगड़ा और खाँसी से रोग उत्पन्न होते हैं, इस पर।

झट्ट रोटी पट्ट दाल, खाई लीनी मारी फाल। प्र०—जल्दी करनेवाले पर। कठिन को आसान बताने पर भी।

झाड़खंड बएयूँ रहंद। प्र०—जादू-टोना करनेवाले पर।

झुट्टा झगड़ा सच्चा ब्यौ, कनु कनू की खूंदीन[1] मौ[2]। [१ खोते हैं, २ मवासा, घर] प्र०—झगड़ों और शादी में जो खर्च होता है उसकी बुराई पर।

झूट का पैर निहोंदा। प्र०—झूठ आखिर चल नहीं सकता इस पर।

झूट झूट ही छ, सच्च सच्च ही छ। प्र०—सच झूठ की तुलना पर।

झूट लाग्गी गंगा पार, जो निभ जौ दिन चार। प्र०—झूठ दूर देश में ही कुछ दिन ठहर सकती है।

झेमाड़ उलं गायां सुख छ। प्र०—किसी अनुपयोगी काम को पूरा करने के लिये।

टक्का त टकटका[1] नी त झकझका[2]। [१ सीधा खड़ा, खिला हुआ २ मुर्झाया हुआ] प्र०—पैसे की बलवत्ता पर।

टकाशी[1] जवाब दीदीने। [१ कोरा] प्र०—जहाँ कोई किसी की माँग को बिना किसी वजह बताए नाकबूल करे।

टका न पैसा, गौं गौं भैंसा। प्र०—फटफटबाज लफंगे के लिये।

टिप्पस नि जमदी। प्र०—जहाँ किसी को अपने वश में करने का प्रयत्न निष्फल जाय।

टुकड़ा तोड़ दीने। प्र०—निठुराई के साथ किसी की माँग ठुकरा देनेवाले पर।

टेढ़ी खीर होईं छ। प्र०—जहाँ हाँ या ना दोनों में से एक भी न कही जा सके, वहाँ।

ठग तमोटो चोर सुनार, खाओ कोली डाढो ल्वार। प्र०—तमोटा सुनार कोली और लुहार के स्वाभाविक गुणों पर।

ठट्ठा को मट्ठा। प्र०—जहाँ हँसी दिल्लगी होते होते झगड़ा बढ़ जाय।

ठाकुरू दगड़ी[1] क्यौ नि लगद त क्या न्यौ भी नि लगद। [१ साथ] प्र०—जहाँ बड़े और छोटे के झगड़े में न्याय छोटे के पक्ष में हो।

ठाकुरू की तेबारी भैर लाली लाल, भितर पुंड खाज का कुहाल। प्र०—जहाँ कोई सिर्फ बाहरी दिखावा करे, अंदरूनी हालत खराब हो।

ठुल्ला[1] गोरू लूण बुकावन[2] छोटा बाछरू थोवड़ो चाटन। [१ बड़े, २ चबाते हैं] प्र०—बड़े बड़े सब हजम कर लेते हैं, छोटों को कुछ भी नहीं मिलता।

ठुली पुजै पांची भोडा छोटी पुजै पांची भांडा। प्र०—जहाँ किसी काम को छोटे पैमाने में करने पर भी बड़े काम ही की तरह सामान जुटाना पड़े।

ठंठण गोपाल। प्र०—जहाँ कुछ न मिले।

ठंडो पाको मिट्ठो होश्रो। प्र०—किसी काम को सावधानी से धीरे धीरे करने की उपयोगिता पर।

डाली न बोंटी नौं क्वै बग्वान, फांट न पट्टा नौं क्वै पधान। प्र०—जहाँ किसी को झूठी पदवी से पुकारा जाता हो।

डिट्ठी की जोई[1], श्रर मुट्ठी को धन। [१ दृष्टि में की पत्नी] प्र०—पैसा गाँठ का और स्त्री साथ होने ही से अपनी होती है इस पर।

डुंडा[1] कू ही भेल, श्रर डुंडा कू ही बाघ। [१ लंगड़ा] प्र०—भाग्यहीन को विपत्ति पर विपत्ति आती रहती है इस पर।

डुंडा गोरू का सापना[1] बाछरू। [१ सीधे, जो लँगड़ा न हो] प्र०—जहाँ निठल्लों की संतान परिश्रमशील हो अथवा अंध लँगड़ों की सुडौल संतान हो।

डुम-जोगी न लेये जोग, फाटी लत्ता बाढ्यो रोग। प्र०—जहाँ छोटा बड़ों की नकल करके हानि उठावे।

डुमाणा की तौली, बिठाणा कब जौली। प्र०—जहाँ कोई अभागा संपत्ति पाकर जल्दी ही खो बैठे।

डूम दगड़ा गू गेड़ी। प्र०—बुरे साथ का बुरा असर।

डूम डुमाणा, बिठ[1] बिठाणा[2]। [१ द्विजाति २ गाँव में द्विजातियों के रहने का हिस्सा] प्र०—डूमबिठों के परस्पर मर्यादित व्यवहार पर।

डेढ़ टट्टू बागमां डेरो। प्र०—आडम्बर दिखानेवाले पर।

डेढ़ चौंल की खिचड़ी जुद्दी च पकणी। प्र०—जिसका किसी से मेल न हो उस पर।

डेढ़ सेर पिसणो[1], आधी रात उठणो। [१ पीसना] प्र०—जो छोटे से काम के लिये बड़ी तैयारी दिखावे उस पर।

डेल भी मिल सके पिशाव भी ह्वै सके। प्र०—जहाँ काम बिगड़ जाने पर सुधार का उपाय सूझे।

डोम खै नि जाणदो, काठीबाखरो पड़नि जाणदो। प्र०—डोमों की निरुद्यमिता पर।

डोम डाली खस्स खाती। प्र०—किसी बे जान पहिचान की निंदा पर।

डोम सणी जतनै मनावा ततनै कड़कड़ो। प्र०—जहाँ डोम काबू में न आवे।

डोमा सल्ली नि औंद छयो त बड़ो नुकसान होंद छयो। इसकी मूल कथा इस प्रकार है कि किसी जंगली गाँव में एक भैंस के बच्चे ने काठ की परिया (दही मथने का बर्तन) में सिर डाल दिया पर वह सिर को बाहर न निकाल सका। सारे गाँव के लोग जमा हो गये पर कोई उसके सिर को बाहर न निकाल सका तब डोमा नाम का एक सल्ली (कारीगर) बुलाया गया। उसने एकदम उस बछड़े का सिर कटवा दिया पर वह सिर फिर भी बाहर न निकल सका। तब उसने परिया को कटवाकर बछड़े का कटा हुआ सिर बाहर निकलवाया तब वे बेवकूफ लोग कहने लगे कि डोमा सल्ली न आता तो बड़ा नुकसान हो जाता। तब से यह मसल मशहूर हो गई। जहाँ कोई बेवकूफी का काम करने पर भी वाहवाही लूटता है वहाँ इस लोकोक्ति का प्रयोग होता है।

डोमौ[1], निसाब[2] अडमारा[3]। [१ डोम का, २ न्याय, इंसाफ ३ आड़ पर] प्र०—जहाँ गरीब के साथ अन्याय हो।

डोमौ, मन्नो अर विडको छँदो[1] कोई नी देखद। [१ किसी वस्तु की कमी न होना] प्र०—डोम के कष्ट और विठ की तंगी पर कहा जाता है।

ढगड्यांदी[1] ढुंगी खुट्टों नि धरनों। [१ हिलते हुए पत्थर पर] प्र०—खतरे की आशंकावाले काम पर हाथ न डालने के लिये।

ढाई हाथ काखड़ी नौ हाथ बीज। प्र०—जहाँ छोटी सी बात पर बड़ा बतंगड़ बनाया जाय।

ढाकरी बोद पूरो तोल, बणियाँ बोद हाट्टी ना बैठ। प्र०—जहाँ कोई किसी से कुछ माँगना चाहे पर देनेवाला बात भी न करने दे।

ढाकरयूं को कुकर औंदू दगड़ी औंद जाँदू दगड़ी जाँद। प्र०—जिसका कोई ठिकाना न हो उस पर।

ढाक का तीन पात। प्र०—जिस काम में सफलता न हो, उस पर।

ढीका गणनूछ। प्र०—जिसका कोई रोजगार न हो, मुश्किल से पेट पाल रहा हो उस पर।

ढुंगा सूड़े को हाथ होयूं छ। प्र०—जो आदमी किसी के दबाव के कारण सच न कह सके, उस पर।

ढीकू[1] माँगै[2], दौड़[3] च होणी। [१ ढेला, २ में] प्र०—जिसकी भीतरी आर्थिक अवस्था तंग होने पर भी बाहरी खर्च बढ़ता ही चला जाय।

ढेबरी की ढेबरी मरी गू को गू खवैगे। प्र०—जहाँ एक नुकसान के साथ और भी कई नुकसान हो जायँ।

ढोल की पोल खुलीगे। प्र०—जहाँ किसी की गुप्त मंत्रणा प्रकट हो जाय।

ढोल दमौं दगड़ी कमच्या[1] की रुइंचुइं[2]। [१ मिरासी, २ सारंगी का सुर] प्र०—जहाँ बड़े बड़ों के साथ छोटे की कोई बात न पूछे।

तकदीर का अगाड़ी तदबीर क्या कर सकदी। प्र०—भाग्य की अटलता पर।

तनी निछँदा[1] घर, तनी चौमासी जर[2]। [१ तंगदस्त, २ बरसाती बुखार] प्र०—जहाँ गरीबी और बीमारी दोनों साथ हों अथवा कई मुसीबतें एक साथ आ जायँ।

तनी वलि मांडा[1], तनी पलि मांडा। [१ धर्मशाला] प्र०—जहाँ दोनों एक समान कष्टदायी हों।

तलप न तनखा छिंति सिंथ्यो, हवल्दार। प्र०—बनावटी पदवीवाले को।

तलवार छै पर बनगढ़ रैगे। प्र०—जो उपाय तो बतावे पर करने के समय बहाना करके टाल देवे उस पर।

तवा की तेरी, हाथ की मेरी। प्र०—जो जहाँ तहाँ से अपना ही स्वार्थ साधन करे, किसी नियम का पाबंद न हो, उस पर।

तवा पलेलो तू लीगे दुँगला पकौणा मैंकु, करिगे। प्र०—जहाँ कोई माँगनेवाला देनेवाले को नंगा करके ले जाय।

ताता रोष मार नि करनी। प्र०—गुस्से में तत्काल कोई काम न करने के लिये।

ताता दूध होयूँ छ। प्र०—जहाँ कोई काम न तो करते बने और न किए बिना रहा जाय। धर्म सनेह उभय मति घेरी, भइ गति साँप छछुंदर केरी॥ तुलसी।

तामा की मेख, करामात देख। प्र०—अचूक प्रयोग पर।

ताल चूक्यो औसर बीत्यो। प्र०—समय पर चूक जाने से काम बिगड़ने पर।

तालों पः[1] देणो अर चोरी पः[1] लगौणी। [१ नकारात्मक] प्र०—किसी को बुरा काम करने का मौका ही न देना चाहिये इस पर।

तितरा का मुख लछमी। प्र०—जहाँ किसी अयोग्य को अधिकार प्राप्त हो जाय।

तितरी फँसी चाखुड़ी फँसी तू क्यूँ फँसे कागा, झटपट झाटपट हमुन भी देखे हम भी फँसिग्या बाबा। प्र०—जहाँ लालच में आकर चालाकों के बीच कोई सीधा-सादा भी फँस जाय।

तिमला का तिमला खतेया[1], नांगे का नांगी देखेया। [१ गिर जाना, बिखर जाना] इसकी मूल कहानी यह है कि एक स्त्री तिमले के पेड़ में चढ़ी हुई तिमले (अंजीर) के फल निकालकर अपनी पहनी हुई धोती के पल्ले को उलटकर उस पर रखती जाती थी। उधर से किसी आदमी को आता देखकर उसने शरमाकर झट से उलटा हुआ धोती का पल्ला छोड़ दिया जिससे सब तिमले बिखरकर गिर पड़े। वह आदमी कुछ मसखरे स्वभाव का था। फौरन कह बैठा "तिमला का तिमला खतेया इत्यादि" जिसका आशय यह है कि नंगी भी दिखाई दो और तिमले भी गिर गये। तब से यह कहावत प्रचलित हो गई। जहाँ कहीं गुप्त बात भी प्रकट हो जाय और काम भी न बने वहाँ इसका प्रयोग होता है।

तीन ब्यौ वाला का बड़ा भाग, क्वीलिजौन डांडी एक लिजौ आग। प्र०—एक से अधिक शादीवालों पर व्यंग्य।

तीनमां न तेरामां। यह कहावत इस तरह चल पड़ी कि रिश्तेदारी में दो तरह के सूतक होते हैं। जो दूर के रिश्तेदार होते हैं, किसी के मरने पर तीन दिन का सूतक मानते हैं और जो

नजदीक के रिश्तेदार होते हैं वे तेरह दिन का सूतक मानते हैं। जो इन दोनों प्रकार के सूतकों को नहीं मानते उनकी गिनती रिश्तेदारों में नहीं होती। इस कहावत का प्रयोग अब रिश्तेदारी पर नहीं होता बल्कि यह उस मौके पर कही जाती है जहाँ कोई शख्श बिना बुलाए बीच में आकर राय देने लगे पर उसकी राय या बात का कुछ वजन या असर न हो।

तुखम तासीर सोबत असर। प्र०—जहाँ कहीं कम-असल संतान अथवा बुरी संगत से नुकसान उठाना पड़े।

तु ठगणी को ठग मि जाती क्वै ठग। प्र०—जहाँ कोई किसी के ठगने में न आवे।

तुमड़ी को घ्यू अर बण्या को ज्यू—कंजूसी पर।

तुरत दान महा कल्याण। प्र०—माँगनेवाले की ओर से जल्दी देने के लिये।

***तू राणी मैं राणी, को फूटो चीणा-दाणी?** प्र०—जहाँ सब बड़ा बनना चाहें, काम करने को कोई भी तैयार न हो वहाँ।

तूली[1] मां न कैणी[2] मा। [१ पहाड़ी तराजू, २ भूमि की नाप] प्र०—जो किसी बात पर भी रजामंद न हो अथवा जो कभी एक ओर की बात कहे कभी दूसरी ओर की।

तेरा जी तेरी हाथी। प्र०—जहाँ कोई काम कतई किसी के भरोसे छोड़कर कहा जाता है कि जैसा तेरे ज्ञान में आवे वैसा करना, उस पर।

---

* सर्वे यत्र प्रणेतारः सर्वे पंडितमानिनः।
सर्वेमहत्त्व मिच्छन्ति तच्छदं ह्याशु नश्यति॥

अर्थात् जहाँ सब के सब मुखिया, पंडित, मान्य और महत्त्व के इच्छुक हों वह समाज शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

तेरा गौं जीं ऐभौंत जी बाल्दी। प्र०—जहाँ परवस पड़ने पर सब कुछ सहना पड़े।

तेरी मेरीं कब बिगड़लीं जब लेण देण होलीं। प्र०—जहाँ कहीं लेन-देन होने पर मित्रता में बाधा पड़ जाती है।

तेरी सेवा[1] मेरा कथैं[2]। [१ नमस्कार, २ किस तरफ] प्र०—जहाँ कोई दूसरे के किए हुए उपकार या सहायता को न माने।

तेरो घट पिस्यो नि पिस्यो, मेरो भग्वाड़ी[1] चैंद। [१ पिसाई] प्र०—जो बिना काम किए ही मजूरी माँगे उस पर।

तेरो ढांकरी आयां ना आयां, मेरो लोण सेर आयूँ चैंद। प्र०—जहाँ कोई दूसरे के दुख की कुछ परवाह न करे केवल अपने मतलब की बात करता जाय।

तेरो बाबू डांडा कौड़ी निबूतदो त मेरा बाबू सणी रिख नि खाँदो। प्र०—जहाँ कोई बिना बुनियाद झगड़ा खड़ा करने को बनावटी बात बनाकर दूसरे के सिर दोष मढ़े।

तेरो हल जी लगौण कि तेरा भट्टजी बुकौन। इसकी मूल कहानी यह है कि एक स्त्री अपने हलिया को रोटियों के बदले भट्ट भूँजकर ले गई तब उस हलिया ने यह कहावत कही तब से इसका प्रयोग ऐसे मौके पर किया जाता है जहाँ किसी आदमी के जिम्मे ऐसे दो काम करने को सौंपे जावें जिनमें एक ही हो सके दूसरे को वक्त न रहे।

तेल थोड़ा चिबड़ाट[1] भौत। [१ शब्द] प्र०—जहाँ छोटे से काम के लिये बड़ा हल्ला होता हो।

तैकी जुत्ती तैकै सिर। प्र०—जहाँ कोई किसी को नुकसान पहुँचाने के लिये उसी की किसी वस्तु से सहायता ले।

तैं ही पातली खाणो तैं ही पातलीं छेंड[1] करनो। [१ छेद] प्र० अकृतज्ञ और कृतघ्न के लिये।

त्वैकु न मैंकू भ्वींचल रास। प्र० जो अपना काम बिगड़ता देखकर दूसरे का भी काम बिगाड़ दे उस पर।

'त्वैकू चोलीं टोपली स्यूँला',[1] 'ना मैं टसटसै[2] सैंलो'। [१ सिलेंगे, २ जाड़ा ही सहूँगा] प्र०—जो आवश्यकता होते हुए भी किसी की दी हुई सहायता को कबूल न करे, उस पर।

त्वै मेरा सैं जो तू मैं भलो ना मानी। प्र०—जो किसी को प्रेम से नहीं पर दबाव डालकर मित्र बनाना चाहे उस पर।

तोता चसम। प्र०—कपटी मित्र के लिये।

तोपथाल की तोप ताप चौंड्थाल को राज। प्र०—जहाँ कोई एक दाँव-पेच ही के सोच-विचार में रह जाय इस बीच दूसरा बाजी मार ले, वहाँ। इसकी मूल कहानी यह है कि पिछले जमाने में जब गढ़वाल में छोटे छोटे गढ़ों के अधिपति थे वे एक दूसरे को पराजित करने की घात में लगे रहते थे। ऐसी ही प्रतिद्वंद्विता तोपथाल और चौंड्याल नाम के दो गढ़ाधिपतियों में चल रही थी। तोपवाले चौंडवालों पर चढ़ाई करने का अवसर ढूँढ़ रहे थे। इस बीच चौंडवालों ने ही उनके गढ़ पर कब्जा कर लिया। यही तोपवालों का गढ़ बाद को चाँदपुर गढ़ कहलाया जो हमारे गढ़वाल-नरेशों की पुरानी राजधानी थी। यह कहावत हमारे गढ़वाल-राजवंश की प्रथम विजय की स्मृति में अब तक प्रचलित है।

थप्पड़ को मारयूँ हेरो उबो, कौल को मारयूँ हेरो उंदो। प्र०—जो उपकार से दबा हुआ हो, उस पर।

थाती सूनी बिरती बांजा, करखछै। प्र०—जहाँ प्राचीन कृति का एकदम लोप होना असंभव हो वहाँ।

थूक्यूं थूक चाटणो। प्र०—जो दी हुई वस्तु को वापिस माँगे अथवा फाके (अहसान रखकर बखान करे) उस पर।

थोड़ा खाणो बनारसी रहणो। जो थोड़ा खर्च करे पर चटकीला रहे, उस पर।

थोड़ा दूध का बराबर। प्र०—बनावटी प्यार दिखाने का व्यंग्य।

थौली सींक ऐजा। प्र०—किसी की माँग को अस्वीकार करने का व्यंग्य।

दगड़ी छोड़िक लगड़ी नि खाणी। लाभ के लिये साथ छोड़ने पर।

दमड़ी को सौदा बजार खलल। प्र०—छोटे से काम को बढ़ाकर दिखानेवाले पर।

दया को मनखो अर मया को नाज। प्र०—दया और मया (खेतों को निरानेवाले औजार) की उपयोगिता पर।

दाई से पेट नि छिपायेंद। प्र०—जो कोई ऐसे जानकार मनुष्य से जो सब गुप्त भेद जानता हो बात छिपाना चाहे।

दाई पिड़ा कि स्वीली[1] पिड़ा। [१ प्रसव होनेवाली स्त्री] प्र०—जहाँ गरजमंद बेफिक्र रहे, वहाँ।

दाड़म्या दाणी कपाल उंद ओल[1]। [१ छेद] प्र०—जो आप ही अपने लिये विपत्ति पैदा करे उस पर।

दांत तोडीक दंळणा। प्र०—जहाँ दूसरे के काम के लिये आप बड़ी भारी हानि उठानी पड़े।

दाता से सोम भलो जो तुर्त द्यौ जवाब। प्र०—जहाँ कोई किसी कार्य को बहुत अटकाए रखे वहाँ।

दाँतू का अगाड़ी जीभ। प्र०—किसी बात की राय देने में बड़ी उम्र या बड़े पदवाले के आदर के लिये छोटों की ओर से।

दान बित्त समान। प्र०—दान यथाशक्ति दिए जाने के लिये।

दाना की अढ़ती अर औल्यूं का सवाद पिछनै औंद प्र०—दाने की शिक्षा की उपयोगिता में।

दानो दुस्मन नादान दोस्त से भलो। प्र०—नादान दोस्त की मित्रता से नुकसान उठानेवाले पर।

दाम करो काम, बीबी करो सलाम। प्र०—पैसे की उपयोगिता पर।

दाल़ निगल़दी। प्र०—जब किसी से प्रयत्न करने पर भी मेल न होवे।

दाल़ भात मां मूसलचंद[१]। [१ चूहे की बीट] जहाँ कोई किसी बने-बनाए काम में बिगाड़ कर दे।

दाल़ मां काल़ोछ। प्र०—जहाँ किसी बात में कुछ धोखा होने का संदेह हो।

दाल़ लबेटी[१] भात भात लबेटी दाल। [१ लिपटी हुई] प्र०—जहाँ किसी के साथ पुराना और दुहरा तिहरा संबंध हो।

दिन चल जांदा बात रै जांदी। प्र०—जहाँ किसी ने कोई बुरा बर्ताव किया हो वह जन्मपर्यंत नहीं भुलाया जावे, इस पर।

दिल्ली का दिलवाला, मुख का चोपडा पेट का खाली। प्र०—जो मीठी मीठो बात करे पर हकीकी काम पड़ने पर कुछ न करे उस पर।

दिट्ठा[१] की ज्वै[२], अर मुट्टी को धन। [१ नजर-सामने दृष्टि, २ स्त्री] प्र०—स्त्री और धन पास होने ही से अपने होते हैं इस पर।

*दिवासूड़े अँध्यारो। प्र०—जहाँ बड़ों से बड़ो भूल अथवा अन्याय हो।

† दीदी मरी भेना[1] कौंको। [१ बहनोई] प्र०—किसी से संबंध टूट जाने पर अथवा किसी मतलबी का मतलब सध जाने पर।

दीनै इंवाली, बिंवाली, रातै उजालावाली। प्र०—जो काम को ठीक समय पर तो न करे पीछे फुरती दिखावे उस पर।

द्वी राजी तीसरो पाजी। प्र०—जो दोनों पक्षों में मेल हो जाने के बाद मेल कराने को पंच बनना चाहे, उस पर।

द्वी हाथू सगून। प्र०—जहाँ किसी को दोनों ओर से लाभ हो।

दुख काटिक सुख, सुख का पिछाड़ि दुख। प्र०—दुखी को धीरज बाँधने के लिये।

दुखदा ठेस, अडिठा भेंट। प्र०—जहाँ दुःख पर दुःख मिले।

दुखी कू बैद प्यारो। प्र०—जहाँ किसी को मुसीबत में कोई थोड़ा सा भी सहारा दे।

दुबली की गौड़ी को बड़ो ऐणों। दुर्बल की गाय का बड़ा यत्न।

दूध को दूध पाणी को पाणी। प्र०—अच्छे न्याय होने पर।

‡ दूध को जल्यूं छाँछ भी फूकीक पेंद। प्र०—जहाँ कोई किसी विश्वास योग्य का भी विश्वास न करे।

---

* आप कहै नाहिन करै औरन को सिख देय।
दीप उजेरो करत है तरे अँधेरो होय ॥ —वृंद।

† घी मरी जमाईं चोर। टूट गई डाली उड़ गयो मोर।

‡ पिशुन छल्यो नर सुजन सों करत बिसास न चूकि।
जैसे दाध्यो दूध को पीवत छाँछहि फूँकि ॥

दूध फाट्यो अर दिल फाट्यो। प्र०—दूध और दिल जब फट जाते हैं तो फिर नहीं मिलते इस पर।

* **दुधाल् गोरू को लात भड़ाक**[1]। [१ चोट] प्र०—उपकार करनेवाले की बुरी बातें सहनी ही पड़ती हैं, इस पर।

दुबला की स्वैण सबकी बौ। प्र०—दुर्बल को सब दबाते हैं इस पर।

दुबला को पाथो अप्रवाण। [१ अप्रमाण] प्र०—जहाँ किसी गरीब की प्रामाणिक बात न सुनी जाय।

दूरक्या अणसाला[1] **ते नजीक की प.ल्यूण**[2] **भली।** [१ लुहारखाना, २ धार तेज करने का पत्थर] प्र०—जहाँ अच्छी वस्तु के प्राप्त करने में कठिनता पड़े और निकृष्ट वस्तु सहज में मिल जाय।

देख्यूँ मनखी क्या देखण, ताप्यूँ घाम क्या तापण। प्र०—जिससे कोई आशा न हो उससे याचना न करने के लिये।

देणी तेमासी[1] **लेणी उदासी।** [१ गढ़वाल राज्य का एक चाँदी का पुराना सिक्का जो तोल में तीन मासा भर होता है] प्र०—जहाँ पैसा खर्च करके भी बुरी वस्तु मिले।

देवता जाणो मन, ठाकुर जाणो धन। प्र०—देवता और ठाकुर से कपट-व्यवहार न करने के लिये।

देवता वासना[1] **काही भोगी हैंदा।** [१ सुगंध] प्र०—देवता भाव पर ही प्रसन्न होते हैं चढ़ावा इत्यादि पर नहीं, इस पर।

देवता सेवता अपणा घरू, थेगला[1] **लाणा नरू**[2] **का घरू।** [१ पैवंद, २ मनुष्यों के] प्र०—जहाँ कोई थोड़े दिन

---

* हींसालु की वाण वड़ी रिसालू, नजीक जैवेर उधेड़ मान्नी।
ई वात को कोइ जनि गटो माना, दुधाल की लात सैणी पडंछ।
गुमानी कवि कूर्माचली

का अधिकार पाकर सब से दुश्मनी कर बैठे, अधिकार छूट जाने पर उन दुश्मनों से तंग किया जावे या कर्जदार हो जाने पर साहूकारों से तंग किया जावे।

देवी नान्नी छल् बड़ो। [१ छोटी, २ भूत लगना] प्र०—जहाँ कोई छोटी सी वस्तु बड़ी करामात दिखावे, वहाँ।

देस भेष जुदा जुदा, रीत भाँत एक्कू। प्र०—जब भिन्न भिन्न मुल्कों के निवासियों में कुछ कुछ बातों में एकता दीखे।

देसा चाल, कुला व्यवहार। प्र०—देश और कुल की मर्यादा न छोड़ने के लिये।

देस्सू देस्सू का आला, भाँति भाँति बुलाला। प्र०—जब किसी काम में भिन्न भिन्न लोगों की भिन्न भिन्न सम्मतियाँ होवें।

दैब की मार खबर न सार। प्र०—जब कभी कोई दुर्घटना अचानक हो पड़े।

दैब न मिलाई जोड़ी, एक अंधो एक कोढ़ी। प्र०—जहाँ कहीं ऐसे दो का मेल हो जाय जिनमें कुछ न कुछ ऐब हो।

दोण नि सको, बीस पथा सको। प्र०—जहाँ कोई सुगम काम को करने में असमर्थता बतलावे और कठिन काम करने को तैयार हो जाय।

दोण की दोतेरी पाथा को छसेरी। प्र०—जो कोई अपनी बात को बढ़ाकर कहे उस पर।

दोपुरा की भुड्मुड़ीं। प्र०—जहाँ कोई लाभ होने के बदले पूँजी में से भी खर्च कर दे।

दौ न दस्तूर, छिंति मिंत्यौ, थोकदार। प्र०—बनावटी पदवीवाले पर।

द्यौ बख्यँ बटोई जाणो। प्र०—जिस बात की साखी ढूँढ़नी न पड़े ऐसी स्वयंसिद्ध बात के लिये।

*** धन जौ, मान रौ।** प्र०—जहाँ मान के लिये अथवा जीत के लिये धन के व्यय करने में कसर न की जाय।

धन सांजीक[1] रज्जा 'भाग, तन सांजीक जूंरा'[2] भाग। [१ जमा करके, २ यमराज, काल] प्र०—जरूरत से ज्यादा धन कमानेवाले पर।

धनि मेरी बूटी, कख लगी कख फूटी। प्र०—जहाँ कोई किसी काम को करानेवाले की इच्छा के विरुद्ध करे अथवा कोई प्रयोग या प्रयत्न वांछित फल न दें।

धरी धराई, बस्त पराई। प्र०—जो धन कमाकर रखे खर्च न करे और उसे भोगने न पाए, उस पर।

धाणी[1] को नौ,[2] सरीलौ,[3] थौ। [१ काम, २ नाम, ३ शरीर का विश्राम] प्र०—जहाँ मिहनत बहुत पड़े पर काम कुछ दिखाई न दे।

ध्वै ध्वै क गोरी घुसेघुसेक सोरी[1]। [१ सजाति] प्र०—जहाँ कोई बनावटी बात बनाकर बड़ाई हासिल करना चाहे।

धोण द्वी धोया, धैण[1] द्वी होया। [१ प्रसूति काल] प्र०—ढली हुई जवानी पर अथवा दो बार प्रसूति हो जाने से स्त्री का यौवन नहीं रहता, इस पर।

धोत्यूं वाला कमौन टोपथूँ वाला समौन। प्र०—धोती पहननेवाले (हिंदुस्तानी) जो धन कमाते हैं उसे टोपवाले (अँगरेज) लोग ले जाते हैं, इस पर।

धोबी को कुत्ता घर को न घाट को। प्र०—जिसके रहने का कोई ठिकाना न हो अथवा जो दोनों ओर मिला रहे, उस पर। दे० "ढाकरियूँ को कुकूर"।

---

* मानं हि महतां धनम्। —चाणक्य।

धोबी को मड़ो[1], कुम्हार की सत्ती[2]। [१ मुर्दा, २ सती] प्र०—जहाँ कोई किसी ऐसे काम में खर्च करे या लगा रहे जिससे उसका कुछ भी संबंध न हो।

धौ ल्याणू[1] बासमती, अर कखरया ल्यूँ[2] अकल काब छै?। [१ धौला की झाड़ी, २ बगल] प्र०—ऐसी जगह से आशा करना जहाँ से कुछ भी मिलना संभव न हो, इस पर।

नओं जोसी अर पुराणों बैद। प्र०—नए ज्योतिषी और पुराने वैद्य की उपयोगिता पर।

*** नकटी देबी को गांडो[1] पुजारी।** [१ बढ़े गले वाला] प्र०—जहाँ ऐसे लोगों में मित्रता या मेल हो जिनमें कुछ ऐब हों।

नगर का बैख[1] ठाकुरी ठाकुर। [१ मर्द, पुरुष] इस कहावत का मूल नगर नाम के एक गाँव से है जहाँ असवाल जाति के लोग रहते हैं। असवालों को ठाकुर पदवी गढ़वाल में बहुत पुराने जमाने से है। जहाँ कहीं सब बड़े आदमी बनना चाहें वहाँ इसका प्रयोग होता है।

न त ह्वै खील कैाणी अर न त ह्वै मंडल[1] कि भीख। [१ गाँव] प्र०—जहाँ कहीं लाभ की आशा से एक काम के बदले दो काम उठाए जायँ पर दोनों में से लाभ एक में भी न हो।

नदी नाव संजोग। प्र०—विरक्त लोग कुटुंबियों के लिये अथवा किसी के कुटुंबी की मृत्यु पर आश्वासन देते हुए।

नन्नी[1] आँख्यून ठुलो[2] कैायिग[3]। [१ छोटी, २ बड़ा, ३ तमाशा] प्र०—जहाँ कोई बलवान् निर्बल पर ज्यादती करता है तो निर्बल उसका बदला लेना ईश्वर पर छोड़ते हुए कहता है।

---

† यादृशी शीतला देवी तादृशो वाहनः खरः। —चाणक्य।

न नौ मण तेल ह्वे न राधा नाचो। प्र०—जहाँ कोई किसी काम को करने के लिये ऐसी शर्त या अड़ंगा लगावे जिसका होना असंभव हो।

नवा बाणी मुखे मुखे। प्र०—देखो "देशू देशू का औला" इत्यादि।

न बाळरू का पोटगा[1] न गोरू का टोटगा[2]। [१ पेट, २ थन] प्र०—जहाँ कहीं कोई वस्तु कितने ही और कामों में खर्च न करके बड़े प्रयत्न से किसी खास काम के लिये बचाई रखी जाय पर वह बिना उस काम के हुए बीच ही में खर्च हो जाय।

न रयो अणोठा,[1] न गयो परोठा[2]। [१ थन, २ ढेंकी] प्र०—ऊपर के मुवाफिक।

नवां दौ[1] पुराणा खिरता[2]। [१ दाँव-पेंच, २ दुश्मनी, क्रोध] प्र०—जहाँ कोई किसी के साथ दोस्ताने का ढंग रचकर किसी पुरानी दुश्मनी का बदला ले, वहाँ।

नवां पात लगोन पुराणा पात झड़ोन। प्र०—बूढ़ों के काम छोड़ने और जवानों के काम सम्हालने पर।

ना आइ पौणा आरू फूल्द अर ना आइ आरु पाक्द। प्र०—आरू (आड़ू) के फूलने (फागुन) और आरू के पकने (सावन) के महीनों में प्राय: किसानों के घर अन्न की तंगी रहती है इससे उन दिनों वे चाहते हैं कि पाहुने न आवें।

नाई की बरात मां ठाकुरी ठाकुर। प्र०—जहाँ सब बड़े बनना चाहें। दे० "तू राणी मैं राणी" इत्यादि।

नाक दम होईं च। प्र०—जहाँ काम करते करते थकान आ जाय।

---

* लीडरों की धूम है पर फॉलवर कोई नहीं।
सब तो जर्नल हैं यहाँ आखिर सिपाही कौन है॥

नाक मां हाथ धरयूं छ। प्र०—जिसने लाज शर्म छोड़ दी हो, उस पर।

ना की कुछ दवाई नी च। प्र०—ना करनेवाले पर।

नाकै, नथुली अर खाणी, थकुली। प्र०—जिसकी सारी संपत्ति बिक जाय, उस पर।

नागपुर लगुलो, धनपुर तुमड़ो।

नांगी गात्ती उघाड़ी छात्ती। प्र०—दिलेरी से लड़ने को ललकारनेवाले पर।

नांगी ह्वैक नाची नी सात पांचुन देखी नी। प्र०—जहाँ किसी की छिपी हुई बुरी बातें प्रकट हो जायँ।

नांग्या' नांगी देखेया तिमला' तिमला खतेया। प्र०—दे० "तिमला"।

नाचण जाणो अर घुंगटो गाड़णो। प्र०—जहाँ कोई किसी न करने लायक काम को इरादे से करे साथ ही शरमावे भी।

नाचदारा की पैर अर गांदारा की गली। प्र०—जो किसी काम को करने में अति प्रवीण होता है वह उस काम के आरंभ में ही पहचाना जाता है, इस पर।

नाचदी खेलदी मुखै पर औंदी। प्र०—जहाँ कोई गुप्त बात जल्दी ही खुलनेवाली हो उस पर अथवा जहाँ कोई किसी बात को जानने की जल्दी करे उस पर।

नाच नि जाणयौ आंगण बांगो। दे० "खैनिजाण्यो" इत्यादि।

नादान दोस्त ते दानो दुश्मन भलो। दे० "दाबो दोश्त" इत्यादि।

नान्नी मरगे। प्र०—जो कुछ जवाब न दे सके, उस पर।

नान्नी मरी, नातो टूट्यो। प्र०—किसी से संबंध टूट जाने पर।

नामी चोर पकड़्या जौ, नामी सौ कमै खौ। प्र०—चोर और साहु की नामवरी पर।

ना लगा माच्छो गड्याल् की बाणी, भतग-भुतग तुमन भी खाणी। प्र०—जहाँ पर कोई सीधा-सादा किसी चालाक का अनुकरण करके हानि उठावे।

नि खांदी ब्वारी का करकरा स्वाल। प्र०—जहाँ कोई अपने मालिक या बड़ों से कोरे जवाब देवे।

निखांदी ब्वारी छै सेरै, खै। प्र०—बड़ा अहार-वाले पर।

निखांदी ब्वारि सासु सुसुरु खांद। प्र०—ऊपर के ही अनुकूल।

नि देणु जौ मनखी अर निधोणु जौ लत्ता। प्र०—सूम और मैले कपड़ेवाले पर कहा जाता है।

निदेण्या भांडा आखणा[1] नौं। [१ खाली नहीं] प्र०—जहाँ कोई किसी काम को न करने के लिये बनावटी बहाना बनावे।

निन्नाणवे का फेर मां पड़िगे। प्र०—जो किसी काम को करने के सुगम तरीके को छोड़कर कठिन कठिन तरीकों पर चलता हुआ घबरा जाय।

निपैंदि को पायो, रात्ति उठिक खायो।

निबड़दा[1] नाज का भलभला पौणा, रात ब्यांदी[2] दौं का भलभला स्वैणा[3]। [१ खतम होनेवाले, २ रात खुलने के समय, ३ स्वप्न] प्र०—जहाँ किसी वस्तु के अंत होने पर अधिक आवश्यकता हो।

निर्भागौ, लीगे बाघ भग्वानौं, पड़े जाग। प्र०—जहाँ एक के नुकसान होने पर दूसरा खबरदार हो जाय।

निसनखी करो कुसनखी की सेवा। प्र०—जिसके पास आदमी नहीं उसे कोई बुरा आदमी भी मिल जाय तो उसी को खुशामद से रखता है, ऐसे मौके पर।

निर्गंड मोटा नफा न टोटा। प्र०—ऐसे उद्योग-रहित मनुष्य पर जिसे पेट भरने के सिवाय और कुछ चिंता नहीं।

निरक्षर भट्टाचारज। प्र०—अपढ़ के लिये।

निवकू भारी का काखा[1] कटगड़ा[2]। [१ जिस रस्सी से बोझ कंधों पर थमा रहता है। २ कड़ा, सख्त] प्र०—जहाँ कोई किसी काम को न करने के लिये प्रत्यक्ष ना न कहकर कोई और बहाना बनावे, वहाँ।

निशुत्ती (द्वी) फूफू भतीज्यूँ कू दैजौ[1]। [१ दहेज] प्र०—जो केवल इस विचार से कि संपत्ति जमा है उसे अयथार्थ अथवा अनुचित रीति से खर्च करे।

निहोंदी बुढ़ली[1] दायली[2] की कुटली[3]। [१ बुढ़िया, २ हँसिया, ३ कुदाल] प्र०—जहाँ किसी छोटी चीज को बढ़ाकर बड़ा न बनाया जा सके।

नीति[1] जैक थीती[2]। [१ गढ़वाल की उत्तरी सीमा का गाँव नीति जो तिब्बत और गढ़वाल की तिजारत की मंडी है। २ संतोष, स्थिति] प्र०—जहाँ कोई किसी काम के करने में इतना बड़ा उद्योग कर बैठे जिससे बढ़कर आगे कुछ न हो सके।

नीती लगे दूणी, दुबलो रैगे सूणी। प्र०—जहाँ कोई वस्तु ऐसे प्रयत्न से मिल सके जिसको करना कठिन हो, उस पर।

नील को टीको, कोढ़ को दाग। प्र०—जिसके चरित्र में ऐसा धब्बा लग जाय जिसको कोई न मिटा सके, उस पर।

नेकी नौ कोस, बदी सौ कोस। प्र०—बद नाम बहुत जल्दी फैलता है, इस पर।

नेगी मान्नो पर नेगचारो नि मान्नो। प्र०—किसी का उचित हक्क न मारने के लिये।

नैबेद का जुंदाल[1] ते देबी अफुई पेट पाल्दी, लोग चांदा परचो[2]। [१ चावल, २ प्रत्यक्ष फल] प्र०—जो स्वयं अपनी ही गुजर कठिनाई से करता हो उससे औरों की क्या परवरिश होगी, इस पर।

नौड़ी भौ का नौ बांटा। प्र०—जहाँ एक काम को करने के कई तरीके हों।

नौं नकद तेरह उधार। प्र०—उधार और नकद की बुराई, भलाई पर।

नौ नंग[1] आटा मा नी। [१ नौ नाखून] प्र०—जो किसान होने पर भी कुछ भी खेती का काम न करे।

नौं पुब्यां दस चुली। प्र०—खानपान में अधिक परहेज रखनेवालों पर तथा किसी काम के करने में भिन्न तरीकों को काम में लाने पर।

नौला गोरू का नौं पूला पराल। प्र०—नए की उचित से अधिक खातिर पर।

नंगा चोरू दगड़ी स्यून[1]। [१ सोवें] प्र०—जिसकी इज्जत नहीं उसे कोई डर नहीं; जहाँ चाहे जाय या रहे बैठे इस पर।

नंगै को नौंतेरी। [१ नाखून] प्र०—जो छोटी पूँजी से बहुत बढ़ा देवे उस पर।

नंगो क्या ध्वे क्या निचोड़ो। प्र०—जिसके पास कुछ नहीं वह क्या दे इस पर।

पग चलो पंथ कटो। प्र०—काम थोड़ा करने से भी पूरा हो जाता है इस पर।

पगड़ी के फुर्का। प्र०—इज्जत के निशान को या व्यंग पर भी।

पटासुल्क्यू ंन[1] बज्जर नि टल़दा। [१ सीटी बजाने से] प्र०—बड़ी आफत छोटे उपाय से नहीं टलती उसके लिये बड़ा ही उपाय चाहिए, इस पर।

पड़्यो नी त अकरो[1] कीको[2]। [१ मँहगा, २ किस बात का] प्र०—उधार ले जाकर दाम न देनेवाले पर।

पढ़ायो गुणायो जाट, सोल़ दूणी आठ। प्र०—जिस पर शिक्षा का कुछ असर न हो।

पढ्यात पढ्या पर गुण्यानी। प्र०—जिसे चतुराई न आवे उस पर।

पढ़ोन फारसी बेचोन तेल। प्र०—मुसलमानी जमाने की यह मसल फारसी पढ़े बेरोजगार लोगों के लिये थी। अब अँगरेजी पास किए हुए बे रोजीवालों के लिये।

पतल़ी छाँछि पाणी नि सुहै। प्र०—ऐसे झूठ पर जो जल्दी ही खुल जाय।

पत्थर की लकीर ह्वै चुके। प्र०—जो अपनी बात पर अड़ा रहे, उस पर।

पद सुट्ठा का पाँच। इसकी कहानी इस तरह कही जाती है कि कोई असभ्य गँवार अपने पाद की बदबू को मुट्ठी में बंद करके दिल्लगी से एक भले आदमी के मुँह पर ले गया। उस भले आदमी ने उसे पाँच रुपये दे दिए जिससे उस मूर्ख का हौसिला बढ़ गया। वह दूसरे दिन भी वैसे ही पाद को मुट्ठी में बंद करके एक और भले आदमी के पास ले गया। उसने इस बेअदबी के

बदले में उसे जूते से पिटवा दिया। इस कहावत को लोग ऐसे मौके पर कहते हैं जहाँ कोई किसी की की हुई बेजा हरकत को अपनी सहनशीलता से सह लेता है।

परकार दिखेवन त खुँतडो[1] अर बाड़ि[2]। [१ एक जंगली सांग, २ कोदो का बिना घी शक्कर का हलुआ] प्र०—तैयारी तो बहुत हो, पर असलियत कुछ न ठहरे।

पर घर यूं त्यूं जाण, दुख सांजीक[1] क्या पैाण। [१ जमा करके] प्र०—ससुराल जानेवाली लड़की को जल्दी भेजने अथवा आनेवाली आफत का सामना जल्दी करने के लिये।

परमेश्वर का घर देर छ, पर अंधेर नीछ। प्र०—ईश्वर की न्यायपरायणता पर।

परमेश्वर जब देंद तब छप्पर फोड़िक देंद। प्र०—किसी के भाग्योदय पर।

परमेश्वर जो कुछ कर्द सब भला का ही वास्ता कर्द। प्र०—किसी के दुख पर ढाढ़स देने के लिये ईश्वर की न्यायपरायणता की दुहाई देने के लिये।

पर्वत अर राई को पर्वत। प्र०—परमेश्वर की महान् शक्ति के लिये।

परायो दिल परदेश। प्र०—जिस पर विश्वास न हो उस पर।

पअल् खायो, अधेल् भूरयो[1]। [१ दुख मानना] प्र०—जहाँ सुख के साथ साथ दुःख अधिक हो।

पल्या गौं ब्यौ, मेरी आंख्यूं डौ[1]। [१ दर्द] प्र०—दूसरे की संपत्ति देखकर जलनेवाले पर।

पाड़ी[1] बामण जाँदु[2] पिलौणो। [१ लिटाकर, २ शराब का खमीर] प्र०—जहाँ कोई किसी को बुरा काम करने के लिये मजबूर करे।

पाणी का ही धारा बणांग[1] लगिगे। [१ वन की आग] प्र०—जहाँ रक्षक ही भक्षक बन जाय। न्यायाधीश अन्याय करने पर उतारू हो जाय।

पाणी जागिक[1] पतलो, अर ह्यू जागिक बकलो[2]। [१ ठहरकर, २ घना] प्र०—बारिश और बर्फ के लगने से इंत-जारी करने पर।

पाणी सी पतलो, धुआँ सी बकलो। प्र०—पानी और धुआँ के लिये।

पाणी फूटीगे त उधारो सी क्या बगद[1]। [१ बहना] प्र०—उचित देन नहीं छूटता, इस पर। अथवा अवश्य होनेवाला काम छोटी सी बाधा आने पर नहीं रुकता, इस पर।

पांच जुत्ता अर होक्का को पाणी। प्र०—किसी को लानत मलामत करने के लिये।

पांचों अंगुली घयू मा, सिर कढ़ाई मां। प्र०—पराए माल को उड़ानेवाले पर।

पाँचू अँगुली पिड़ा बराबर। प्र०—प्रेम की मात्रा सब संतानों पर एक समान होती है इस पर अथवा सब संबंधी एक समान होते हैं, इस पर।

पाँच्रि आँगली बराबर नि होंदी। प्र०—छोटे बड़ों का भेद दिखलाने के लिये।

पाँचौं सवार बण्यूँ रहँद। प्र०—जो छोटे दर्जेवाला अपने मुँह से अपनी गिनती बड़े दर्जेवालों के साथ करे उस पर। इसकी मूल कहानी यह है कि एक समय चार सवार अच्छे अच्छे घोड़ों पर सवार होकर घोड़ों को तेजी से दौड़ाते चले जा रहे थे। उनके पीछे से एक शख़्श एक सड़ियल टट्टू पर सवार उसी और जा रहा था। एक आदमी ने एक मुसाफिर से, जो उधर से आ

रहा था, पूछा—"ये सवार कहाँ जा रहे हैं?" इस बीच वह सड़ियल टट्टू वाला कहने लगा—"हम पाँचों सवार दिल्ली जा रहे हैं।"

पाणी पीक जात क्या पूछणी। प्र०—किसी काम के करने से होनेवाली बुराई का विचार उस काम के करने से पहिले कर लेना चाहिए। काम कर लेने के बाद विचार करने से क्या लाभ? इस पर।

पाणि मां रणो माछा दगड़ी बिरदोष[1]। [१ दुश्मनी] प्र०—जहाँ रहे वहाँ के अधिकारी अथवा बलवान् से वैर न करे, इस पर।

पान चाबण कू छन घोड़ा दाबण कू छन। प्र०—किसी के ऐश्वर्य की प्रशंसा में।

पाप प्रकट धर्म गुप्त। प्र०—किसी बुरी गुप्त बात के प्रकट होने पर।

पापी करे बिराणा घर की टापी[1]। [१ उत्कट अभिलाषा] प्र०—परायी चीज़ पर नजर रखनेवाले पर।

पांसे पड़े अनाड़ी जीते। प्र०—भाग्य की बलवत्ता पर।

पिंडालू कंडो पेर, फासरो पूठो ओर। प्र०—जिसकी चोरी उसकी पोशाक के निशानों से प्रकट हो रही हो, उस पर।

पित्र पूज्या पठालु लगी। प्र०—किसी की अंतिम बिदायगी पर।

पिस्यां भारा घट्ट। प्र०—जहाँ कहीं पहिला परिश्रम बेकार चला जावे और सारा काम फिर से नए सिरे से करना पड़े।

पिरोलीं[1] **आग अर उल्यार्ई**[2] **बुवारी**[3] **कल छै।** [१ तितर-बितर करना, २ दिक की हुई। कहीं कहीं इसका अर्थ 'जिसका मन उचटा दिया गया हो' भी होता है, ३ बहू] प्र०—आग और बहू जहाँ दिक की जाती हैं वहाँ।

पुंगड़ा बाड़ ह्वै जांदी पर हियड़ा बाड़ नि ह्वैसकदी। प्र०—किसी के दिल या चित्त को जोर करके नहीं रोका जा सकता, इस पर।

पुरुषू लगदा भाग होंदा। प्र०—जहाँ ऐश्वर्य किसी खास मनुष्य के ही दम तक रहे।

पूछ भी खुस्यैंग[1] पर नौंचौं याहीछ। [१ बाल झड़ना, २ चँक्करदार] प्र०—जो बर्बादी हालत पर पहुँचने पर भी अकड़पन न छोड़े।

पूज्यूं हुंगो दोष लगद। प्र०—जिसको मानकर आए हों उसे मानना ही चाहिए, न मानने से विरोध उत्पन्न हो जाता है इस पर।

पूज्यूं पीपल। प्र०—दानपात्रों के लिये।

पूंडी वल्या भेल जांदी नी बचदी, पल्या भेल जांदी नी बचदी। [१ सुफेद मुँहवाली गाय, २ खड़ी जमीन] प्र०—जहाँ कोई ऐसे खतरे की अवस्था पर पहुँच जाय जिससे किसी सूरत में भी बचने की आशा न हो।

पूड़ीपाल[1] से त गया पर क्या नमोनारायण[2] से भी गया। [१ भोजन भिक्षा, २ नमस्कार प्रणाम] प्र०—जहाँ किसी से कुछ संबंध छोड़ दिया गया हो और कुछ बना रहे।

पूत अपणो न्यौ बिराणो। प्र०—जहाँ न्याय न्याय करनेवाले के विपक्षी के पक्ष में हो। अथवा अपने विपक्ष में हो वहाँ स्पष्ट बात कहने के लिये।

पूत कपूत गयो चोरी, असाड़ी आरू ल्यायो तोड़ी। प्र०—जो ऐसा बुरा काम करे जिससे कुछ भी लाभ न हो, उस पर।

पूत सैंती ब्बारी की भौंदी, सूत काती कोलि कि भौंदी[1]। [१ बस में] प्र०—जहाँ किसी के परिश्रम का फल दूसरे को मिले।

पेट लगी आग, क्या चैंद साग। प्र०—भूख की प्रबलता पर।

चैणा की पकोड़ी सवादी होंदी। प्र०—जहाँ थोड़ी वस्तु स्वादिष्ट हो।

पैणा को चैणो चुकायो सारो भितर बयौंन[1] फुकायो। [१ हवा में] प्र०—झूठी आशा में समय बर्बाद करनेवाले पर।

पैले त पधानचारी नीत खेचुलो[1] ही सही। [१ समय बर्बाद] प्र०—जो दूसरे के काम में बाधा डालने के लिये बीच में खड़ा होता है उस पर।

पैसा नी पास त सरो मेलो उदास। प्र०—पैसे की बलिहारी पर।

पैसा कि जात अर पैसा की, थात। प्र०—जहाँ पैसे के बल से घटिया जातिवाला बड़ी जातवालों से संबंध करे।

पैसा धाणी पैसा पाणी। प्र०—जिसके सब काम मजूरों से चलते हों उस पर।

पोछ्लू का पियाँन समोदर नि सूखद। प्र०—माँगनेवाले देनेवाले के उत्साह बढ़ाने के लिये।

पोथी का भट्टा औरी होंदा अर खाण का औरी। कहानी इस प्रकार है कि एक पंडित कथा बाँचने के समय भट्टे के साग को त्याज्य बतलाता था पर स्वयं भट्टे का साग खाया करता था। एक दिन किसी ने पूछा पंडितजी आप तो कथा में बाँचते थे कि भट्टे का साग नहीं खाना चाहिए पर आप स्वयं खा रहे हैं। इस पर पंडितजी "पोथी का भट्टा इत्यादि" उपरोक्त वाक्य कह बैठे। तब से यह मसल हो गई कि जो मनुष्य औरों को उपदेश करे पर स्वयं पालन न करे उस पर इसका प्रयोग होता है।

पोथी न पातड़ी गल़क्या[1] बामण। [१ टुकड़खोर] प्र०—अपढ़ ब्राह्मण के लिये।

पोरकरो[1] परारकरा छकौ[2]। [१ पारसाल का, २ धोखा दे] प्र०—जहाँ कोई कम उम्रवाला बड़ी उम्रवाले को धोखा देने का प्रयत्न करे।

पै रड़ौ[1] जीभ डंडौ[2]। [१ फिसलावे, २ दंड दिलावे] प्र०—जहाँ चलने और बोलने की असावधानी पर दुःख उठाना पड़े।

पौंणा का नौं खाणो बाल़ा का नौं सेणो। प्र०—जहाँ किसी एक काम के बहाने दूसरी तरह लाभ उठाया जाय।

पौंणा का नौं पाक्यो, सबुन चाख्यो। प्र०—जहाँ एक के निमित्त काम करने से कई और भी लाभ उठावें।

पौंणा पूछीक पकोड़ी कखछे? प्र०—किसी का आदर सत्कार इत्यादि करने के लिये उसी से पूछना उचित नहीं, इस पर।

पंचू पूछीक करनो काज, हारो-जीतो नि औ लाज। प्र०—किसी काम के करने में पंच, इष्ट-मित्र इत्यादि की सम्मति लेने की उपयोगिता पर।

पंचु को गयो सारो सेरो, नाल़ी दुयेक गयो मेरो। प्र०—जो विपत्ति अकेले अपने ही ऊपर न हो, औरों के ऊपर भी हो उसको सहने की शक्ति स्वयं उत्पन्न हो जाती है इस पर।

फर फथ मेरि कुँडालि कथैं। प्र०—जहाँ बहुत तैयारी की जाय, पर हो कुछ भी न सके।

फ़र[1] काटणो, अर शहर फूकणो। [१ मधुमक्खी का छत्ता] प्र०—मधुमक्खी के छत्ते के काटने का पाप शहर जलाने के समान होता है इस पर अहिंसा का उपदेश करते हुए।

फांट न पट्टा नौं क्वै पधान, डाल़ी न बोटी नौं छ बग्वान। प्र०—बनावटी या पदवीवाले पर।

फांड[1] फूटली त करदोड़[2] क्या थामली[3]। [१ पेट, २ करधनी, ३ थामेगी] प्र०—बड़ी बलवती बाढ़ को छोटा सा बाँध नहीं रोक सकता, इस पर।

फिर मोची[1] का मोची। [१ जूता बनानेवाला] प्र०—जो उन्नति पाकर फिर अवनति को प्राप्त हो जाय।

फूक झोपड़ी देख तमासो। प्र०—जो अपने ही हाथ अपना नुकसान करे उस पर।

फेरू[1] की बगत झाड़ा। [१ विवाह की भाँवरी] प्र०—जो ऐन मौके पर टल जाय या धोका दे उस पर।

फेर फेरनो भलो, जँगार[1] तरनो बुरो। [१ नदी में पैदल चलना] प्र०—खतरनाक रास्ते से अधिक लंबा मार्ग चलना अथवा कम खर्चवाले निकम्मे तरीके से ज्यादे खर्चवाला तरीका अच्छा, इस पर।

बगदी गंगा हाथ धोणो। प्र०—जिसे आसानी से कुछ भलाई का मौका मिल जाय उसे भलाई करने में नहीं चूकना चाहिए, इस पर।

बगमारा[1] काखड़ू[2] गीज्यूं[3] छ। [१ बाघ के मारे हुए, २ मृग, ३ आदत पड़ी हुई है] प्र०—जिसे मुफ्तखोरी की आदत पड़ी हुई हो।

बगुला भगत। प्र०—जो कपट से बाहर तो मीठी मीठी बातें बनावे और भीतर ही भीतर बुराई करे।

बग्वाली बीती द्वी सार रीती[1]। [१ खाली] प्र०—जहाँ किसी बड़े काम के पूरे हो जाने पर भीड़ छँट जाय अथवा सामान खतम हो जाय।

बग्यूं बाघ जिबाला पड़ी जाँद। प्र०—छिपकर अपराध करनेवाला कभी न कभी पकड़ा ही जाता है, इस पर।

बड गान्यूं भूक मरो असमान्यूं लोट पड़। दे०—'असमान्यू' इत्यादि।

बड़ू का बड़ा भाग। प्र०—जहाँ किसी का बड़ा काम सहज ही में हो जाय।

बड़ू की बड़ी बात। प्र०—जहाँ किसी बड़े की कही हुई बात के कितने ही माने लगें।

बड़ो मारो अर रोण भी नि द्यो। प्र०—जहाँ कोई जबर्दस्त दोहरा अन्याय करे।

बडोलि बिसौ[1] अर कुँडोलि निसौ[2] कख छौ। [१ बिसाहने की सामग्री, २ इंसाफ] प्र०—किसी बात की असंभवता पर।

बड़ा को रोष पूठा सूड़े। प्र०—गंभीर पुरुष की सहनशीलता पर।

बण्वा भागिगे काठगो घालिगे। प्र०—जहाँ कोई आदमी कुछ उपद्रव करके आप चला जाय और पीछे रहे हुए उसके साथियों को उस उपद्रव की जवाबदेही करनी पड़े। इसकी असली कहानी यह है कि कुछ ग्वालों में एक बण्वा नाम का था। उसने बरों के छत्ते पर लकड़ी घुसेड़ दी और आप भाग गया। वहाँ पर रहे हुए ग्वालों को बरों ने काट खाया।

बण सुंगरून खाया पिंडालू घरसुंगरू का थैं च्या[1] थोंतरा[2]। [१ कूटे गए, २ जबड़े] प्र०—जहाँ कसूर करे कोई और पकड़ा जावे कोई और।

बद्द[1] भलो, पर बद्दो[2] बुरो। [१ बदमाश, २ बदनाम] प्र०—बदनामी पर।

बदरी रैगे पली गदरी, भतगे[1] खैली वली गदरी। [१ चोट] प्र०—जहाँ सहायक के मिलने में देर होने से पहिले ही नुकसान उठाना पड़े या मार खानी पड़े। बदरीनाथ पुरी के

पहुँचने से कुछ ही पहिले कांचनगंगा नाम का एक बिना पुल का गधेरा (नाला) है। उसको पार करते हुए प्राय: यात्री लोग उसमें गिर पड़ते हैं और चोट खाकर जखमी हो जाते हैं। लोग इस कहावत की जड़ इसी कांचनगंगा को 'वली गदरी' बतलाते हैं।

बद्.ल्यां द्यौ की घाम तड़ाक, ढांटुला खसम की जांठा भड़ाक। प्र०—जहाँ कोई थोड़े दिन का अधिकार पाकर डाँट बतावे।

बल्.द नि जोड़नो ढांगो[1], आवत[2] नि जोड़नो कांगो[3]। [१ बूढ़ा, २ संबंधी, ३ कंगाल] प्र०—बूढ़े बैल और कंगाल संबंधो पर।

ब.ल्दबुखराड़ी[1] जवैं समुराड़ी[2]। [१ भूसे के ढेर में, २ ससुराल में] प्र०—जहाँ दामाद ससुराल में हो।

बर्स होया अस्सी अकल गै नस्सी
बर्स होया साठ अकल गै नाठ। } प्र०—जहाँ किसी बूढ़े की सम्मति किसी को पसंद न हो।

बाओं हाथ दैणा हाथ धो, दैणो हाथ बायाँ हाथ धो। प्र०—जहाँ कुछ लोग आपस में एक दूसरे की सहायता करते हुए काम चलाते हों।

बाखरा पिछाडी बाघ अर घाघरा पिछाड़ी लाग। प्र०—जहाँ किसी की किसी पर लाग या लगन लगी हुई हो।

बाखरा को गिच्चो कि खुँकरया को हुच्छो। प्र०—जहाँ कोई जबर्दस्त किसी कमजोर पर मनमानी ज्यादती करे।

बाग का फेर अर सर्प का घेर। प्र०—बाघ और सर्प के अदृश्य होने पर।

बागन मारे तौ घर नि आए, भेल पड़े तौ घर नि आए। प्र०—जहाँ हर तरह किसी काम के सिद्ध होने में पूरी निराशा हो जाय।

बाग नि लिजांदो बाखरी त कव्वा नि लिजांदो हाड। प्र०—जहाँ एक के किए हुए बुरे काम के कारण दूसरा भी बुरा काम करे।

बाग बकरी एक घाट पाणी पें दान। प्र०—अच्छे राज्य की प्रशंसा पर।

बाग बखरवालो डोम घट्वालो। प्र०—किसी काम को ऐसे आदमी के भरोसे छोड़ना जो स्वाभाविक ही हानि पहुँचानेवाला हो।

"बाग बाग रात किलै हिटदी ?" "कै कि लैंदी मारे, कै कि बिंदारी मारे"। प्र०—अपराधी के छिपने के प्रयत्न पर।

बाग आयो लुकदो लुकदो, कुकर आयो भुकदो भुकदो। प्र०—चोर और रक्षक की कार्य्यशैली पर।

बाछी चुली पूछी बड़ी। प्र०—जहाँ किसी लाभ की आशा में किए हुए काम में लाभ से हानि अधिक हो जाय।

बाछी छोटी हत्या बड़ी। प्र०—जहाँ कोई छोटा सा साधारण काम बड़े अपराधों की गिनती में आ जाय।

बाँटिक खाणो कि साँटिक खाणो। प्र० बाँट सांट कर खाने का उपदेश।

*** बाँज नि सकू बुरांस नि सकू स्यांरू धपाक।** [१ चोट] प्र०—जहाँ कोई बलवानों से तो बात न करे, निर्बलों को तंग करे।

---

* कछु वसाय नहिं सबल सों करे निबलन सों जोर।
जो न अचल उखार तरु डारत पवन झकोर ॥—वृंद।

बांजा[1] गौं की लूँदुड़ो पधान। प्र०—जहाँ कोई योग्य पुरुष न हो वहाँ अयोग्य ही योग्य समझा जाता है।

बांजा गांव को सूसो पदान (जैसा ऊपरवाला)।

बाटो भूल्यूं मिल जांद पर अक्कल भूलीं नि मिलदी। प्र०—बड़ी चूक हो जाने पर।

बाड़बैठिगे उजाड़ खाणा। प्र०—दे० बाड़ही इत्यादि।

बांडी[2] लोकेण क्या जाणो परसव पिड़ा[1]। (१ बाँझ स्त्री) प्र०—जहाँ साधारण मनुष्य पेंचीदा बात को समझ न सके।

(क्रमशः)

---

(१) जहाँ चतुर नाहिन तहाँ मूढ़न सों व्यवहार।
वट पीपर बिन होय ज्यों एरँड को अधिकार।—वृंद।

(२) पंडित जन को श्रम मरम जानत जे मति धीर।
कबहूँ बाँझ न जानई तन प्रसूति की पीर।—वृंद।

(१४) गढ़वाली भाषा के 'पखाणा' (कहावतें)

[लेखक—श्री शालिग्राम वैष्णव, कर्णप्रयाग, गढ़वाल]

(पत्रिका, भाग १८, अंक २, पृष्ठ २०१ से आगे)

बात पाणी का बुजाड़ा[1] छन होणा। [१ पोटली]
प्र०—अस्थायी उपाय पर।

*** बाँदर क्या जाणो आदा को सवाद।** प्र०—जहाँ कोई गुणयुक्त वस्तु किसी ऐसे मनुष्य के पास पड़े जिसे उसके गुणों की पहचान न हो।

बाँदर का कपाल टोपलो नि स्वांद। प्र०—जहाँ कोई अच्छी वस्तु किसी ऐसे मनुष्य को मिले जो शीघ्र उसका नाश कर दे।

बांध्यूं डोम नौ टका[1] सिरै[2]। [१ नौ सेर, २ देना कबूल करे] प्र०—जहाँ गरजमंद से अनुचित पावने का इकरार कराया जाय।

ब्वाना बट्यां जस होंद। प्र०—जहाँ किसी के आने ही पर कोई हानि हो जाय।

बाप पूत लेखो जोखो, मां धी ऊजो पैंछो। प्र०—जब मित्रों के बीच कुछ लेन देन की बात आ पड़े।

बाप मारो छाप मारो। प्र०—पिता के महत्वपूर्ण अधिकार पर।

बाबू को करयूं ब्यौ अर सबेर को धोयूँ मुख कामी आँद—प्र०—यथावसर किये गये काम के लाभप्रद होने पर।

---

* आदि को स्वाद कहा कपि को अरु नीच कहा उपकारहि माने।
जाने कहा हिँजरा रति की गति आखर की गति का खर जाने॥

† **बाबू की कमैं न कपूत खौ न सपूत साँजो**[1]। [१ संचित करना] प्र०—बाप की कमाई के भरोसे रहनेवाले पर।

‡ **बाबू की लेणगैछौ बूढा की ठवाली क लाये।** प्र०—जहाँ लेने के बजाय देने पड़ें।

बाबू गहणो दँद लहणो थोड़ो दँद। प्र०—बेटी के भाग्य पर।

बाबू ल्यौ स्या ब्वैं[1], **ठाकुर करो स्या सै**[2]। [१ माता २ सही] प्र०—मौसिया माँ और हाकिम के किए हुए फैसले पर।

बामसू भंडार मैखंडा ताली। प्र०—जहाँ नजदीक रहने योग्य प्रयोजनीय वस्तु अति दूर हो। बामसू उस स्थान का नाम है ज़हाँ केदारनाथ के पंडे रहते हैं। बामसू में जो धन (भंडार) है उसकी चाबी केदारनाथ अर्थात् मैखंडा है। यही इस कहावत का आशय है।

बारा बर्स दिल्ली रया भाड़ ही झोंके। प्र०—अनुभवहीन पुरुष पर जिसे बहुत सा काम करने पर भी कुछ अनुभव न हो।

बारामास्या निन्द, छै मास्या फुंकार। प्र०—बहुत सोनेवाले पर।

बाल की खाल निकालणी। प्र०—बहुत बारीकी करनेवाले पर।

बालकि[1] **वेदना को जाण सकद।** [१ बच्चे की] प्र०—न बोल सकनेवाले की वेदना कोई नहीं जानता।

---

† पूत सपूत तो क्यों संचे। पूत कपूत तो क्यों संचे॥

‡ चौबेजी छब्बे बनने गए थे दुबे होके आए।

थे केक की फिक्र में सो रोटी भी गई।
चाही थी बड़ी सो छोटी भी गई।
वाइज की नसीहत क्यों न माने आखिर।
पतलून की ताक में लँगोटी भी गई।—अकबर।

बाला को हाथ खज्यो, बुड्या को गिच्चो खज्यो। प्र०—बालकों के उपद्रव करने और बूढ़ों के बकने पर।

ब्याले, को जोगी आज को आदेस। दे०—काल को जोगी इत्यादि।

ब्वारि क्वै बाबू लै छौं, ब्वारी क्वै बाबू खैगे। प्र०—जहाँ कोई अपनी लाई हुई सौगात आप ही खर्च कर डाले।

ब्वारि का कूट्यां मां सासू को रग-चराट[1]। [1 कार्य में व्यस्तता दिखलानेवाली हड़बड़ाहट; हाथ डालना] प्र०—जहाँ कोई दूसरे के पूरे किए हुए काम को अपना किया हुआ बताने को आखिर में शरीक होवे।

बाँस का बाड़ा बाँस। प्र०—जहाँ कोई लड़का, जिसके माँ बाप छोटी उम्र में मर गए हों, अपने बाप के ही बराबर कारोबार करे।

बिट्‌मि वाट्‌मी 'बाबु बुढौ' सराध। प्र०—गाली देकर बूढ़े बाप का श्राद्ध।

बिठाणा संगरांद, डोमाणा उकरांत[1]। [1 जागना, न सोना] प्र०—जहाँ किसी काम के लिये किसी दूसरे को परिश्रम पड़े।

बिना अफू मरथां स्वर्ग नि देखेंद। प्र०—जहाँ कोई काम बिना आप किए पूरा होता न दीखे।

बिना काम को बैठणो, अर बिना दाँतू को हैंसणो। प्र०—निठल्ले बैठनेवाले पर।

बिना, गलौ, गाणो, अर बिना प्रीती, रुसाणो। प्र०—उक्त दोनों की निरर्थकता पर।

बिना गुरू घाट, अर बिना ज्वै, खाट। प्र०—उक्त दोनों पर।

बिना छारै, छ्वै१, अर बिना पिड़ै, रवै। [१ कपड़े धोने के लिये राख का एक विधान] प्र०—बिना राख के धुलाई नहीं बनती, बिना पीड़ा के रुलाई नहीं आती।

बिना दूदी छै मैना पालद। प्र०—जो किसी को झूठा भरोसा देता रहे पर काम न बनावे।

बिना पाणी को सी माछो। प्र०—जो किसी की लगन पर बेचैन हो।

बिना रोयां मां भी दूधी नि दैंदी। प्र०—बिना मांगे कुछ नहीं मिलता इस पर।

बिपता यकुली नि औंदी। प्र०—जहाँ किसी पर कई दुःख एक साथ पड़ें।

बिराणा गौं को जाड़ो अर अपणा गौं की भूख। प्र०—दूसरे के गाँव में जाड़ा और अपने गाँव में भूख अधिक सताती है।

बिराणा घर ताता की रड़१। [१ हठ] प्र०—दूसरे के घर में गरम भोजन के लिये हठ करना (उचित नहीं।)

बिराणा भात का अपस्वाण१। [१ भोजन के समय की बलि अर्थात् जो ग्रास ईश्वरार्पण रखे जाते हैं] प्र०—जो पराये किये हुए काम का यश आप लेना चाहे।

बिराणा लाटा१ हँसौन,२ अपणा लाटा रुवौन३। [१ गूँगे, २ हँसावें, ३ रुलावें] प्र०—गूँगी या नालायक संतान पर।

बिराणा सोना नाक दुखौणो। प्र०—मँगनी की वस्तु से शान दिखानेवाले पर।

बिराला का भाग न छिंका टूटे। प्र०—जहाँ किसी को बिना परिश्रम अकस्मात् कोई संपति मिल जावे।

बिराला की नजर छिंका पर। प्र०—जो अपने प्रयोजन की सिद्धि ही के लिये कोई काम करता हो।

बिराली मारीं सबी देखदान दूध खत्यू[1] कोई नि देखदो। [१ गिराया हुआ, खिंडाया हुआ] प्र०—जहाँ कोई भीतरी बातों को जाने बिना केवल बाहरी बातें सुनकर किसी को दोषी ठहरावे।

बिराली क्या जाणो मोल को दै[1]। [१ दही] प्र०—जहाँ कोई किसी चीज की कदर न जानकर फटथाजी से उड़ावे।

बिराल ताणो भित्तनै, कुकूर ताणो भैनैं। दे० कुकूर ताणो०।

बीड़[1] सू रोई ना, अपणी पती खोईना। [१ पराया] प्र०—सहानुभूति न रखनेवाले के पास अपना दुःख बखान न करने के लिये।

बीस की उन्नीस। प्र०—जहाँ कठिनाई या दुख कुछ घट जाय।

बुड्या बेटी दीक दुणखेपाई। प्र०—जहाँ कोई नादान से दोस्ती करके हानि उठावे।

बुड्या बोलीक मारेंदनी, तरुणा बोलीक पालेंदनी। प्र०—मर्यादा की रक्षा पर।

बुरा देखीक कर्ता[1] डरो। [१ ईश्वर, काल] प्र०—जबर्दस्त की जबर्दस्ती पर।

बूड रांड सब मां मरो[1] बूडमां क्वै निरै। [१ सब में जान देने को तैयार रहे] प्र०—जहाँ जहाँ घर के बूढ़ों की बेकदरी हो।

बूडत स्यौ पर कूव निसेण देंदी। प्र०—जहाँ कोई इच्छा रहते हुए किसी खास कारण से इच्छित काम न कर सके।

बेकार से बेगार भली। प्र०—बिलकुल न मिलने से कुछ मिलना अच्छा।

बेगल्यां[१] भाई सोरा[२] बराबर। [१ जुदे हुए; जिनकी सम्पत्ति का बँटवारा हो गया हो। २ दूर के बिरादर, सगोत्री] प्र०—जुदे हुए भाइयों पर।

बेट्या,[१] अर माट्या,[२] दगड़ी[३] को सकद[४] ? [१ बेटी देनेवाले के, २ जमीन के मालिक के, ३ साथ से ४ बराबर सकता है।] प्र०—उक्त दोनों के अधिकार के महत्त्व पर।

बेटी भाजिक[१] मैत, अर कूल टूटीक सोत[२]। [१ भाग-कर २ मूल धारा] प्र०—बेटी के भागकर मायके जाने पर।

बेट्यूं का बोरिया[१] अर कौणिका उधारिया[२]। [१ बहु-कुटुम्बी २ उधार कर्ज देनेवाले] प्र०—लड़कियों की अधिकता पर।

बेट्यूं का मांगण्या[१] अर सात्यूं का उधार्या। [१ माँगनेवाले २ कर्ज लेनेवाले] प्र०—लड़की माँगनेवालों पर।

बेट्यूं को घर अर बड़ूकी[१] गोठ कख छै। [१ बछड़ों की] प्र०—अधिक लड़कियों के कुटुम्ब की निस्सारता पर।

बेट्यूं को चाट्यूं घर, अर खरकौ[१], चाट्यूं बण। [१ भैंसों की गोठ] प्र०—उक्त दोनों के खोखलेपन पर।

बेशरम को नाक काट्यो, हातेक और बाढ़्यो। प्र०—जिसे लोकलाज की पर्वाह न हो उस पर।

बैठो बणिया भार तोलो। प्र०—जो काम की कठिनता को जाने बिना मुँह से कहे कि यह काम करना सहज है उस पर।

वैम की कोई दवा नी। प्र०—वहमी मनुष्य पर।

***बोगठ्या[१] बोद मैं बग्वाल[२] खौंलो, बीचमां नव-राता देखद्रौ नी।** [१ बकरा, २ दीवाली में एक स्थानीय

---

* रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातं भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पंकजश्रीः।
इत्थं विचिंतयति कोषगते द्विरेफे हा हन्त हन्त नलिनीं गज उज्जहार॥

त्यौहार] प्र०—जहाँ कोई नजदीक के खतरों को न देखे और दूर के मनसूबे बाँधे।

बोदू छौंत गौं पड़द बैदो,[1] निबोदू त ब्वारी घाघरी लां, दी कैदो[2]। [१ वैर, २ टेढ़ा] प्र०—ऐसे काम पर जिसको करने और न करने में भी भय ही हो।

बोली भाषा जुदी जुदी रीत-भांत-एक्कु। प्र०—मुल्क मुल्क के रिवाजों में जिन जिन बातों में एकता या समता दीखे उस पर।

बोलू बेटी सुणौं ब्वारी। प्र०—जहाँ कोई बात अप्रत्यच्च रूप से कही जाय।

ब्यौ न स्यौ नौनी को फजिती[1]। [१ थकान] प्र०—असफल परिश्रम पर।

ब्यौ ल्यणो कुल सोधी, पाणी ल्यूणो सूल सोधी। प्र०—शादी से पहिले लड़की के कुल की शुद्धता की खोज पर।

भग्वान औ खांदी दौं, निर्भाग औ सैंदी दौ[1]। [१ समय] प्र०—खाने के समय पर आनेवाले के लिये जो रसोई में जीम सके।

भग्वान का बल्द का द्वी लेवाल[1]। [१ खरीददार] प्र०—जहाँ किसी की अधिक मांग हो।

भग्यान घड़ि को लौड़ो ह्वय जो खणीं खाड मील।

एक समय एक भौंरा दिन के पिछले पहर सूर्य-कमल के पुष्प पर पराग लेने गया था। उसके पराग लेते लेते सूरज डूब गया जिससे कमल का पुष्प सिकुड़ गया। भौंरा उसमें बन्द हो गया। रात के समय भौंरा सोच रहा था कि रात्रि के बीत जाने पर जब कमलपुष्प खिलेगा तब मैं बाहर निकलूँगा किन्तु हाय उसकी आशा पूरी न होने पाई। रात्रि ही में हाथियों के समूह ने आकर कमलों को उखाड़कर फेंक दिया। भौंरा कमलपुष्प ही के भीतर मर गया।

भटक भारी खीसा खाली। प्र०—बिना पैसे के घमंडी पर।

भय बिना प्रीत कख्छै। प्र०—बिना भय प्रीति न होने पर।

भला फूल की भली वासना, भला मनखी की भली नामना[1]। [१ यश] प्र०—भले की भलाई और बुरे की बुराई पर।

*** भलू का बुरा, बुरू का भला।** प्र०—जहाँ भले की संतान बुरी हो।

भाई की सौग्यास थमालाकी पीठ। प्र०—भाई के सुसराल की निंदा पर।

भाई बेगला[1] साही ओखला। [१ जुदे जुदे] प्र०—भाइयों के जुदे होने की अनिवार्यता पर।

भागदा भूत की लंगोटी हाथ। प्र०—जहाँ सम्पूर्ण के चले जाने का भय होने पर भी कुछ रह जाय।

भागै, बल्यारी[1] छन। [१ बलिहारी] प्र०—जहाँ किसी का भाग्योदय देखने में आवे।

भागै, भताक कर्मै, लटाक। प्र०—जहाँ किसी वस्तु की प्राप्ति अप्राप्ति भाग्य पर निर्भर दिखाई दे।

भाटू का बाढ़ौन भितनैं लंड गाडौन[1]। [१ टट्टी करें] जहाँ बच्चों की अवस्था अधिक होने पर भी ऐब न छूटे।

भाणजा धाणी अर तितरा पाणी कखछ्या। प्र०—भानजों के रूखेपन पर।

भात छोड़नो पर साथ नि छोड़नो। प्र०—साथ न छोड़ने और प्रतिज्ञा निबाहने के सिद्धांत पर।

---

* होत भले को सुत बुरो भलो बुरे ते होय।
दीपक ते काजल प्रकट कमल कीच ते जोय॥

भाव बिना भगती न कर्म बिना रेख। प्र०—उक्त दोनों की महत्ता पर।

भाखरो भाखरो क्या बोल्द गांडो बोल। प्र०—जो बात को स्पष्ट न कहे उस पर।

* **भितर खाणा बाखरा भैर करना नाखरा[1]।** [१ नखरे] प्र०—जो छिपे छिपे बुरे कर्म करे पर बाहर बड़ा ज्ञानी और धर्मात्मा बना रहे उस पर।

भित्तर नीच आलण देल म नचदन सत सत-बालण? प्र०—झूठी शान के दिखावे पर।

भीक का टुकड़ा गल्यूं मां डंकार। प्र०—जो दरिद्र होने पर भी संपत्तिवानों के समान ठाट-बाट से रहे।

भीक मां भीक, तीन लोक जीत। प्र०—भीख माँगकर दान करनेवाले पर।

भीम से भारत, स्वर्ग से लात। प्र०—बड़े के साथ लड़नेवाले छोटे पर।

भुकदो कुत्ता काटदो नी। प्र०—जो केवल बकवाद करे, काम न करे।

भुजेलो बाढ़्यो नीत फूरो भी निहोयो क्या? प्र०—जो उम्र में बड़ा पर कद में छोटा हो।

भुड़्या[1] मरया तुमड़ा फूट्या। [१ मजदूर] प्र०—मजदूरों की बेकदरी पर।

भूक मिट्ठी कि भोजन मिट्ठो। प्र०—भूख में स्वाद की आवश्यकता नहीं रहती इस पर।

भूका बोद वली गदरी, अगाणो बोद पली तुदरी।

* अंतश्शाक्ता बहिः शैवा सभामध्ये तु वैष्णवाः।
नानारूपधराः कौला विचरन्ति महीतले॥

[१ जिसे भूख न हो, अघाया हुआ] प्र०—जहाँ कोई किसी आतुर के काम करने में विलंब करता हो।

भैर ग्वल्ला भितर ग्वल्ला अर्ज बाड़ी कै मां कल्ला।

* **भैर धवाधौ[1] भितर बाड़ी[2] अर पल्.यौ[3]।** [१ पुकार पर पुकार, २ कोदैा के पिसान का बिना घी गुड़ का हलुवा, ३ छाँछ को उबालकर बनाया हुआ साक।] जहाँ बाहरी आडंबर और अंदरूनी तंगदस्ती हो।

भैर पुंड लंबी धोती भितर पुंड मंडुवा की रोटी।
भैर लग्यांछन ताल़ा, भितरनी मूसा मारन का गाल़ा। } प्र०—ऊपर के समान।

भैस्यू गोठ गौड्य[1] को नाश, नणदू घर बौड्य[2] को नाश। [१ गायों का, २ बहुओं का] प्र०—उक्त दोनों पर।

भैंसो ब्याणो गुबेड़ो होय। प्र०—जहाँ बड़ी आशा हो वहाँ बहुत थोड़ा मिले।

भैंसो भेल़ पुछड़ो हाथ। प्र०—जहाँ बड़ा भारी नुकसान होकर थोड़ा बचे।

भैंसा को डौ मकड़ा पर। प्र०—जहाँ किसी बलवान् की की हुई बुराई का बदला निर्बल से लिया जाय।

भैंसा को मोल़[1] भैंसा का ही ढामणा[2] [१ गोबर, २ पीठ पर] प्र०—जहाँ किसी काम में आमदनी के ही बराबर खर्च हो जाय।

---

* बाहर मियाँ सूबेदार, घर में बीबी झोंके भाड़।
बाहर मियाँ पंचहजारी, घर में बीबी कर्मो मारी।
बाहर मियाँ छैल चिकनिया घर में लिबड़ी जोय।
बाहर मियाँ झंगझंगाले घर में बीबी नंगी सोय॥

भोज की राखी, स.अदो[1] न बासी। [१ ताजा] प्र०—जहाँ बड़ी आशा की हो वहाँ जाकर कुछ न मिले।

भोल भोल दिन गया सोल। प्र०—कल कल पर टालनेवाले पर।

भौण न भास जिय को नास। प्र०—बेसुरे गानेवाले पर।

भौत खाणकू जोगी होया, पैल्या बासा भूखा रया। प्र०—जहाँ किसी लाभ होने की आशा हो पर आरंभ ही में हानि उठानी पड़े।

भौत ऋण हाल[1] न भौत जुँऊँ खाज। [१ चिन्ता] प्र०—उक्त दोनों बातों पर अथवा जहाँ कोई दुख की बात अति अधिक हो जाती है वहाँ दुख नहीं मालूम होता।

मक्खीचूस। प्र०—बड़े कंजूस के लिए।

मर्च छोटी बबकार बड़ी। प्र०—जहाँ छोटे में बड़ी करामात हो।

मड़दी का मांगल छन गायेणा। प्र०—जहाँ कोई काम उचित उत्साह से न किया जाय अर्थात् टूटे दिल से किया जाय।

मड़ो मरिगे भगलो कूटणो करिगे। प्र०—जहाँ किसी के मरने से दूसरे की अति बुरी दशा हो जाय।

महड़[1] को आसरो पाटणी[2] की भीख। [१ मठ, २ बाजार] प्र०—जहाँ किसी की गुजर इधर उधर भीख से होती हो सिर्फ रहने को किसी के घर में आसरा मिला हो।

मन करद सरदी, नौना बाला भूख मरदी। प्र०—जहाँ मन तो बड़े-बड़े सुख चाहे पर भीतरी हालत तंग हो।

मन की मन ही मां। प्र०—जहाँ मन की बात बाहर न खुले।

मनखी आयो अस्सी, अकल मति गै नस्सी । मनखी आयो साठ, अकल मति गै नाट ।	प्र०—जहाँ किसी बूढ़े की सलाह की बेकदरी हो ।

मनखी जै। निदेण, कपड़ा जै। निधोण। प्र०—उक्त दोनों पर।

मन चंगा कठौती मां गंगा। प्र०—अपने निरपराध होने के लिये।

मन्ने चुली[1] बिगचणी[2] डर। [१ मरने से, २ खराब होने की] प्र०—जहाँ कोई कुपथ्य खावे या अपने शरीर की परवा न करे।

मन्न जुग[1] मनखी निहोंद देण जुग वस्तू नि होंदी। [१ लायक] प्र०—जहाँ कोई किसी वस्तु के देने में हिचकिचाहट करे।

मनमां ऐजैा पर मुंडली ढगड्यौ[1]। [१ हिलावे] प्र०—जहाँ कोई किसी बात पर सहमत हो जाने पर भी स्पष्ट न कहे।

* **मनलड्डू छिन खायेणा।** प्र०—जहाँ कोई ऐसे मंसूबे ठाने जो पूरे न पड़ें।

मन हैांसिया कर्म गँडिया। प्र०—जहाँ मन बड़ी शान-शौकत चाहे पर तंगी से वे सब पूरी न हो सकें।

मया को नाज अर दया को मनखी खूब पनपद। प्र०—दूसरों पर दया करनेवाले पर अथवा मया से कुरेदी हुई फसल पर।

मरथां सबून सारथा[1] जूँदा कैन नी सारथा। [१ सहे] प्र०—किसी की असह्य हरकत के न सहे जाने पर।

मरलो नाटो किरिया न काटो, बचलो नाटो खालो आटो। प्र०—संतान-रहित के लिये।

मलीं भी अर द्वी भी कखळौ। प्र०—जहाँ कोई सब तरह अपना ही लाभ चाहे।

महर गंधिलो[1] प्यू सुंधिलो[2]। [१ बदबूवाला, २ सुगंध-वाला] प्र०—जहाँ बुरे से भले की प्राप्ति हो।

माई अपणी भिच्छया ना दे पर अपणो कुत्ता थाम। प्र०—जहाँ कुछ भलाई मिलने के बजाय उल्टे बुराई मिले।

माँ की छ्वीं[1] मौस्याणी[2] सू। [१ बात, २ सौतिया माँ] प्र०—जहाँ अपने पक्ष की शिकायत विपक्षी से की जाय अथवा विपक्षी की शिकायत उसी के दोस्त से की जाय।

* माँगि माँगिक त बाबू खाँद अर नौनो रपकद द्वी ब्यौकू। प्र०—अपनी बिसात से अधिक की चाह करने वाले पर।

माखा मारनू छ। प्र०—बेरोजगार या बीमार पर।

मांगणी का गोरू का दाँत न खूर। प्र०—मँगनी की अथवा मुफ्त में आई हुई वस्तु की अनुपयोगिता पर।

मांगीक लोग्या पिरथी का, मेरी दौं[1] खिर्तिग्या। [१ समय, २ नाराज हो गए] प्र०—जहाँ कोई सबके साथ भलाई करनेवाला किसी एक पर नाराज रहे।

मांगी मांगी मैं ल्यूं पूछी पूछी त्वै द्यूं। प्र०—जहाँ कोई उससे माँगे जो स्वयं माँगकर गुजर करता हो।

माछी पाणी पेंद को देखद। प्र०—जहाँ कोई किसी बुरे काम को चुपके चुपके करता रहे।

माछापाणी ज्यू होयूँ छ। प्र०—जहाँ दो की गाढ़ी मित्रता दीखे।

माछो गंदो होंद ताल गंदो नि होंद। प्र०—किसी एक के दोष से सब दोषी नहीं हो सकते इस पर।

मां जाणी[1] धी, बाबू जाणी पूत। [१ स्वभाव का] प्र०—मां के स्वभाव या सूरत की बेटी और बाप के समान स्वभाव-सूरत का लड़का होने पर।

माणा माथ गैंनी, अठारा माथ दैानी। प्र०—जहाँ पर किसी प्रयत्न की अंतिम सीमा हो जाय।

माठु[1] माठु चल्दी न सीली[2] रांड, दौड़ दौड़ी चल्दी तधुरया[3] रांड। [१ आहिस्ते आहिस्ते, २ धीमी, ३ ऐंबी] प्र०—जहाँ हर तरह छिद्रान्वेषण ही होता हो।

माता जाणो पिता, कृष्ण जाणो गीता। प्र०—जहाँ किसी गुप्त बात को जाननेवाला केवल एक ही मनुष्य हो अथवा किसी पेचीदा बात के कई मतलब निकाले जाते हों।

* **माथे बिटी पाणी सींचद तलाविटी जड़ी काटद।** प्र०—जहाँ कोई कपट-नीति का बर्ताव करे।

मान ना मान मैं तेरो मेहमान। प्र०—जिसे कोई आदर न भी करे पर वह स्वयं आदरणीय बने उस पर।

मारन ते मण्थायू[1] बुरो। [१ तकना, निशाना देखना] प्र०—जहाँ कोई किसी को बिना हाथ छोड़े ही बेआबरू कर दे।

† **मारन वाला ते बचौंदारो[1] बड़ो।** [१ बचानेवाला] प्र०—बचानेवाले की प्रशंसा पर।

मार बांधी क सौदा। प्र०—जहाँ कोई ऐसा काम जो राजी से होना चाहिए किसी से जबर्दस्ती करवाया जाय।

---

* परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्।
वर्जयेत्तादृशं मित्रं विषकुम्भं पयोमुखम्॥ चाणक्य।

† मारनहार से रक्षक भारी।

मानीक द्यवता निमानीक ढुंगो। प्र०—विश्वास और श्रद्धा पर।

मां मरो पर मर्जाद[1] ना मरो। [१ मर्यादा] प्र०—मर्यादा अथवा सच्चाई की रक्षा पर।

मामा औलो तौली छुड़ौलो निजाणेकि टका दुयेक और डंडौलो। प्र०—जहां किसी पर विश्वास हो अथवा जिसके जाने से लाभ की आशा हो उसके आने पर उल्टी हानि उठानी पड़े।

मामा भाणजा घर जैक हूँला, शामल[1] थैली अपणी अपणी खौला। [१ रास्ते के लिये राशन] प्र०—जहाँ अपनी अपनी जिम्मेदारी निभाने में रिश्तेदारी का खयाल न किया जाय।

मामा समान पौणोनी, पित्र समान द्यवता नी। प्र०—उक्त दोनों पर।

मां मौंस्याण बाबू कटबाबू। प्र०—उक्त दोनों पर।

मार्दी मार्दी दिल्ली जौं, जब क्वै आगो हाथ[1] नाकर [१ रोकने ही] प्र०—जो काम कुछ न करे, मुँह से बड़ी बहादुरी की बातें करे।

***मार्यूं क्या मारनो।** प्र०—दुखी या दुर्बल पर प्रहार न करने के लिये।

मारू का अगाड़े भूत नाचो (भागो)। प्र०—जहाँ मार से सफलता हो।

मारू दिल्ली हगू चुल्ली। प्र०—जो मुँह से बड़ी बड़ी हाँके, पर करे कुछ नहीं।

मारे नी त कांधी मां क्या च। प्र०—जिसके कहने के विरुद्ध उसी के साथ प्रत्यक्ष प्रमाण मौजूद हो।

---

* "किसी वेकस को ऐ बेदाद गर मारा तो क्या मारा।
जो आप ही मर रहा हो उसे मारा तो क्या मारा॥"—जौक।

मारो भी अर रोण भी निद्यौ। प्र०—जहाँ कोई किसी पर ज्यादती भी करे और उसे बखान भी न करने दे अर्थात् किसी से कहने न दे।

माल[1] जैलो बट्टा[2] ल्यूलो, चुचा[3] परौठा[4] तेरि क्या रैगे। [१ मंडो, २ लोटा, ३ बेचारे, ४ काठ की ढेकी] प्र०—जहाँ कोई किसी की माँग को पूरा न करे और दूसरा कर दे।

मालवालो हार जै, गिच्चावालो जीत जै। प्र०—जहाँ धनशक्ति से वाक्शक्ति प्रबल हो।

मिछौं गैं मां सबसे भली, पर आग कखों नि मिली। प्र०—जहाँ किसी की आत्मप्रशंसा उसी के कहने से झूठ साबित हो।

मिट्ठा का जलड़ा नि रखदा, कड़ा का टुक्कू नि छूंदा। [१ जड़] प्र०—जहाँ कोई बुरों से डरकर बात न करे पर भलों को तंग करता रहे।

मिट्ठा का लोभ खायेंद जुट्ठो। दे० 'जुट्ठो खायेंद मिट्ठा का लोभ'।

मियाँ जी का तीन कपड़ा नाड़ा सूं तण वस। प्र०—जहाँ किसी चीज की बरायनाम गिनती ही बढ़ी हो पर वास्तव में हो कुछ भी नहीं।

मिरगो[1] ज्यू चलीगे क्वै बोद मैं सगुन भी नि मिले। [१ मांस की शोरनी] प्र०—जहाँ खर्च करनेवाले का तो बहुत खर्च हो जाय पर कोई कहे मुझे तो कुछ मिला ही नहीं, इससे कुछ भी न हुआ, इस पर।

मित्तर ठड्याव[1] अर सोरो[2] खड्याव[3]। [१ उठावे, २ सगोत्री, ३ खड में डाले] प्र०—जहाँ बिरादरीवालों की कूटनीति से हानि उठानी पड़े अथवा जहाँ मित्र की सहायता से उन्नति हो।

मित्र का बोलनी अगवाड़ी अर शत्तुर का बोन्नी पिछाड़ी। प्र०—जहाँ मित्र के हित के लिये कड़वी बात कही जाय।

मुखड़ी देखीक टुकड़ों। प्र०—जहाँ किसी सार्वजनिक काम में समानता का बर्त्ताव न करके स्वार्थवश भेदभाव किया जाय।

*** मुख ध्वैक ऐजा।** प्र०—जहाँ किसी को व्यंग्य से झूठी आशा दी जाय।

मुर्खू ज्ञान अर सुंगरू पक्वान कखछौ! प्र०—जहाँ किसी पर सदुपदेश का कुछ भी प्रभाव न पड़े।

मुर्ख वैद की आश्चा, स्वर्ग लोक की जात्रा। प्र०—जहाँ किसी वैद्य की औषधि से कुछ गुण न दीखे या बीमारी बढ़ जाय।

मुर्गी कू तकुवा क्वी डाम भैत च। प्र०—जहाँ किसी गरीब को थोड़ी ही हानि बहुत अखरे।

मुंड मुंडारो न गती जर। प्र०—जहाँ कोई बीमार होने का बहाना करे।

मुंड की कांधी मां ऐगे। प्र०—जहाँ कठिनाई कुछ कम हो जाय।

मुंड्य् जोगी अर पीसीं दवाइ। प्र०—जहाँ किसी की जातपांत का कुछ पता न चले।

मूंड्य् देश जौ अधमुंडो कख जौं। प्र०—जहाँ कोई किसी काम को अधूरा छोड़ दे।

मुंड को नौं कपाल। प्र०—जहाँ कोई किसी बात को स्पष्ट न कहकर घुमा फिराकर कहे।

मुद्दइ सुस्त गवाह चुस्त। प्र०—जहाँ मुद्दई से गवाह अधिक बोले अथवा जहाँ गवाह रिश्वत लेकर गवाही दे।

मुख खौ आँख लजौ। प्र०—जहाँ कोई किसी की खातिर तवाजा से दबकर सच्ची या न्याय की बात न कहे अथवा जहाँ कोई सरकारी हाकिम रिशवत लेकर पक्षपात करे।

सूत का दिवा जगणा छैन। प्र०—जहाँ किसी धनवान् या अधिकार-प्राप्त व्यक्ति की जा-बेजा सब समायत हो जाय।

सूत को निवात्तो[1]। [१ गरम, सरदी का बचाव] प्र०—जहाँ कोई आराम या ख़ुशी थोड़े समय के लिये हो।

सूवा का बाना महल आग। प्र०—जहाँ छोटे से लाभ के लिये बड़ी भारी हानि उठाई जाय।

सूसा को ज्यू जौ बिराला़ को खेल है। प्र०—जहाँ किसी कार्य से एक को तो दुःख हो रहा हो और दूसरा ख़ुशी मनाता हो।

सूसा का मासू सूसा का ही गाला़[1]। [१ पकड़ने के लिये ग्रास] प्र०—जहाँ किसी लालची को फँसाने के लिये उसी से सहायता ली जाय।

मेंडकू जुकाम लैगे। प्र०—जहाँ कोई छोटी सी संपत्ति पाकर इतराने लगे।

मेंढा लोण दीने ओखला़ डाली़क। प्र०—जहाँ किसी को ऐसी सहायता दी जाय जिससे उसे कुछ भी लाभ न हो।

मेरा गोस्यू' की नौतेरी[1] साल, छोरा बाछरू की एंखारी[2] पाल। [१ गौशाला १२ हाथ लंबी ९ हाथ चौड़ी। २ एकहरी दीवाल] प्र०—जहाँ कहीं बड़ी भारी खैरात लुट जाने पर भी कोई गरीब भूखा रह जाय।

मेरा ब.ल्दन तथ्या बायेनी जथ्या उजाड़ खाये। प्र०—जहाँ कोई कमाई से अधिक नुकसान कर बैठे।

मेरा बाबू न दथु खाये मेरो हाथ सूँघा। प्र०—जहाँ कोई अयोग्य व्यक्ति अपने पिछलों के नाम का घमंड करे।

मेरी आँगुली तेरा आँखू, तेरी आँगुली मेरा गिच्चा। प्र०—जहाँ कोई ऐसी व्यवस्था करे जिससे केवल अपने को ही लाभ और दूसरे को हानि रहे।

मेरी गंगा होली त मैमूँ औली। प्र०—जहाँ कोई अपनी सच्चाई अथवा हक के लिये ईश्वर को पुकारे। यह कहावत पुराने जमाने के एक धर्मात्मा गढ़वाल-नरेश की सिद्धवाणी से निकलकर प्रचलित हुई है। एक बार राजा साहब कुंभ-स्नान को हरिद्वार गए। वहाँ मेले की भीड़ अधिक होने से वे अपने राज्य की ही सीमा के अंदर एक जंगल में जिसे अब चंडीघाट कहते हैं, टिक गए। किसी ने उनसे कहा "महाराज यहाँ से गंगाजी बहुत दूर हैं स्नान की असुविधा होगी। कहीं गंगाजी के किनारे डेरा पड़ता तो अच्छा रहता"। इस पर महाराज ने कहा "मेरी गंगा होली त मैमूँ औली" महाराज सिद्ध पुरुष थे सिद्धों के वचन अकारथ नहीं जाते। रात को मेघ घिर आए। मूसलधार पानी बरसने लगा। गंगाजी में बाढ़ आने से उसकी एक शाखा फूटकर महाराज के डेरे के निकट बहने लगी। बस उसी दिन से यह मसल लोगों में प्रख्यात हो गई।

मेरी घाण ऐजौ वाढ़दू को बल्द वाघ जीजौ। प्र०—जहाँ कोई केवल अपना कार्य साधने तक किसी चीज की रक्षा या खबरदारी करे काम निकल जाने के बाद उसका नुकसान हो जाने पर भी कुछ सहायता न करे।

मेरी नथुली मैं क्वीं नकचौंला[1]। [१ नाक भौं चढ़ाना] प्र०—जहाँ कोई किसी से परवरिश पाकर उसी के साथ बुराई करे।

मेरी बिराली मैं कूही न्यू । प्र०—दे० मेरी लथुलो०।

मेसी परबदाली भी बुणी जायेंद कुमेश्री निगाली भी नि बुणेद। प्र०—जहाँ कोई किसी काम को निकालने के लिये, जो सहज से निकल सकता हो, उद्दंडता दिखावे और असफल रहे।

मैं जैं वख, कर्म लिजौं कख। प्र०—जहाँ सारा उद्यम व्यर्थ जावे वहाँ भाग्य को दोष देते हुए।

मैत जवाई न ससुरास रवाई। प्र०—जहाँ कोई किसी काम करने को न तो आगे बढ़े न पीछे हटे, बीच ही में रह जाय।

मैं तेरो नाक काटलो पर तू बुरो ना मानो।—दे० "मारो भी अर रोग०"।

मैं भाग होला त कै ठुला[1] की रांड होली। [१ बड़े की] प्र०—जहाँ किसी को दूसरे की विपत्ति अथवा नुकसान पर लाभ होता हो।

*मैं मारू फाली[1] कर्म की द्वी नाली। [१ छलाँग] प्र०—जहाँ किसी को बहुत परिश्रम करने पर भी बहुत थोड़ा मिले।

मोटा देखिक मोटी सूल। प्र०—जहाँ किसी को मालदार जानकर माँग भी बढ़ाकर पेश की जाय।

मो. र[1] भी मिल सके अर पिशाब भी बैठ सके। [१ दर्वाजा] प्र०—जहाँ किसी के बिगड़ने के बाद सुधार का उपाय सूझे।

मोलाजै[1] मै कोणा जैक रो। [१ मुरव्वत करनेवाले का घर] प्र०—जहाँ कोई किसी की मुरव्वत करके स्वयं नुकसान उठावे।

मोलाजै' मै हुंगा मां जै। प्र०—ऊपर के समान।

---

* करम कमंडल कर गहे तुलसी जहँ लगि जाय।
सागर सरिता कूप जल बूँद न अधिक समाय॥—तुलसी।

मोल लेणी सुख सेणी। प्र०—किसी वस्तु का मूल्य चुका देने पर कोई विवाद नहीं रहता इस पर।

मंतर नि जाणनो बिच्छी को सर्प दुलन्यूं डालनो हाथ। प्र०—जहाँ कोई ऐसे काम में हाथ डाले जिसका उसे कुछ भी अनुभव न हो।

यकुलो बास झगड़ू को नाश। प्र०—एकान्तवास करनेवाले पर।

यतनो नौं ततनो नौं बाड़ी ढिंडो[1] कीमां खौं। [१ पिंडा] प्र०—जहाँ किसी की सिर्फ बाहरी दिखावट हो, भीतरी हालत बहुत बुरी हो।

य.क रिख[1] की डर भूड़ लूक्या तख नौ रिख ढूक्या[2]। [१ रीछ, २ पीछा करने लगे] प्र०—जहाँ किसी एक विपत्ति से बचने का उपाय करते हुए कई और विपत्तियाँ खड़ी हो जायँ।

यार न आबत[1], ऐपड़्या चारी मावस। [१ रिश्तेदार, संबंधी, आप्तजन] प्र०—जो सगे संबंधी न हों और बिना मेजबान की इच्छा के मिहमान बन जायँ।

यूं तिलू तेल न यूं तिथ्यू सराध। प्र०—जहाँ से कुछ मिलने की आशा न हो।

यूं पुठुन कत्ती घाघरा फाड़्या अर कत्ती फाड़णन। प्र०—जहाँ कोई अधिकारी अपने मातहतों अथवा रिआया पर ऐसे सख्त हुक्म चलावे जो उनको पसन्द न हों।

ये ठाकुर की देणी न लेणी आंखा घुराई कौंकी। प्र०—जो बिना किसी उचित अधिकार या शक्ति के दूसरों पर दबाव डाले।

ये धान भूंच्यां छिन की भूंचण्यां? प्र०—जो कमाई सारी की सारी कर्जे में चली जानेवाली हो उसके लिये।

रज्जा का भंडार अर खंकलुका[1] गिच्चा। [१ लफंगों का मुँह] प्र०—उक्त दोनों की अधिकता पर।

रज्जा को चलणो अर मेघ को वरसणो। प्र०—उक्त दोनों की हितकारिता और अप्रत्याशित रूप से आ उपस्थित हो जाने पर।

रज्जा मारो, जगतर सारो[1]। [१ सहे] प्र०—राजदंड की सर्वमान्यता तथा अटलता पर।

रज्जा को जौ लोणपाणी, चिचा सहया[1] को हियो फाट। [१ भंडारी] प्र०—जहाँ मालिक की आज्ञा हो जाने पर भी कारिंदा देने में आनाकानी करे।

रज्जा को जौ सारो सेरो नाल दुथेक गयो मेरो। प्र०—जहाँ किसी के दुःख में धीरज दिलाने के लिये उसके दुःख या हानि की तुलना किसी वड़े आदमी के दुःख या हानि से कराई जावे।

रड़[1] भी मिटिगे ढव[2] भी टूटिगे। [१ तीव्र हठ, २ आदत] प्र०—जहाँ कहीं इच्छित कार्य पूरा हो न पाया हो।

रड़ि[1]नी पड़्या खाट मांजे पड्या। [१ रपट (नहीं पड़े)] प्र०—जहाँ कोई किसी बात से जाहिरा तो नाराजी दिखावे पर भीतर से खुश होवे।

रड़ी[1] को राज खुशी को भोज। [१ हठी] प्र०—जहाँ कोई अपनी इच्छा से भले बुरे काम करे।

राजा को दान, अर पारजा को अस्नान। प्र०—उक्त दोनों की तुलना अथवा महत्त्व पर।

राजों का घर मोत्यूं, अकाल़ कखको ? प्र०—जहाँ कोई संपन्न अपने पास किसी वस्तु का अभाव बतलावे वहाँ माँगने-वाले की ओर से।

रांड त रैजौ पर रंडुवा नी रण देंदा। प्र०—दुष्टों की दुष्टता से विधवाओं के तंग होने पर अथवा जहाँ कोई इच्छा होने पर भी किसी के भय से कोई अच्छा काम न कर सके।

रांड का दिन जौन,[1] छोरा का दिन औन[2]। [१ जाते हैं, २ आते हैं] प्र०—विधवा के पुत्र की अच्छी दशा पर।

रांडी घर मांडी[1]। [१ चावलों का या अन्य किसी अन्न का माँड़] प्र०—फसल हो जाने से गरीबों की संपन्नता पर।

रांडू का पांजा,[1] गौं पड़याबांजा। [१ मंत्रणा, प्रपंच] प्र०—जहाँ स्त्रियों की कुमंत्रणा से हानि उठानी पड़े।

राणी आई त छांछ नि देई, कमीणी आइ त देयो दै[1]। [१ दही दिया] प्र०—जहाँ कोई दान योग्य वस्तुओं का वितरण पात्रापात्र का विचार किए बिना करे।

रात थोड़ी, बात बड़ी। प्र०—जहाँ कोई किसी बात को संक्षेप से कहना चाहे।

रात दिन की पदाड़,[1] पकोड़ू[2] भगार[3]। [१ पादनेवाली, २ पकौड़ों को, ३ दोष देना] प्र०—जहाँ कोई किसी बुरे काम को छिपाने के लिये बहाना बनावे।

रात दिन को खाणो साग क्या लाणो। प्र०—जहाँ कोई माँगनेवाला हमेशा माँगने आवे उससे चिढ़कर।

रात दिनौ' पैणो, कखछ्यो? प्र०—जहाँ कोई साधारण व्यक्ति हमेशा खातिर चाहे।

रात बांटण त मैं बांटुलो दिन बाँटण त मेरी दुणबाँटी[1]। [१ दूनीबांट] प्र०—जहाँ कोई अपने स्वार्थ के लिये नियम भंग करके बेईमानी करे और नियम बनावे तो ऐसे जिनसे केवल अपना ही स्वार्थ सिद्ध होवे।

रामजी की माया, कखी घाम कखी छाया। प्र०—ईश्वरीय माया पर।

राम न मिलाई जोड़ी, एक अंधो एक कोढ़ो। प्र०—जहाँ ऐब ही ऐबवाले एक साथ मिल जायँ।

रिखै[1] खाईं स्वाण अर बल्दै[2] खाईं अस्वाण। प्र०—जहाँ कोई जबर्दस्त का किया हुआ बुरा काम सह जाय पर वही काम निर्बल करे तो न सहे।

रीधा[1] की अर बीधा[2] की बिच्छन[3] कखछै? [१ भात की (रीधे हुए की), २ बिना वर्षा का दिन, ३ दिल का ऊब जाना] प्र०—बहुत पसंद आनेवाली चीजों पर।

रिश्वतखोर दैव को चोर। प्र०—रिश्वतखोरों पर।

रीधण-पकौण[1] की भूख अर कातण-बुणन की[2] नांग। [१ रीधने-पकाने की, २ कातने-बुनने की] प्र०—उक्त दोनों पर।

रेख[1] मां मेख[2] को करी सकद। [१ रेखा (भाग्य की), २ मीन मेख] प्र०—भाग्य की अटलता पर।

रैजौ त अपणा आप नीत सगा बाप। प्र०—स्त्री के हठ पर वह भलाई की ओर हो चाहे बुराई की ओर।

रोक मजूरी खासा[1] काम। [१ चोखा, खरा] प्र०—सच्चाई या खरेपन की उपयोगिता पर।

रोटी तख खै पाणी यख पे। प्र०—किसी को जल्दी वापिस बुलाने के लिये।

रोटी को क्या धोणो, अर बेटी को क्या रोणो। प्र०—उक्त दोनों पर।

रोग मरयो भोगी, नाहक मां मरयो डुमजोगी। प्र०—जहाँ कोई बिना जाने पराई नकल कर दुःख या हानि उठावे।

*रोग की जड़ खाँसी झगड़ा की जड़ हाँसी। प्र०—उक्त दोनों पर।

रोटी खाणी धक्कर से, दुनिया खाणी मक्कर से। प्र०—उन चकड़ेतों पर जो केवल छल-बल से काम निकालते हों।

रोण पड़दो न बरजण पड़दो। प्र०—जहाँ कोई किसी काम से अपनी या दूसरे की तटस्थता दिखाकर उसके हानि-लाभ से भी तटस्थ रहना जाहिर करे।

रोणू किलै च? बल सूरत ही इन्नी[1] च। [१ इसी प्रकार] प्र०—किसी रोनी सूरतवाले पर उसका उपहास करने के लिये।

रोंदी रांड चोंदी पांड[1] कखछै भली। [१ ऊपर की मंजिल] प्र०—इन दोनों पर।

रोंदो ना जा, गँगजांदो[1] जा। [१ हिचकी युक्त आधी रुलाई] प्र०—जहाँ किसी की माँग पूरी न करके कुछ थोड़ा देके बिदा कर दिया जाय।

रोष खै अपणी मौ, संतोष खौ बिराणीमौ। प्र०—गुस्से की बुराई पर।

रौं सुख, मरू भुक्ख। प्र०—परिश्रम न करनेवाले दरिद्री पर।

* रंगमां भंग। प्र०—जहाँ किसी खुशी के काम में बाधा पड़ जाय।

लकीर का फकीर। प्र०—बिना समझे बूझे पुरानी चाल चलनेवाले पर।

लगा[1] लगो[2] न बांह पौंछो। [१ अवसर, २ मिलना] प्र०—अपनी पहुँच से बाहर के काम के लिये।

* काहू पै हँसिए नहीं हँसी कलह को मूल।
हाँसी ही ते है भयो कुल पांडव निर्मूल॥—वृंद।

लगी घुंडा फूटी आँख। प्र०—जहाँ कोई असंगत बात होती दिखाई दे।

लगीग्यो त भुत्या[1], नी त[2] चुत्या। [१ लकड़ी का खूँटा, २ बनी, नहीं तो] प्र०—किसी काम के, जिसके सफल होने की कम आशा हो, कराने के लिये किसी को उत्साहित करने में।

लड़दी दौं पिछाड़ी, अर भागदी दौं अगाड़ी। [दौं=समय] प्र०—डरपोक के लिये।

लड़ो सिपाही नौ (गुलजार) सरदार को। प्र०—जहाँ कोई औरों के किए हुए काम का यशभागी बने।

लब्भ खौबब्बु। प्र०—जहाँ लालच के कारण हानि हो जाय।

लाख जौ पर साख ना जौ। प्र०—साख अथवा ईमानदारी के महत्त्व पर।

लाख लगैक कौड़ी जीतणी। प्र०—जिद्दी मुकद्दमेबाजों पर, अथवा किसी इज्जतदार की इज्जत घटने पर।

लाज मरेंद कि पीड़। प्र०—जहाँ मुरव्वत से कोई काम बिगड़ता हो।

लातू की देवी बातून नि मानदी। प्र०—उस पर जो डाँट डपट या मार खाए बिना काम न करे।

लाभ को पड़े ढाब[1]। [१ तालाब] प्र०—जहाँ कोई लालच से खतरे में पड़े।

लिजांदी दौं हलसुंगो, देंदी दौं काठगो। प्र०—जहाँ कोई अपना काम निकालने के लिये खुशामद उठावे और काम निकल जाने पर निंदा करे।

लुकारि देखी लाईं पैरीं अपणा देखी नांगी, मेरा बाबू की अकल गै स्याइ नि मांगी। प्र०—जो अपनी खराब और पराई अच्छी वस्तु देखकर लालच में आवे उस पर।

लुहा का चणा च चबौणा। प्र०—जहाँ कोई किसी काम को बड़ी बड़ी विपत्तियों का सामना करते हुए चला रहा हो।

लूट का दाम, फूफू को सराध। प्र०—जहाँ कोई किसी बिना परिश्रम के पाए हुए धन को निरर्थक खर्च करे।

लूट को क्या भै, फूट को क्या न्यौ। प्र०—जहाँ कोई किसी काम में धाँधली कर रहा हो।

लूण ये को ब्वैन नीढोलथो आँखा मी कू तकणद। प्र०—किसी के अपराध के लिये किसी दूसरे पर रुष्ट होने पर।

ल्यू न द्यू भैा रुवै द्यू। प्र०—नियम तोड़नेवाले पर।

ले कुकूर मेरो खुट्टो खा। प्र०—जहाँ कोई अपने को आप ही आफत में डाले।

लेंड खाणो त हाथी को खाणो। प्र०—कोई बुरा काम करना ही पड़े तो ऐसी अवस्था में किया जाय जिससे कोई बड़ा लाभ हो इस पर।

लेणी एक न देणी द्वी। प्र०—जहाँ कोई निष्प्रयोजन झंझट में पड़ना हो।

लैंदा गोरु पींडो खौन, बांडा थोबड़ा चाटौन। प्र०—जहाँ भलों के साथ निकम्मों को भी कुछ मिल जाय। अथवा जहाँ इज्जतदारों के साथ रहने से वे इज्जतवालों को भी जूठन मिल जाय।

लोखू का बखरा मेरी ब्वैका नखरा। दूसरे की चीज का गर्व करने पर।

लोगू का सट्टी बुसींदन मेरा चौंल बुसींदन। प्र०—जिससे पूरी आशा हो, उससे निराशा मिलना।

लोण डली फूटोना, अलोणी होना। प्र०—जहाँ कोई मुफ्त में अथवा बिना परिश्रम कार्य सिद्ध करना चाहे।

लोला[1] लोला सब एकी खोला[2]। [१ खल्वाट, २ मुहल्ला] प्र०—जहाँ कहीं एक तरह के ऐबवाले इकट्ठे हों।

लौंग लगो न फटकड़ी। प्र०—जहाँ कोई काम बिना परिश्रम अथवा बिना खर्च मुफ्त में बन जाय।

लंकामा जो सबसे छोट्टो सो बावन गज लंबो। प्र०—जहाँ छोटे भी बड़ों को छकावें।

*** वक्त चल जांदा बात रै जांदी।** प्र०—भले या बुरे बर्ताव की स्थिरता पर।

वक्त पर क्वै काम नि औंद। प्र०—जहाँ कोई दोस्त या साथी वक्त पर काम न आवे।

वखी शात्तूको भारो वखीं पाणीको धारो। प्र०—जहाँ किसी को बुरे काम करने के सब साधन एक जगह मिल जायँ।

वटदी-कातदी होंदीं ता भेल लोट दी। प्र०—निरुद्यमी भटकते फिरते वे रोजगार पर।

वरै चुकाई भीक पोरै चुकाई लीक। प्र०—जिसने लापरवाही में दोनों तरफ का काम बिगाड़ दिया हो।

वल्या गौं जगा नी, पल्या गौं को वक्त नी। प्र०—जो ऐसी बुरी दशा को प्राप्त हो जाय जिसके सुधार का कोई उपाय न हो।

वल्या जेट पल्या मंगसीर। प्र०—किसानों की फस्ल होने पर पावनेवालों के साथ इकरार करने के लिये।

वल्यो घाट न पल्यौ जंगार। दे० वल्यागौं जगानी इत्यादि।

वाण करू पड़े स्वाण। प्र०—जहाँ कोई ऐसी बात हो जाय जिससे विपक्षियों को प्रसन्नता हो जाय।

---

* काम इन्सान को इन्सान से पड़ता है ज़रूर।
बात रह जाती है पर वक्त गुज़र जाता है॥

वैकी ही पुंगड़ी वेकाहीजौ, चिच्चा वल्द खूवकै लौं। प्र०—जहाँ अपरोक्ष में किसी का कोई नुकसान उसी से हो जाय।

वैक्वै मड़ो मरो वेही पच्चीस पड़ो। [१ मुर्दा] प्र०—जहाँ अन्याय से हानि उठानेवाले को ही उल्टा दंड देना पड़े।

वो बुन्द विलायत गया। प्र०—इस कहावत का मूल इस कहानी से है कि एक सेठजी अपने किसी जल्से में मिहमानों को इतर दे रहे थे। इत्तिफाक से इतर की एक बूँद जमीन में गिर गई। सेठजी ने झट से उस गिरी हुई बूँद को पोंछकर उठा लिया। इस पर एक मिहमान हँस पड़े। सेठजी उस तिरस्कार की हँसी से बड़े लज्जित हुए और उन्होंने दूसरे दिन एक हौज बनवाकर उसमें कई मन इतर जमा करवाकर लोगों को इतर से नहला दिया। यह दिखलाने के लिये कि वे इतने फय्याज हैं कि कई मन इतर लुटवा सकते हैं। पर उनके वे मिहमान, जो अगले दिन हँसे थे, आज कह बैठे कि इतर की वह बूँद, जो कल गिरी थी, इस हौज में तो दिखाई नहीं देती। मालूम होता है "वह बूँद विलायत गई"। तब सेठजी बड़े लाचार हुए। इस कहावत का प्रयोग ऐसे मौके पर होता है जहाँ कोई उपयुक्त समय पर किसी जरूरी बात को करना चूक जाता है अथवा कोई ऐसी गलती कर बैठता है जिसका सुधार कभी न हो सके।

शक्करवाला कू शक्कर मूंजी कू टक्कर। प्र०—दानी और सूम पर।

शरमदार अपणी शरम से डरो बेशरम बोलो मैसे डरे। प्र०—जहाँ कहीं इज्जतदार या बड़ा आदमी किसी कमीने को क्षमा कर देता है और कमीना उससे अनुचित लाभ उठाता है।

शरमदार कू शरम बेशरम कू दुर्बलइ। प्र०—ऊपर के समान।

शरम की ताणी छन दियेणी। प्र०—जहाँ कोई किसी काम को करने में असमर्थ होने पर भी बदनामी के भय से करता ही चला जाय।

शहत लगैक चाट। प्र०—जहाँ किसी के पास कोई ऐसी सनद या दस्तावेज हो जिसका कोई प्रयोग न हो सकता हो उसके संबंध में व्यंग्य।

शहर की सलाम, गौं कौ दाल भात। प्र०—शहर और देहात के शिष्टाचार की तुलना में।

शिकारी शिकार खेलो चूतिया गैल फिरो। प्र०—जहाँ काम करनेवालों के साथ कोई निकम्मा बेमतलब फिरा करे।

शिर को जामिन पैर। प्र०—जहाँ कोई संयोग-वश कहीं दूसरी जगह जाकर मर जाय।

शिर रयूँ रलो त पगड़ी कती होइ जाली। प्र०—किसी स्त्री के मर जाने पर।

श्री गणेश करनो। प्र०—किसी काम के शुभारंभ के लिये।

सच्च सच्ची च अर भूठ भूठ च। प्र०—सच्चे की जीत पर अथवा भूठे की हार पर।

सच्चा को बोलबालो भूठा को मुख कालो। प्र०—ऊपर के समान।

*** सच्चा भूठा पितर गया जैक पछाणेला।** प्र०—जहाँ सच भूठ की पहिचान कहीं आगे होनेवाली हो।

सच्ची बात कड़ी लगदी। प्र०—जहाँ कहीं सच बोलने पर कोई बुरा माने।

---

* "क्रयविक्रयवेलायां काचः काचो मणिर्मणिः"।—काँच और मणि की जाँच खरीद फरोख्त के समय हो सकती है।

सच्चैं को जमानो नी। प्र०—जहाँ कहीं सच बोलने से किसी को हानि उठानी पड़े।

सच्चो पुत्र मर्द नी सच्चो रिण बगद नी। प्र०—उक्त दोनों पर।

सत्त को[1] सवाई बस्ती[2] की दूण। [१ धन का सवाया। २ अन्न का दूना] प्र०—पुराने जमाने में उधार का सूद इस दर से अधिक नहीं होता था इसी पर।

सत्त त टूटो ना अर पत्त[1] त जैाना। [प्रतिज्ञा] प्र०—किसी ऐसे नाजुक मौके पर जहाँ सत्य और प्रतिज्ञा के बीच विरोधी भाव पैदा हो जाय। अर्थात् एक ओर सत्य छोड़ने का दूसरी ओर प्रतिज्ञा-भंग का भय हो जाय।

सत्तुर का बेन्नी[1] पीठ पिछाड़े, मित्र का बेन्नी अग्वाड़े। [१ बोलना, २ सामने] प्र०—स्पष्टवादिता की हितकरता पर।

सत्या-पत्या घटी गय, रिण-कर्ज बढी गय, सेरा-गोती ठडी गैन, दै-दुश्मन बढी गैन। प्र०—बुढ़ापा और विपत्ति के आने पर।

***सदा कैकी नि रई।** प्र०—जहाँ कोई ऐश्वर्य पाकर उन्मत्त हो जाय उस पर अथवा जिसका ऐश्वर्य थोड़े दिन में खतम हो जाय।

स.दा[1] लाखड़ा अर बासी पाणीं। [१ ताजा; कच्चा] प्र०—किसी आलसी गृहस्थ पर अथवा किसी ऐसे व्यक्ति पर जो उल्टे उपाय से सफलता चाहें।

---

* चलि वलि लखि दुति तड़ित घन सुखद समौ जनि खोय।
सदा न फूले तोरई सदा न सावन होय ॥—वृंद।
चैन से जुगनू चमकते यह बने की बात है।
मूढ़ क्यों यह सर्वदा रहती नहीं बरसात है॥

स.दी[1] रात न बासी बेली[2]। [१ ताज़ी, २ खाने का समय] प्र०—जहाँ कोई आते ही कुछ उपद्रव कर बैठे।

सदा साँई की। प्र०—ईश्वर सर्वदा एक समान है अर्थात् ईश्वर में कोई परिवर्त्तन नहीं होता। ईश्वर के अतिरिक्त और किसी की एक सी शुभ दशा नहीं रहती।

सदै खायां कि याद रैंद बासि कि नि रैंदि। प्र०—पुराने उपकार को भुलाने पर तथा किसी पुराने ही उपकार से प्रत्युपकार चाहनेवाले के प्रति।

स.दो निखाये बासी खाये बासी सांकू साग नि पाये। प्र०—जो पहिले किसी काम को खुशामद करने पर भी न करे और पीछे बिना कहे ही करे उस पर।

सनकौंद क्या छै मनी सांछ। प्र०—जहाँ कोई किसी वांछनीय कार्य करने को अपने आप ही तैयार हो जाय।

सपूत कू क्या सांजणो[1], कपूत कू क्या पांजणो[2]। [१ संचयकर्ता। २ जमा करना] प्र०—बाप की कमाई की सपूत और कपूत दोनों के लिये निरर्थकता पर।

***सफेदी मां स्याही।** प्र०—जो अपनी लिखी हुई बात पर मुकर जाय वा झूठी बात लिखे अथवा बालों पर खिजाब लगावे।

सबका गुरू गोवर्द्धन दास। प्र०—जो सब बुरों को शासन कर ठीक करता है उस पर अथवा व्यंग से बुरों के अगुवा के लिये भी।

†सबको दाता राम। प्र०—ईश्वर की सर्वसंरक्षकता पर।

* बाक़ी है दिल में शेख़ के हसरत गुनाह की।
काला करेगा मुँह भी जो दाढ़ी सियाह की।—ज़ौक़।

† अजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम।
दास मलूका यों कहे सबके दाता राम॥—मलूक।

* **सबसे भली चुप्प।** प्र०—बहुत बोलने की अथवा चुप रहने की उपयोगिता पर।

† **सबी नर निहोंदा एक सर।** प्र०—जहाँ कहीं एक ही स्थान के या एक ही प्रकार के लोगों में भिन्न भिन्न स्वभाव या गुण पाए जावें।

सब्बी खाणा लोण मिट्ठो, सब्बी धाण देण मिट्ठी। प्र०—नमक और दान की प्रशंसा में।

‡ **सब्बी स्यालू, स्याल-सिंगी नि होंदी।** प्र०—जहाँ कहीं एक ही जाति के होने पर भी भले गुण किसी विरले ही में पाए जायँ।

समझ का घर दूर छन। प्र०—जहाँ पेचीदा बातें साधारण की समझ में न आवें।

समझणवाला की मौत छ। इस कहावत की मूल कहानी इस प्रकार कही जाती है कि एक दिन किसी राजा के दर्बार में गाना-बजाना हो रहा था। गाने का सम आने पर एक दूसरे की देखादेखी कई एक सिर हिला दिया करते थे। राजा साहब ने अपने वजीर से पूछा—क्या ये सभी लोग, जो सिर हिला रहे हैं, सम को समझते होंगे? वजीर ने उत्तर दिया—'नहीं'। मैं अभी इन सबको ठीक किए देता हूँ। तब वजीर ने सभा में सबको पुकारकर कहा—"महाराज की आज्ञा है कि कोई सिर न हिलावे।

---

* वालू जैसी करकरी उज्जल जैसी धूप।
ऐसी मीठी कुछ नहीं जैसी मीठी चुप॥—कबीर।

† सब इकसे होत न कहूँ होत सबन में फेर।
कपरौ खादी बाफतौ लोह तवा शमशेर॥—वृंद।

‡ शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे।
साधवो नहि सर्वत्र चन्दनं न वने वने॥—चाणक्य।

जो सिर हिलावेगा उसकी गर्दन काट दी जावेगी।" इस आज्ञा के पाते ही सब के सिर हिलने बंद हो गए। केवल एक आदमी, जो कि गाने को असली समझनेवाला था, सम आने पर सिर हिलाए बिना न रह सका। वह गाने को समझनेवाला था। सम के आने पर वह इतना लवलीन था कि राजाज्ञा की उसे कुछ भी सुध न रही। जब वह सिर हिला चुका तब खड़ा होकर अर्ज करने लगा "सर्कार 'समझवाला की मौत छ'।" राजा साहब ने उससे कहा, हमने तो समझनेवाले को पहचानने के ही लिये ऐसी आज्ञा दी थी। तुम्हारा कोई अपराध नहीं है। तब से यह कहावत चल पड़ी। इसका प्रयोग ऐसी जगह व्यंग्य से होता है जहाँ कोई समझ की बात कहता है।

समझ माँ फेर पड़िगे। प्र०—जहाँ किसी बात का उलटा अर्थ लगाया जाय।

समझी बूझी करनो काज, हार्‌यो जित्यो नि औ लाज। प्र०—आगा पीछा विचार कर काम में हाथ डालना चाहिए इस पर।

सरग थूकणो अर महल मूतणो। प्र०—जहाँ कोई निर्बल बलवान् का तिरस्कार करे अथवा उससे दुश्मनी करे।

सप सणी दूध पिलाए। प्र०—उस कृतघ्न व्यक्ति पर जो उपकार के बदले अपकार करे।

स.री त.री होइगे। प्र०—जहाँ किसी बात से निराश होना पड़े।

सरहत्त खेती परहत्त बणज। प्र०—खेती अपनी देख-रेख में, बनज-ब्योपार दूसरों के हाथ से ही अच्छी तरह चल सकता है, इस पर।

सस्ती रोव बार बार महँगी रोव एकी बार। प्र०—सस्ते सौदे के कम टिकाऊपन पर और महँगे के टिकाऊपने पर।

स.ज पाको मिट्ठो होव। प्र०—देर से होनेवाले काम की उपयोगिता पर।

साग न भुजी बाड़ केकी, खाणो न पेणी जुल मुंडी[1] केकी। [१ बार बार झाँकना] प्र०—किसी निष्फल कार्य की व्यर्थ चेष्टा पर।

स्वांग[1] भैात रात थोड़ी। [१ मजाकिया] प्र०—जहाँ समय थोड़ा और काम अधिक हो।

सांटा की रोटी क्या मोट्टी क्या छोट्टी। प्र०—जहाँ कहीं किसी के बुरे काम का बदला बढ़ाकर दिया जाय।

सात घड्याला[1] लगायां पर बुवारी को बाल नि हल्के। [१ देवता औतारने के लिये बाजे बजाना] प्र०—जहाँ किसी काम को करने की सब तदबीरें व्यर्थ जायँ।

सात पाँचू की लाठी एक जणा को बोझ। प्र०—किसी काम को मिलकर थोड़ा थोड़ा परिश्रम ही से बड़ा काम बन जाता है इस पर।

सात लाख सलाण नौ लाख दुमाण[1]। [१ अलकनंदा मन्दाकिनी के बीच का मुल्क (परगना नागपुर)]। प्र०—उक्त दोनों मुल्कों के विस्तार पर।

सात साखी सांदण, नौ साखी थुनेर। प्र०—सांदण और थुनेर इन दोनों लकड़ियों के टिकाऊपन पर।

सात सौत अर एक सौतेलो। प्र०—सौतेला (सौत का लड़का) सौत से भी अधिक दुःखदायी होता है इस पर।

सात्तू रैग्या सासू सूं, सपड़ाक[1] रैगे बुवारी सूं। [१ चखते हुए चटकारा] प्र०—जहाँ किसी वस्तु का उपभोग जाननेवाले को वह वस्तु दूसरे के पास होने के कारण अप्राप्य हो।

सांदण सूका बामण भूका। प्र०—उक्त दोनों की उपयोगिता पर।

सामल् वांधीक पीछा पड़थ्ू छ। प्र०—जहाँ कोई किसी को बराबर दिक करता हो।

सामसा[1] की कुलौं[2] साम्सी[3] साम्मी। [१ शाहंशाह, २ चोड़ का पेड़, ३ सीधी] प्र०—समर्थ की गलत बात भी सच माननी पड़ती है।

साम्सी आंगुलो घ्यू नि औंद। प्र०—जहाँ सरलता से काम न बने कुछ टेढ़ापन दिखलाना पड़े।

साम्मो हूैक स्यू नि खांद। प्र०—जहाँ शरण हो जाने से अपराध क्षमा हो जाय।

सारा दिन रयो पोड़ी, पिछ्वाड़ी दैं ल्यायो कमर तोड़ी। प्र०—जहाँ कोई किसी काम में सिर्फ़ उस वक्त शरीक होवे जब काम बिगड़ रहा हो।

सारी ढेबरी मूंडी पुछ्ड़ै दैं लिराट-किराट[1]। [१ चिल्लाहट] प्र०—जहाँ कोई किसी काम को पहले तो शांति से करे पर अंत में कुछ बखेड़ा खड़ा कर दे।

सारो स्याल् खैक पुछ्ड़ा की दैं घीण[1]। [१ घृणा] प्र०—ऊपर के समान।

स्या लाणी पगड़ी जो नीभी जै दगड़ी। प्र०—शान शौकत का काम उसी हद तक करना चाहिए जो सारी जिंदगी भर निभ सके, इस पर।

स्वाली[1] मां पकोड़ी। [१ तेल की पूरी] प्र०—जहाँ कोई सच के साथ कुछ झूठ मिलावे।

सासू बुवारीन माछा लीन्या एकू कोन्नी[1] का माटी दीन्या। [१ सरकंडे का बना अनाज रखने का बर्तन]

प्र०—जहाँ कुछ लोग एक ही काम के लिये एक ही पूँजी में से अपनी अपनी ओर से जुदा जुदा खर्च करें।

सांसा[1] की भै हौ कि जौ। [१ साहस की] प्र०—साहस की भलाई और बुराई दोनों पर।

स्वीणा[1] दुवणा झुट्टा मूत ढांड सच्चो। [१ सपने] प्र०—जहाँ किसी के विरुद्ध प्रत्यक्ष प्रमाण मौजूद हो।

सुंगरु का पोथलू छारै' पाण। प्र०—जैसे को तैसे पर।

सुणनी सबकी करनी मन की। प्र०—सबकी सम्मति ले लेने की उपयोगिता पर।

सुदेसी कब्वा परदेसी भाख्या। प्र०—जहाँ कोई अपने लोगों के साथ परदेशी भाषा में बातचीत करता हो।

सूखा दगड़ी काचो भसम। प्र०—जहाँ कसूरवालों के साथ होने से किसी बेकसूर को भी दंडभागी होना पड़े।

सूणीक सुतीग[1] अर देखीक घीण[2]। [१ सूतक, २ घृणा] प्र०—उक्त दोनों बातें सुनकर और देखकर ही होती हैं इस पर।

स्यूणी को मुख ल्वार[1] प.ल्यौंद,[2] कीडा को मुख को प.ल्यौंद। [१ लोहार, २ पैना करना] प्र०—जहाँ कहीं किसी में बुरी आदतें बिना सिखाए अपने आप ही उत्पन्न होती दिखाई दें।

स्यूखा को साबलो। प्र०—जहाँ कोई बात को बहुत बढ़ाकर कहे।

सूत कातीक कोली की भौंदी पूत पालीक बौड़ी[1] की भौंदी। [१ बहू] प्र०—जहाँ लड़का अपनी स्त्री को लेकर माँ बाप से अलग हो जाय।

सून कि बिरालि त मि कल्लो पर स्यौं को कल्लो। काठ की करी बिरालि स्याँऊँ को कर—गुसाती। जहाँ आदमी

में, जिस पद पर वह रक्खा गया है उसके, उपयुक्त योग्यता का अभाव हो।

सूना घट चंडाल् को बास। प्र०—किसी शून्य स्थान में वास होने पर।

सूनी सालसे माखूं बल्द भलो। प्र०—कुछ न होने से थोड़ा होना भला इस पर।

सूम बियाई, सूम बियाई। प्र०—पाप के प्रायश्चित्त पर। जब किसी की स्त्री का प्रसव आसानी से नहीं होता तो राख की चुटकी उड़ाते हुए यह टोने की तरह कहा जाता है।

स्यू को एक अर स्याल् का सौ। प्र०—बहुत से कपूतों से सपूत एक ही भला होता है इस पर।

स्यूं बौ टांडा[1] स्यूं बौं पांडा[2]। [१ जंगल में का छप्पर, २ ऊपर की मंजिल] प्र०—जहाँ कोई किसी के साथ से बिलकुल जुदा न हो।

स्यू मां सामणो। प्र०—बड़ों के सामने अपना अपराध कबूल कर देने से डर नहीं रहता।

सेंत की चाकरी गांठ का खाणा, झगुली फाटी घर है जाणा। प्र०—बिला तलब तनखाह के नौकर पर।

सेंत की माल पिड़ा केकी। प्र०—मुफ्ती माल को लुटाने पर।

सेयां[1] नौना[2] की भुक्की[3]। [१ सोए हुए, २ बच्चे का, ३ चुंबन] प्र०—जहाँ किसी को ऐसी मदद पहुँचाई जाय जिसकी उसको खबर ही न हो।

सेर मां सवा सेर। प्र०—जहाँ किसी अत्याचारी के ऊपर कोई और उससे भी जबर्दस्त अत्याचार करे।

सेर हक पाया सणी अढौ[1]। [१ नसीहत करे] प्र०—जहाँ कोई कम उम्रवाला अपने से बड़ी उम्रवाले को नसीहत करे।

सेला[1] रज्जा की घणी परजा। [१ दयावान् क्रोध-रहित] प्र०—जहाँ किसी बड़े आदमी के वश में उसके शील-स्वभाव के कारण अधिक लोग हों।

सेवा का मेवा। प्र०—किसी की सेवा या परिश्रम के सफल होने पर।

***स्वैणीन पकायो मैंसन खायो, भाट भिखारी कैन नि पायो।** प्र०—जिसके घर से किसी को कुछ न मिले उस पर।

स्वैणी सूं निलाणी सच्च, ठाकुर सूं निलाणी झूठ। प्र०—उक्त दोनों पर।

स्वैण मैंसू की कल़ दूध भात की बेल़। प्र०—स्त्री-पुरुष के झगड़े की अस्थिरता पर।

सोना मां स्वागो। प्र०—जहाँ सच्ची बात के साथ थोड़ी सी झूठ भी मिली हो।

सोना मा सुगंध। प्र०—जहाँ किसी में सभी गुण भले ही हों।

सोना की चिड़िया। प्र०—जहाँ किसी ठगनेवाले को मालदार आदमी मिले अथवा ऐसा मालदार जो अक्लमंद न हो। दे०—अक्कल को हीणा इत्यादि।

† सोना की छुरी पेट थोड़ी ही मारें दी। प्र०—धन से प्राण अधिक प्यारा होता है।

सोना की विराल़ी मैं बचौ पर न्यूं को करो। प्र०—दे० सूना की इत्यादि।

---

* भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्।—गीता।
अर्थात् जो केवल अपने लिये पकाते हैं वे पाप को भक्षण करते हैं।

† अति अनीति लहिए न धन जो प्यारो मन होय।
पाए सोने की छुरी पेट न मारे कोय॥—वृंद।

सेरा की सर्दारी गधा की असवारी। प्र०—जहाँ बिरादरी के लोगों पर शासन सफल न हो।

सेरा के सयाणो ज्यूड़ा की माँझी।

सेरो सेरा काटो लुहो लुहा काटो। प्र०—जहाँ बिरादरीवालों से वैर हो।

*** सोहबत को असर हवैही जांद।** प्र०—जहाँ कुसंग से बुरा फल भोगना पड़े।

सौ अजाण एक सजाण। प्र०—अजान और सुजान के गुण तथा अवगुणों पर।

सौ कपूत एक सपूत। प्र०—कुपुत्र और सुपुत्र की क्रमशः बुराई-भलाई पर।

सौ का सवाया कम्बख्त का दूणा। प्र०—जो लाभ सौ की पूँजीवाले को सवाया मुनाफा लेने पर होता है वह कमबख्त दस पाँच की ँजीवाले को दूना होने पर भी नहीं होता इस पर।

सौकीन बुढ़िया चटै का लहँगा। प्र०—व्यंग्योक्ति बेमेल बात पर।

सौको साही[1] न बौको भाइ, पाँच पकोड़ी की की **खाइ।** [१ साहूकार का साथी या सहायक या गवाह] प्र०—जहाँ कोई धूर्त्त सच भूठ मिलाकर मेहमान बन के दावत खाके चला जाय।

सौ चंडाल अर एक कंगाल। प्र०—कंगाल चंडाल से भी बुरा होता है इस पर।

सौ जणों की लकड़ी एक जणा को बोझ। दे०—सात पाँच की लकड़ी।

---

* जापै जैसी वस्तु है तैसो ही मन होय।
माला और गुलेल को कर ले देखे कोय॥—नागरीदास।

सौं डालिक कस्तूरी नि बिकदी। प्र०—प्रत्यक्ष अथवा जानी हुई बात के लिये गवाह अथवा कसम खाने की क्या आवश्यकता है इस पर।

सौंण का अंधा कू हरी हरी सूझ। दे०—जैका औखा सौण इत्यादि।

सौण क्या सपूत भादौ क्या कपूत। प्र०—जहाँ कहीं दो की तुलना करने में दोनों में से एक भी कम न निकले।

सौण की गंगा टिमरु की मैण[1]। [1 जहर] प्र०—जहाँ बड़े काम पर छोटा उपाय कारगर न हो।

सौण मरी सासू भादौ आया आँसू। प्र०—जहाँ कोई आवश्यक काम जिसे बहुत पहले हो जाना चाहिए था वह बहुत देर में किया जाय।

सौण सूखा न भादौ हरा। प्र०—जो सब समय, सब भले बुरे कामों में एकसा रहे, बदले नहीं।

*** सौत चूना की भी बुरी हौंदी।** प्र०—सौत की बुराई पर। सौत किसी हालत में भी भली नहीं हो सकती चाहे वह बहुत ही कमजोर व सीधी क्यों न हो।

सौ तैं निबोलनू होयूं, अर एक तैं निबोलनू जायूं। प्र०—उन्नति और अवनति की अंतिम सीमा तक यह नहीं कहा जा सकता कि हमेशा यही दशा बनी रहेगी इस पर।

सौ दिन चोर का एक दिन साहू को। प्र०—जहाँ कहीं पुराना चोर पकड़ा जाय।

---

* काँटा बुरा करील का अरु बदली का घाम।
सौत बुरी है चून की अरु साझे का काम॥

सौ धोती अर एक गोती। प्र०—धौती अर्थात् लड़की की संतान सैकड़ों होने पर भी गोती अर्थात् अपने कुल का एक ही उपयुक्त उत्तराधिकारी होता है।

सौ बात की एक बात। प्र०—जहाँ किसी बात का सूक्ष्म तत्त्व कह दिया जाय।

सौ बोलनी पर लेखणी एक नि। प्र०—लिखी हुई बात की प्रामाणिकता और कही हुई बातों की अप्रामाणिकता पर।

सौ माँ सत्ती, लाख माँ जत्ती। प्र०—इस बात पर कि स्त्रियों में पतिव्रता और पुरुषों में एकपत्नीव्रत कोई बिरले ही होते हैं।

सौरा[1] नि रख साड़ी त बुवारी[2] क्या रख दाड़ी। [१ श्वशुर, २ पुत्रवधू] प्र०—इस बात पर कि जब कोई दूसरे की इज्जत बिगाड़ने पर उतारू हो जाय तो दूसरा उसकी इज्जत क्यों रखे—बदला क्यों न ले?

सौ सयाणै की एकी अक्कल। प्र०—इसकी मूल कहानी यह कही जाती है कि एक राजा साहब से उनके मंत्री ने एक दिन यह कहा कि "सौ सयानों की एक ही अक्ल" होती है पर राजा साहब इस बात पर सहमत न थे। उन्होंने कहा "मुंडे मुंडे मतिर्भिन्ना" अर्थात् शिर शिर में भिन्न भिन्न बुद्धि होती है। इस पर मंत्री ने अपनी बात की जाँच के लिये राजा साहब की ओर से सारे दरबारियों को—जो एक सौ तक थे—हुक्म दिया कि जो नया कुंड राजा साहब ने बनवाया है उसमें आज रात को प्रत्येक दरबारी एक एक घड़ा दूध डाल आवे। उन लोगों में से प्रत्येक ने यह सोचा कि जहाँ एक सौ दर्बारियों के सौ घड़े दूध जायँगे वहाँ हमारा एक घड़ा पानी खप ही जायगा। ऐसा विचार कर वे एक-एक घड़ा पानी रात को चुपके से कुंड में डाल आए। दूसरे दिन देखा गया तो कुंड में जल ही जल था, दूध का नाम न था। तब से यह कहावत

प्रसिद्ध हो गई। इसका प्रयोग ऐसे समय होता है जब किसी काम में सब बुद्धिमानों की एक सम्मति होती है।

सौ सुनार की एक लुहार की। प्र०—जहाँ कहीं कितनों ही का काम मिलाकर किसी एक के ही काम के बराबर अथवा उससे कम निकले, भला या बुरा।

सौ सम्भा[1] की एकू[2] झटाक[3]। [१ संध्या, २ एक ही ३ हाथ की मुद्रा] प्र०—जहाँ कोई बड़ी पेचीदा बात को थोड़े ही में हल कर दे।

संगत का गुण लगी ही जाँदन। प्र०—जहाँ संगति के गुण लग जायँ।

संपदा खाण नि देंदी बिपता रण नि देंदी। प्र०—जहाँ संपत्तिवान को कोई ऐसा दुःख आ घेरे जिससे वह संपत्ति उसे फीकी लगे।

संपदा का दगड़्या सबी होंदा विपता का क्वी नि होंदा। प्र०—उक्त दोनों पर।

संपदा की स्वैण, बिपदा की बैण। प्र०—जहाँ विपत्ति बहिन साथ दे।

स्यालू[1] क घर फाबसो[2]। [१ शृंगाल, २ फुप्फुस] जहाँ जिस वस्तु की रक्षा नहीं हो सकती वहाँ उसकी रक्षा की आशा करना।

हथ्यारु[1] का घौ[2] मौल्[3] जाँदा पर वचन-घौ नि मौल्दा। [१ हथियार, २ घाव, ३ भरना] प्र०—जहाँ कहीं दुर्वचनों के ही कारण बड़ी शत्रुता हो जाय।

हम आया तुम जाणी, तुम बैठ्या आँखा ताणी। प्र०—जहाँ कोई किसी के पास बड़ी आशा से जाय पर वह उसकी आशा पूरी न करे।

हम आया पैणा की रासी, तख निपायो सड़दो न बासी। प्र०—ऊपर के समान।

हम आयां सरड़ा[1] बोली, सात्तू खाया पाणी ओली। [१ पशुओं के रहने का स्थान जो बस्ती से दूर रहता है] दे०—हम आया तुम जाणीं।

हम चौड़ा बजार सांगुड़ा। प्र०—ऐसे घमंडी पर जो योग्यता न होने पर भी अपने समान किसी को कुछ न समझे।

हम तुमारा घर औला त तुम क्या देला अर तुम हमारा घर औला त हमुक क्या ल्यौला। प्र०—जो सब प्रकार अपने ही स्वार्थ की बात करे दूसरे के अर्थ की उपेक्षा करे।

हरसिंह खाव विरसिंह रिसाव। जहाँ एक मौज उठाता रहे और दूसरा केवल ईर्ष्या भर कर सके।

हल़ न मल़ खांदी दौं डुमजल़। प्र०—जो आप स्वयं कुछ परिश्रम न करे और दूसरे को उसके परिश्रम से लाभ पहुँचते देख ईर्ष्या करे।

हल़ को कोणो जोल़। प्र०—जहाँ कहीं एक जगह की हानि की पूर्ति दूसरी जगह के लाभ से हो जाय।

हल्कदी आवो नी हँसदी देव नी। प्र०—जिसके क्रोध और प्रसन्नता से परिणाम में कोई अंतर न हो।

हल्या डूम क्या जाण राजद्वारा की खबर। प्र०—जहाँ कोई साधारण बुद्धिवाले को पेचीदा बातें सुनावे।

हाइ विना डाइ न पीड़ बिना पछताइ। जहाँ कोई पराए दुख को देख कुछ भी समवेदना प्रकट न करे।

हाकिमी गरम, बणियाई नरम। प्र०—उक्त दोनों की विशेषताओं पर।

हाड़ पड़्थूंच। प्र०—जिस किसी त्योहार को किसी के घर मुर्दा मर जाता है वह त्योहार उस घर के लिये हमेशा 'हाड़ पड़ा' कहलाता है इस पर।

हाणीन गाणी। प्र०—जो कहीं भी गिनती में न आवे अर्थात् ऐसा काम या अहसान या लाभ जिसे कोई माने ही नहीं।

हांडो को मुख चौड़ो होयो त बिराला कू भी त शरम चैंदी। प्र०—जहाँ कोई किसी काम को ऐसे आदमी के भरोसे छोड़े जो स्वयं लूट खसोट करे।

***हाथ सुमरनी बगल कतरनी।** प्र०—जो मुँह से मीठा बोले—जाहिरा में सज्जनोचित व्यवहार रखे पर काम विपरीत करे।

हाथ कू हाथ नि सुझद। प्र०—जहाँ पर बहुत अँधेरा हो।

†हाथ कंकण कू आरसी क्या। प्र०—प्रत्यक्ष के लिये प्रमाण की क्या आवश्यकता? इस पर।

हाथ टूटिगे पर बौंछड़ो[1] निछूटे। [१ चलते समय हाथों का हिलाना] प्र०—जिसकी तंगदस्ती आ जाने पर भी अकड़ घमंड न छूटे।

‡हाथ पर चोरीं सैंदिख सच्चो। प्र०—जिसका अपराध प्रत्यक्ष दिखाई देता हो तिस पर भी अपने को निरपराध कहे।

---

* मुख में चार वेद की बातें, मन पर-धन पर-तिय की घातें।
धनि बगुला भगतन की करनी, हाथ सुमरनी बगल कतरनी॥

† परतछ नीके देखिए कहा बरने कोउ ताहि।
कर कंकण को आरसी को देखत है चाहि॥—वृंद।

‡ वाइज़ के वाज़ हैं सुनाने के और,
और आप अपने अमन में जाने के और।
फबती है उस पै ये मसल हाथी की,
खाने के हैं दाँत और दिखाने के और॥

हाथी का दाँत खाण का और हौंदा अर दिखौंण का और। प्र०—जो कहे कुछ और करे कुछ और उस पर। दे०—पोथी के भट्टा०।

हाथून आग लगै खुट्टू न बुझै। प्र०—जो आप ही झगड़ा कराए, आप ही सुलह करावे। दे०—चोरमूं चोरि करौ इत्यादि।

हाथै, मेरी तवै तेरी। प्र०—जहाँ कहीं ऐसी लूट-खसोट जारी हो कि जिसके हाथ जो लगे उसे ही ले चले।

हाथै लगे चांत[1]। [१ पाषाण पर] प्र०—जहाँ कहीं कोई बना हुआ काम बिगड़ जाय, हाथ में आई वस्तु खो जाय।

*** हान्नी अपणी बोल पराया।** प्र०—बिना विचारे बेवकूफी से ऐसा काम करनेवाले पर जिसमें नुकसान अपना हो और लोग हँसी भी उड़ावें।

हाल घोड़ा हाल मैदान। प्र०—उतावली से काम करनेवाले पर।

हिट्ट मेरा ब.ल्द, जनो तेरो गोस्युं हिटा.ल्द। प्र०—जहाँ किसी को पराधीनता के कारण ऐसा निकम्मा काम भी करना पड़े जिसे वह स्वाधीनता की हालत पर कभी न करता।

हिंवाल़ अंडू पयाल़ घोल। प्र०—जहाँ साध्य कहीं और साधन दूर और कहीं हों कि उनसे कोई लाभ ही न उठाया जा सके।

हिलकायो गंगाड़ी[1] ऐ लग्यो पैंगाड़ी[2]। [१ गंगा तट पर रहनेवाले, यहाँ निकृष्ट, २ बगल में] प्र०—जहाँ कहीं किसी ऐसे कमीने को मुँह लगाया जावे जो अपना निरादर करने लगे।

---

* बिना विचारे जो करे सो पाछे पछताय।
काम बिगारे आपनो जग में होत हँसाय॥

* **हिसाब जौ जौ, बकसीस सौ सौ।** प्र०—बखशीश सैकड़ों किया जा सकता है पर हिसाब में एक कौड़ी भी नहीं छूट सकती इस पर।

हींस[1] ते रीष[2] भलीं। [१ ईर्ष्या, २ क्रोध] प्र०—ईर्ष्या की बुराई पर।

हुस्याली सौ ह्वै जौं, हिस्याली[1] मौ चल जौ। [१ प्रतियोगिता की इच्छा करनेवाला, २ ईर्ष्या करनेवाला] प्र०—प्रतियोगिता की प्रशंसा और ईर्ष्या से जलनेवाले की निंदा पर।

ह्यूंद[1] हिंवाल[2] रूड़ी[3] पयाल[4]। [१ शीतकाल, २ ठंडी जगह, ३ गर्म मौसम, ४ गर्म जगह] प्र०—ठंडे मौसिम की फस्ल ठंडी जगहों और गर्मी की मौसिम की फस्ल गर्म स्थानों में पहिले कटती है इस पर और ठंडी मौसिम में ठंडे स्थानों और गर्म मौसिम में गर्म स्थानों का वास बड़ा कष्टकारक होता है इस पर भी।

हूँ भडर[1] द्यूं घरों घर। (१ जामिन) प्र०—जामिन होने की बुराई पर।

होंची[1] जात करो उत्पात। [१ कमीनी] प्र०—कमीने के उपद्रव करने पर।

होंची पुजै देखीक बोगठ्या हैंस। प्र०—जहाँ किसी बेवकूफ के किए हुए काम पर साधारण मनुष्य भी नुक्ताचीनी करता हो।

---

* यः काकिनीमप्यपथःप्रपन्नां समुद्धरेन्निष्कसहस्रतुल्याम्।
कालेषु कोटिष्वपि मुक्तहस्तस्तं राजसिंहं न जहाति लक्ष्मीः॥

भावार्थ—जो अकारथ जानेवाली एक कौड़ी को भी हजार अशर्फियों के समान समझकर समेट लेता है और समय पाकर करोड़ों को मुक्तहस्त होकर दान कर देता है ऐसे राजसिंह पुरुष को लक्ष्मी नहीं छोड़ती।

होणीं[1] होन्यार कैल देखे। [१ होनेवाली दुर्घटना] प्र०—दुर्घटना की आशंका पर।

होन्यार नि टल़दी। प्र०—होनहार अर्थात् भवितव्यता की अटलता पर।

***होणत्याल़ी डाल़ी का चलचला पात।** प्र०—जहाँ किसी होनहार में सुलक्षण पहिले ही से दीख पड़ें।

होत्ती का तीन नाम परशु परसा परसराम। प्र०—मनुष्य की योग्यता बढ़ने पर उसके नाम और पदवी भी बढ़ जाती है इस पर।

होत्ती की बल्थारीं छन। प्र०—जहाँ किसी भाग्यवान् में सद्गुण भी पाए जाँय।

हौंदा का नौना की भुक्की सब कोई पेंदा। प्र०—जहाँ बलवान् का सभी समर्थन करें।

हौंदा की हौंस[1] जांदा की टीस[2]। [१ डाह, २ समवेदना] प्र०—उक्त दोनों पर।

हो पड़ोसी मैं सारख्या[1]। [१ सरीखा, समान] प्र०—जहाँ कोई आप तो स्वयं बुरी दशा में हो और अपने साथी को भी बुरी दशा में देखकर संतोष माने।

होमेरी सैण कि काटू तेरो नाक। दे०—मा खांधी कसौदा की तरह।

होयां उपज्यां की खाल, पेट करा की आस। प्र०—जहाँ बने-बनाए काम बिगड़ जायँ और होनेवाले की आशा की जाय।

---

* कुल सपूत जान्यो परे लखि सब लच्छन गात।
होनहार बिरवान के होत चीकने पात॥

हौंया का सौ नौं नि होयां की एकी नौं। प्र०—कुपुत्र को देखकर।

हत्यारी बछड़ी। प्र०—जहाँ पर कोई नाजुक काम हाथ में आ पड़े।

हंसण च कि निकसणो। प्र०—जहाँ कोई बनावटी हँसी या तिरस्कार की हँसी हँसे।

ह्वांच कि तिमासी धोति की गेड़ि। प्र०—अपने विभव के व्यर्थ प्रदर्शन पर।

अनुवचन

यह गढ़वाली कहावतों का पहला संग्रह नहीं है। पं० गंगादत्त उप्रेती इससे वहुत पहले कुमाऊँ और गढ़वाल की कहावतों का एक संग्रह कर चुके हैं। उन्होंने कहावतों को विषय के अनुसार विभाजित किया है और साथ में अँगरेजी अनुवाद भी दिया है। गढ़वाल की कहावतें स्वभावतया उनके संग्रह में कम आई हैं। मैंने इसमें केवल गढ़वाली कहावतों का संग्रह किया है। मेरा प्रयत्न इसे पूर्ण बनाने का रहा है पर एक ही व्यक्ति के प्रयत्न से गढ़वाली सरीखी कहावतों की भंडार भाषा की सम्पूर्ण लोकोक्तियों का एकत्र हो जाना असम्भव है। कोश के ढंग पर अक्षर-क्रम से मैंने इसमें कहावतों को रक्खा है। पहले मैंने हिंदी अनुवाद भी साथ दिया था किंतु पत्रिका में इतना स्थान मिल सके न मिल सके, इस डर से मैंने बाद को उसे निकाल दिया। किंतु मुझे भय है कि इससे इस संग्रह की उपयोगिता में कमी आ गई है। संग्रह को पुस्तकाकार प्रकाशित करते समय अनुवाद भी उसमें जोड़ दिया जायगा।

शालिग्राम वैष्णव
